# हमीरपुर जनपद मे स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास

**( 1857 - 1947 )**

**बुन्देल खण्ड (विश्वविद्यालय झाँसी) में**
**इतिहास विषय की पी० एच० डी०**
**की उपाधि हेतु प्रस्तुत**

**शोध-प्रबन्ध**

**1996**

शोध निर्देशक :
**डा० एस० पी० पाठक**
विभागाध्यक्ष
इतिहास
बुन्देल खण्ड कालेज, झांसी
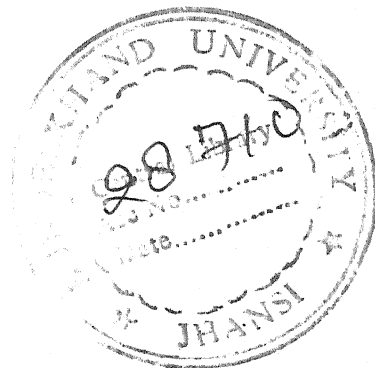
शोध छात्रा :
**श्रीमती शोभा सक्सेना**
प्रवक्ता इतिहास
राजकीय महाविद्यालय
शिवराजपुर कानपुर देहात

## विषय सूची

# प्राक्कथन

हमीरपुर जनपद बुन्देलखण्ड सम्भाग से सम्बद्ध रहा है। अतः बुन्देलखण्ड के इतिहास की प्रवृत्तियाँ हमीरपुर क्षेत्र के ऐतिहासिक विकास क्रम को प्रतिबिम्बित करती हैं। बुन्देलखण्ड की जनता अपने साहस पराक्रम तथा स्वतंत्रता प्रेम के लिये हमारे देश के इतिहास में अद्वितीय स्थान रखती है। स्वतंत्रता को बनाये रखने के लिये इस क्षेत्र के लोगों ने सतत् प्रयास किया। यद्यपि परिस्थिति वश शक्ति और अन्य साधनों की कमी के कारण कुछ समय के लिये विदेशी परतंत्रता की विषमतायें इस क्षेत्र के लोगों को झेलनी पड़ी लेकिन वास्तव में लोगों में स्वतंत्रता की भावना का ह्रास कभी नही हुआ।

अंग्रेजी शासन का प्रारम्भ बुन्देलखण्ड में 1802 की बेसिन की सन्धि से हुआ। औपनिवेशिक शासन के दुष्परिणाम पूरे देश की भाँति बुन्देलखण्ड में अतिशीघ्र परिलक्षित होने लगे। अंग्रेज अधिकारी राजस्व प्रबन्धकर यहाँ के जमींदारों एवं किसानों से अधिक से अधिक कर वसूल करने लगे। क्योंकि उनका उद्देश्य इस क्षेत्र को अधिक से अधिक आर्थिक रूप से कमजोर करना था। आर्थिक गुलामी राजनीतिक गुलामी को मजबूत आधार प्रदान करती है। इस नीति के अन्तर्गत अंग्रेजी शासन में बुन्देलखण्ड

के शिल्प हस्तनिर्मित वस्तुएँ लघु उद्योग आदि पर अधिक से अधिक कर लगाकर उन्हें समाप्त कर दिया गया। सम्भवतः ब्रिटिश औपनिवेशिक शक्ति यह सोच रही थी कि आर्थिक रूप से कमजोर लोग अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह का साहस नहीं जुटा पायेंगे। लेकिन उनकी यह सम्भावना गलत निकली और अपनी स्वतंत्रप्रियता की शानदार परम्पराओं के अनुरूप ही बुन्देलखण्ड के लोगों ने 1857 ई. में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जबरदस्त विद्रोह प्रारम्भ कर दिया। निसन्देह विद्रोह की यह चिंगारी झाँसी से प्रारम्भ हुई लेकिन हमीरपुर जनपद के लोगों ने इसमें सक्रिय भूमिका निभायी। विस्फोट की यह चिंगारी जिले में इतनी घातक सिद्ध हुई कि हमीरपुर का कलेक्टर लायड ने किसी प्रकार नाव द्वारा जमुना पार कर अपने प्राण बचाने में सफलता पायी। परन्तु विद्रोह के प्रारम्भ के पाँचवे दिन बाद जनपद के लोगों ने छानबीन कर अंग्रेज कलेक्टर को मृत्यु के घाट उतार दिया। राठ के ठाकुरों जमींदारों तथा आस-पास के लोगों ने मिलकर विदेशी सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिये डटकर संघर्ष किया। सूबेदार अली बख्श ने भी विद्रोहियों का नेतृत्व कर हिन्दू मुस्लिम एकता का अद्भुत प्रदर्शन किया। इस समय न कोई हिन्दू था न मुसलमान बल्कि सभी राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत बुन्देलखण्ड के बहादुर लोग थे। जिनके समक्ष केवल एक ही

उद्देश्य था कि इस क्षेत्र में विदेशी सत्ता को किसी प्रकार समाप्त कर दिया जाये।

अंग्रेजों की कूटनीति, अपार सैनिक शक्ति तथा शस्त्रों की अच्छी किस्म के कारण बुन्देलखण्ड में यह विद्रोह एक साल बाद ही दबा दिया गया। लेकिन स्वतन्त्रता की भावना जो लोगों में पल्लवित हो चुकी थी वह समाप्त नहीं हुई। बल्कि निरन्तर यह पल्लवित और पुष्पित होती गयी। जन परम्परायें और लोकगीत में सुरक्षित लोकगीत अंग्रेजी शासन की बुराईयों द्वारा लोगों में राष्ट्रीयता रूपी भावना को मजबूत कर रहे थे। यद्यपि विद्रोह 1858 में समाप्त हुआ लेकिन गवर्नर जनरल के एजेन्ट ने यहाँ की जनता के बारे में लिखा था

"चट्टानों दर्रों और किलों से घिरे हुए इस क्षेत्र में हजारों की संख्या में ऐसे लोग बसते हैं जो कि ब्रिटिश प्रतिष्ठा (आतंक) न हो तो पुनः इस पहाड़ियों के अपने युद्ध घोषों से रंगा देंगे।"

उपरोक्त शोध प्रबन्ध बुन्देलखण्ड के स्वतन्त्रता तथा अद्भुत सिपाहियों द्वारा किये गये बलिदान त्याग तथा जनता की राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भूमिका को प्रकट करने के लिये बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से इतिहास विषय

में पी. एच. डी. उपाधि हेतु मैंने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। मुझे इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में डा. एस. पी. पाठक शोध निदेशक का अमूल्य सहयोग मिला है एवं श्री भारतेन्दु भरजारिया महोबा निवासी ने विभिन्न स्थानीय जानकारियाँ एवं सामग्री उपलब्ध कराकर सहयोग प्रदान किया जिसके लिये मैं हृदय से आभारी हूं एवं उन्हें धन्यवाद देती हूं।

भवदीया

शोभा सक्सेना

( शोभा सक्सेना )

प्रवक्ता इतिहास

राजकीय महाविद्यालय, सिकन्दरपुर

कानपुर (देहात), कानपुर।

डॉ० एस० पी० पाठक
एम० ए०, पी० एच० डी०
रीडर एवं अध्यक्ष इतिहास विभाग
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी
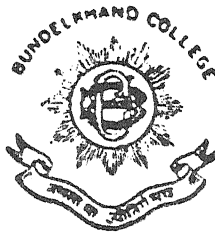
निवास :
32, सिविल लाइन
झाँसी-284001
☎ : 445828

पत्रांक

दिनांक 15-3-96

CERTIFICATE

This is to certify that the thesis entitled "History of the Freedom movement in Hamirpur District" (1857-1947) submitted by Smt. SOBHA SAXENA for the degree of the Doctor of philosophy in history is the original work of the condidate herself.

She has worked under my guidance and supervision during the required period.

S.P. PATHAK
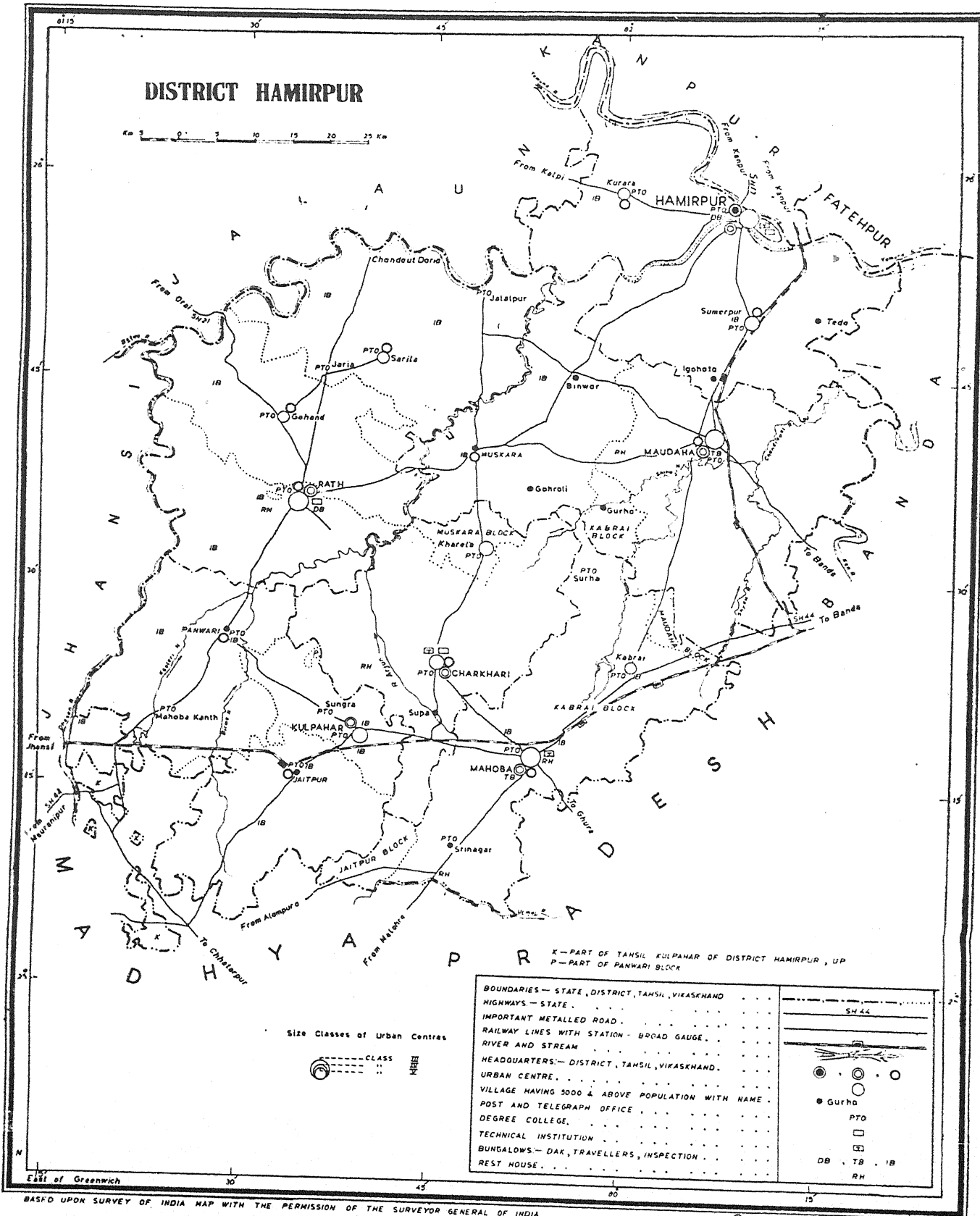
By the courtesy of Registrar General, Census of India and the Directorate of Census Operations, Uttar Pradesh

## अध्याय प्रथम

### भूमिका

हमीरपुर बुन्देलखण्ड का एक जिला है जो उत्तर में यमुना नदी द्वारा कानपुर जिले की सीमाओं से विभाजित है । उत्तर पूर्व में बेतवा नदी तथा पश्चिम में धसान नदी द्वारा यह जिला झांसी जिले की सीमाओं से पृथक किया गया है । पूर्व में इसकी सीमायें बांदा जिले से मिलती हैं तथा केन नदी बांदा हमीरपुर जिले के बीच विभाजन रेखा का कार्य कर रही है । इस जिले के अन्तर्गत सरीला, जिगनी और बीहट रियासतों के अलावा चरखारी तथा गरौली रियासतों के कुछ क्षेत्रफल की स्थित है । 1872 में इस जिले का कुल क्षेत्रफल 2288.581 वर्गमील था । (1) 1971 में इस जिले की कुल जनसंख्या 988215 थी जिसमें 462188 स्त्रियां थीं । (2)

इस जिले का प्रशासनिक दृष्टि से विभाजन छः तहसीलों में किया गया है । हमीरपुर, मौदहा, जलालपुर, राठ, महोबा तथा पनवाड़ी । मौदहा तथा महोबा परगने अकबर के समय इलाहाबाद सूबे के अंग थे । शेष परगने आगरा सूबा के अन्तर्गत कालपी में शामिल थे ।(3) ऐसा प्रतीत होता है कि सुमेरपुर, जलालपुर और पनवाड़ी परगनों का गठन औरंगजेब के

शासनकाल में बुन्देला राजाओं द्वारा किया गया था।1841 में जलालपुर में राठ परगने के कुछ क्षेत्रफल भी शामिल किये गये। (4) हमीरपुर परगने का 1841 में पुनः क्षेत्रीय वितरण किया गया (5) और कालपी के 16 गांवों को पुनः शामिल किया गया। 1876 में पनवाड़ी और जैतपुर को मिला दिया गया । (6)

भौगोलिक स्थितः

हमीरपुर जिले की भौगोलिक स्थिति यह स्पष्ट करती है कि इसका उत्तरी भाग कुछ समतल है जबकि महोबा जैतपुर तथा पनवाड़ी के कुछ इलाके पहाड़ी हैं । इस जिले की लम्बाई 94 मील है जबकि चौड़ाई लगभग 56 मील है । हमीरपुर की समुद्र तल से ऊंचाई 361.62 फीट है । (7)

भूमिः

हमीरपुर जिले की भूमि का वर्गीकरण शेष बुन्देलखण्ड की भूमि की किस्मों के अनुसार ही है । इस जिले की भूमि की किस्में इस प्रकार हैं- मार, काबर, परुआ तथा राकड़। मार काली रंग की एक उपजाऊ भूमि है जो इस जिले में यमुना के उत्तर की ओर फैली हुई है। इस किस्म को

भूमि में काफी समय तक नमी निहित रखने की विशेषता है। वर्षा ऋतु में इसकी चिकनाहट अधिक हो जाती है। जिससे सड़क यातायात के लिये अनुकूल नहीं रहती। काबर भूमि लगभग मार की तरह ही है किन्तु न तथा उपजाऊपन में यह मार से निम्न स्तर की है। चने की खेती मुख्यतः काबर में की जाती है। परुआ निम्न प्रकार की पीले रंग की मिट्टी है तथा यह कपास की खेती के लिये अधिक उपयोगी है। सिंचाई की सुविधा होने से इसमें गन्ने का उत्पादन अच्छा होता है। राकर की दो किस्में हैं - मोटी और पतली। पतली राकर एक घटिया किस्म है जिसमें नमी बचाए रखने की अधिक शक्ति नहीं है। प्रति दो या तीन वर्ष बाद इसे कुछ समय के लिये खाली रखना पड़ता है। इस किस्मों के अलावा कछार मिट्टी भी कुछ मात्रा में इस जिलों उपलब्ध है। जहां कुएं से सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है। यह उच्च किस्म की मिट्टी है जिसमें मुख्यतः रबी का उत्पादन होता है।

पहाड़:

हमीरपुर जिले में पहाड़ की दो चोटियां हैं। पहली चोटी नौगांव से महोबा की ओर गयी है। जबकि दूसरी परगना जैतपुर की ओर चली गयी है। इसके अलावा कुछ अलग-अलग पहाड़ियां भी हैं जो समीप के गांव के

नाम से जानी जाती हैं। इन पहाड़ों की ऊँचाई कहीं भी 300 फीट से अधिक नहीं है । इसके अतिरिक्त नन्दगढ़ी के समीप अनेक ऊंची तथा ऊबड़ खाबड़ चट्टानें हैं । इसी प्रकार राठ तथा जलालपुर में अनेक चट्टानें प्राप्त हैं। इस जिले का समतल और स्थान तथा खेती योग्य है। हमीरपुर जिले में कहीं भी बड़े जंगल नहीं हैं लेकिन महोबा में बिलखी तथा जैतपुर परगने में पसीनाबाद के जंगल इस कमी को कुछ दूर करते हैं। इस जिले की पहाड़ियों तथा जंगलों का आर्थिक विश्लेषण करने से प्रतीत होता है कि यह जंगल तथा पहाड़ यहाँ के लोगों की आर्थिक स्थिति को समृद्ध करने में सफल नहीं रहे हैं। अतः यहाँ की आर्थिक स्थिति में इसका कोई विशेष योगदान नहीं है।

नदियाँ:

जमुना नदी हमीरपुर जिले की मुख्य नदी है यह नौ चालन के योग्य है। ये बेतवा के साथ-साथ लगभग तीन मील बहती है। यमुना के किनारे ऊपर उठे हुये हैं, हमीरपुर में यह बहुत ऊँचे हैं जो शायद साठ फुट ऊँचे और विपरीत दिशा में नीचे तट की ओर उभरी चट्टानें हैं। (8) वर्षाकाल में इसमें पानी भर जाता है तथा उपजाऊ मिट्टी इकट्ठी हो जाती है

बेतवा (वेदवती) यहाँ की सबसे लम्बी नदी है जो भोपाल राज्य से निकली है। (9) इस जिले में राठ तहसील के चन्दवारी गाँव से आती है, धसान भी हमीरपुर जिले के राठ तहसील के ग्राम में आकर मिल जाती है। बिरमान इसकी सहायक नदी है। इसमें यद्यपि ठीक से नौ--चालन नहीं हो सकता किन्तु नहरों के उद्देश्य से यह उपयोगी है। वर्षा ऋतु में यह पानी से भरी रहती है तथा अच्छी किस्म की सिल्ट मिट्टी इकट्ठी हो जाती है।

धसान नदी विन्ध्य की पहाड़ियों से निकलती है (10) और सागर से बहती हुई इस जिले में परवाड़ी गाँव के चौक से प्रवेश करती है। राठ के चन्दवारी गाँव में बेतवा से मिल जाती है ।

केन व अन्य सहायक नदियाँ-- केन बांदा जिले से मौदहा को अलग करती है । इसकी सहायक नदियाँ बिरमा और बिरमन परगना जैतपुर से निकलती हैं और जलालपुर में कुपरा में बेतवा से मिल जाती हैं । कुलारी कैथा में और अर्जुन बालान राठ तहसील में हैं ।

चन्द्रावल महोबा से निकलती है और मौदहा तहसील में सिहू और सयाम परगना पिलानी बांदा जिलमें में केन में मिल जाती है। (11)

झील और सरोवर:

यहाँ पर दो या तीन पहाड़ों से घिरी हुई कई झीलें हैं। विशालकाय सरोवरों तथा झीलों की नैसर्गिक रचना यहां सम्भव ही नहीं हैं। चन्देल शासकों ने ऐसी कृतियों से सारे साम्राज्य को विभूषित कर दिया। इसमें नहरें बड़ी संख्या में निकाली गयी हैं । रहिलिया, विजारी, बरहट, पहरा, उरवार, पावा, सिजहरी और बिल्की की झीलें ये सब परगाना महोबा में हैं। परगना जैतपुर में रावतपुर है । महोबा तहसील में चन्देल शासकों द्वारा बनवाये हुए कीरतसागर में विजयसागर है। इसका घेरा लगभग 4 मील है और यह महोबा की सबसे बड़ी झील है। इसका निर्माण चन्देल नरेश विजयपाल ने करवाया था। (12) मदन सागर नगर के दक्षिण चन्देल नरेश मदन वर्मन द्वारा निर्मित है। (13) कीरत सागर महोबा नगर में पश्चिम में कीरतसागर है इसे महाराज कीर्तिवर्मन ने बनवाया था। इसका घेर लगभग डेढ़ मील है। (14) कल्याणसागर महोबा के पूर्व एक छोटी झील है जिसे राहिल सागर कहते हैं। (15) राहिल ताल अथवा राहिल्य नगर में स्थित है चन्देल नरेश राहिल्य वर्मन ने इस तालाब का निर्माण किया था राहिल्य नगर भी बसाया था जो अब उजड़े हुए गाँव के रूप में शेष रह गया है। (16)

## मुद्रा तथा खनिज:

हमीरपुर जनपद में सुमेरपुर के आस-पास पचकुरा गांव बसा हुआ है यहां पर बहुत से प्राचीन खण्डहर हैं । यहां पर कहीं-कहीं पुराने सिक्के मिल जाते हैं। सन 1877 में यहां पर बहुत से बैक्ट्रियन सिक्के मिले थे। ये लगभग 155 ई. पूर्व के हैं। यहां पर यह सिक्के ढाक के पेड़ के नीचे गड़े हुए मिले थे। (17) कलचुरी चन्देल बैक्ट्रियन गुप्त आदि के सिक्के कहीं-कहीं मिलते हैं। चन्देलों ने जो सिक्के चलायें वह प्रायः चेदिवंशीय राजा गांगेदेव कलचुरी के सिक्कों की नकल हैं। इन सिक्कों में एक ओर राजा का नाम और दूसरी ओर हनुमान जी की मूर्ति है। यह सोने चांदी और तांबे की सिक्के हैं । इन सिक्कों में चन्देल वंश के 13वें राजा कीर्तिवर्मन और 20वें राजा वीरवर्मन का उल्लेख मिलता है । बुन्देलखण्ड के जंगली भागों में अनेक प्रकार की धातुऐं और पत्थर पाये जाते थे । पहाड़ों की चट्टानें तोड़कर मिट्टी बनायी जाती है। पत्थर को ढोके मकानों की नींव भरने के काम आते हैं । मुरम अथवा बलुरु भी नदी के मुहाने में पायी जाती है। (18) महोबा तहसील में मुरम के पहाड़ भी हैं । यह मकान तथा सड़क बनाने के काम आती है । कुछ पहाड़ियां पुरानी कठोर ग्रेनाइट की चट्टानों की हैं।

जलवायु:

हमीरपुर जनपद में पहाड़ खूब हैं। अतः यहाँ गर्मी भी खूब अधिक पड़ती है और सर्दी भी खूब पड़ती है। गर्मियों में औसतन अधिकतम तापमान 44 डिग्री से. हो जाता है। कभी-कभी तो 48 डिग्री से. तक जा पंहुचता है। जाड़ों में औसतन तापमान 4 डिग्री से. तक गिर जाता है। जून के अंतिम सप्ताह से सितम्बर के अंत तक दक्षिण पश्चिम मानसून से वर्षा होती है। वर्षा ऋतु में जब पुरवाई चलती है तो बादल ऊपर से निकल जाते हैं एवं जब पश्चिम की ओर चलने लगती है तो लौटते बादलों से मूसलाधार वर्षा होती है। यमुना बेतवा में तो बाढ़ आ जाती है। जाड़े में उत्तर पश्चिमी मानसून से बहुत थोड़ी वर्षा होती है। सामान्यतः दिसम्बर के मध्य से जनवरी के अंत तक महांवट हो जाती है जो रबी की फसल के लिये बहुत उपयोगी है। कभी-कभी कुहरा भी छाया रहता है। वर्षा का औसत 32 से 45 इंच तक है। बेतवा नदी के किनारे की जलवायु स्वास्थ्य वर्धक नहीं है। सन 1817 ई. में "मैनविस आफ हैटिंग्ज गर्वनर" ने इस क्षेत्र का दौरा किया था उस समय उसकी सेना का लश्कर में हैजा फल गया था। (19)

कौआ, फाख्ता, गौरैया, सारस, मुर्गी, बत्तख, कबूतर पिड़ी तीतर बटेर, लाल मुनइया मछरंगिया और पनडुब्बी आदि हैं। पालतू जानवरों में हाथी घोड़ा गाय बैल भेड़ बकरी ऊंट बिल्ली कुत्ता सुअर आदि हैं।

जातियां:

हमीरपुर में ठाकुर जातियां निवास करती हैं। जिनमें गौर, पवार रघुवंशी, बुन्देला, चन्देल, कछवाहा, कलचुरी, गहरवार, चौहान, सेंगर, राठौर गहलौत, भदौरिया, तोमर प्रमुख हैं। (20) नीची जातियों में लोधी, कुर्मी काछी, माली, अहीर, घोसी, गड़रिया, भाट, जोशी तमोली, बारी, तेली, सुनार, परवा, नाई, केवट, धोबी, कुसाई, कुम्हार, सोनकर आदि प्रमुख हैं। (21) ब्राह्मण जो हमीरपुर सुमेरपुर, मौदहा और जलालपुर में प्रमुख रूप से पाये जाते हैं। (22)

## Foot Notes

1. एटकिन्सन ई. टी. स्टेटिस्सटीकल डिसक्रिप्टिव एण्ड हिस्टोरिकल एकाउण्ट आफ दि नार्थ वेस्ट प्राविंसेज आफ इण्डिया जिल्द- 1 (बुन्देलखण्ड) इलाहाबाद सन् 1874 पृष्ठ 139 - बलवंत सिंह स्टेट एडीटर
2. उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर हमीरपुर 1988 पृष्ठ - 1
3. एटकिन्सन ई. टी. स्टेटिस्सटीकल डिसक्रिप्टिव एण्ड हिस्टोरिकल एकाउण्ट आफ दि नार्थ वेस्ट प्रविंसेज आफ इण्डिया जिल्द -1 (बुन्देलखण्ड) इलाहाबाद सन् 1874 पृष्ठ - 139
4. ---------------- तदैव ------------------
5. -----------------तदैव -------------------
6. बलवंत सिंह स्टेट एडीटर, उत्तर प्रदेश गजेटियर हमीरपुर 1988 पृष्ठ - 1
7. एटकिन्सन ई. टी. स्टेटिस्सटीकल डिसक्रिप्टिव एण्ड हिस्टोरिकल एकाउण्ट आफ दि नार्थ वेस्ट प्रविंसेज आफ इण्डिया जिल्द -1 (बुन्देलखण्ड) इलाहाबाद सन् 1874 पृष्ठ - 140
8. -----------------तदैव -------------------------पृष्ठ-- 142
9. -----------------तदैव -------------------------पृष्ठ-- 145
10. -----------------तदैव -------------------------पृष्ठ-- 146
11. -----------------तदैव -------------------------पृष्ठ-- 146
12. आकर्यालोजिकल सर्वे रिपोर्ट भाग-2 पृष्ठ- 439-40
13. -----------------तदैव -------------------------पृष्ठ-439
14. -----------------तदैव -------------------------पृष्ठ-439
15. -----------------तदैव -------------------------पृष्ठ-439
16. आकर्यालोजिकल सर्वे रिपोर्ट भाग 7 पृष्ठ- 26
17. बुन्देलखण्ड का ऐतिहासिक मूल्यांकन प्रथम भाग राधाकृष्ण बुंदेली श्रीमती सत्यभामा बुंदेली पृष्ठ - 37
18. -----------------तदैव -------------------------पृष्ठ-- 29
19. -----------------तदैव -------------------------पृष्ठ-- 31-32
20. एटकिन्सन ई. टी. स्टेटिस्सटीकल डिसक्रिप्टिव एण्ड हिस्टोरिकल एकाउण्ट आफ दि नार्थ वेस्ट प्रविंसेज आफ इण्डिया जिल्द -1 (बुन्देलखण्ड) इलाहाबाद सन् 1874 पृष्ठ - 160-161
21. -----------------तदैव -------------------------पृष्ठ- 161
22. -----------------तदैव -------------------------पृष्ठ- 161

## ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

बुन्देलखण्ड शब्द का स्पष्ट अर्थ है कि जिस क्षेत्र में बुन्देले ठाकुरों का राज्य रहा है उस क्षेत्र को बुन्देलखण्ड के नाम से पुकारा जाता है। यहाँ के नर-नारियों ने सम्मिलित रूप से देश के लिये कुरबानियाँ दी हैं। हमीरपुर जिला बुन्देलखण्ड क्षेत्र में झाँसी सम्भाग के अन्तर्गत स्थित है। प्राचीनकाल हमीरपुर का प्रारम्भिक इतिहास एवं परम्परायें बुन्देलखण्ड के इतिहास से सम्बद्ध रही है। परम्परा के अनुसार हमीरपुर की स्थापना कल्चुरी नरेश हम्मीरदेव ने की थी। 11वीं शताब्दी में मुस्लिम आक्रमणकारियों द्वारा अलवर भगाये जाने के पश्चात हम्मीरदेव ने अदना अहीर के साथ हमीरपुर में ही शरण ली थी। यह भी कथानक सत्य के कितना निकट है। इस पर प्रमाणिक रूप से मत देना कठिन है किन्तु इतना सत्य है कि अदना अहीर से सम्बन्धित किंवदन्तियाँ इस क्षेत्र के जनमानस पर आज भी छायी हैं। अदना अहीर को इस परम्परा के अनुसार हमीरपुर के पास के गाँव अदनापुर का निवासी बताया गया है। कुछ समय पश्चात हम्मीरदेव ने यहाँ एक किले का निर्माण करवाया। वर्तमान समय में जिसके अवशेष मात्र मिलते हैं। (1)

वर्तमान हमीरपुर जिले का इतिहास प्राचीन काल से सम्बद्ध रहा है। लहचुरा में उत्तर पाषाण काल के धारकीले पत्थर खुदाई में प्राप्त हुए। ककरा में भी इसी प्रकार के पत्थर प्राप्त हुए। (2) पौराणिक समय में आर्य जो इस मण्डल में यमुना और विन्ध्य प्रदेश में रहते थे। चेदि थे। महाभारत काल में यह चेदि देश कहलाता था राजा शिशुपाल था जो पाण्डवों द्वारा राजसूय यज्ञ के लिये आमंत्रित किया गया। किन्तु श्रीकृष्ण को सम्मान दिये जाने के कारण वह नाराज हो गया। श्रीकृष्ण को गालियाँ देने के कारण वह मारा गया। (3) बाद में शिशुपाल के वंश वाले चेदि हैहय और कलचुरी कहलाये। महाभारत काल के पश्चात के इतिहास के विषय में कुछ ठीक ठाक पता नहीं चलता है।

नंद वंश के पश्चात इस जिले में मौर्य शासक बने। (4) शुंग वंश मौर्यों के केन्द्रीय प्रदेशों पर और पुराने मौर्य शासकों के बुन्देलखण्ड पर अधिकार करने में सफल हुए। (5) पुष्यमित्र शुंग के कार्य काल में 184 – 148BC) यूनानी सेनापति मीनाण्डर ने आक्रमण किया जिसके सिक्के पचखरा हमीरपुर में ही प्राप्त हुए। (6) प्रथम शताब्दी के अंत में इस जिले में कनिष्क (78 128 AD) आया। (7) उसके पश्चात् इस जिले का इतिहास तीसरी शताब्दी ईसा बाद के मध्य का है जब विन्ध्य शक्ति

(255-275 AD) की शक्ति का उदय पूर्वी मालवा और मध्य प्रदेश और बरार में हुआ।

लगभग चौथी शताब्दी के मध्य में समुद्रगुप्त (321 – 375) ने इस जिले पर अपना राजनीतिक आधिपत्य स्थापित किया। छठी शताब्दी तक गुप्त शासक यहाँ राज्य करते रहे। 641-642 में ह्वेनसांग ने बुन्देलखण्ड की यात्रा की, उस समय यहाँ ब्राह्मण राजा शासन कर रहा था। हर्ष की मृत्यु के पश्चात लगभग आधी शताब्दी तक इस जिले का इतिहास अन्धकार में रहा। गहरवारा की एक राजा नल के उत्तराधिकारी महोबा में स्थापित हुए। (8)

8वीं शताब्दी में प्रारम्भिक अर्धभाग में यशोवर्धन का कब्जा था। जो कन्नौज का शासक था। इसके पश्चात प्रतिहार शासक वत्सराज 8वीं शताब्दी के अन्त में उसका साम्राज्य उत्तर भारत के बहुत से भाग पर था। (9) अन्य महत्वपूर्ण शासकों में नागभट्ट द्वितीय था। उत्तर में दूर तक अपनी राज्य की सीमा फैलाने वाले और महोबा को अपनी राजधानी बनाने वाले गौरवशाली शासक नन्नुक की सेना नाग भट्ट द्वितीय (सन 815- 833) को शक्तिशाली सेना का सामना सन 832 में करना पड़ा और अन्त में वह अधीकृत कर लिया गया। (10)

नागभट्ट द्वितीय के पश्चात दूसरा महत्वपूर्ण शासक मिहिर भोज (838- 885 AD) हुआ। उसने फिर से बुन्देलखण्ड में अपनी सत्ता स्थापित की । (11) 9वीं शताब्दी में प्रतिवाहन चन्देल जोलाक गुहिल के साथ मिल गये और चन्देलों ने गुहिर नामक प्रदेश पर शासन स्थापित किया। यह आधुनिक बुन्देलखण्ड में आता है। इस वंश में राहिल नामक राजा हुआ इसने रोहिला नाम का एक गांव बसाया और वहां सुन्दर मन्दिर बनवाया मन्दिर तो नष्ट हो गया किन्तु गांव महोबा से दो मील दूर अब तक बसा है। (12)

बहुत समय पश्चात कीर्तिवर्मन (1060 - 100 AD) में शासक हुआ। तत्पश्चात मदनवर्मन शासक हुआ। इसके समय के बहुत शिलालेख मिले। महोबा के निकट जो सुन्दर तालाब मदन सागर है वह इसी के द्वारा बनाया हुआ है। तालाब के किनारे दो मन्दिर भी बनवाये जो अब तक मौजूद हैं। (13)

परमार्दिदेव (1165-1202AD) एक सफल शासक हुआ जो परमाल के नाम से जाना जाता है, (14) जो चन्देलों में अन्तिम महान

शासक हुआ। राजा परमाल का आल्हा नाम, एक योद्धा था। आल्हा बनाफर के दशरथ का पुत्र था। माहिल देव ने आल्हा और ऊदल को राज्य से निकलवाकर चन्देलों के राज्य को नष्ट करने का प्रयत्न किया। पृथ्वीराज को परमाल के देश पर आक्रमण करने के लिये निमंत्रित किया। पृथ्वीराज चौहान इस समय संभल में था जब उसे मालूम हुआ कि महोबा की सेना दक्षिण भेज दी गयी तब उसने चन्देलराज्य पर आक्रमण कर दिया। (सिर स्वागढ़ को जीत कर मलखान को पराजित करके) तत्पश्चात पृथ्वीराज महोबा की ओर चला उस समय वहाँ पर परमाल की सेना नहीं थी सारी सेना जलालपुर के पास मसराही नामक स्थान में बेतवा के किनारे थी। पृथ्वीराज महोबा के पास आकर ठहरा, माहिलदेव ने इसकी खबर परमल को दी। परमल ने अपने बचाव का प्रयत्न किया। उसने अपने दोनों लड़के ब्रह्मजीत और रणजीत को कालिंजर के किले में भेज दिया स्वयं अपनी स्त्री के साथ मनियादेवी के शरण में चला गया और आल्हा को सहायता के लिये बुलवाया। (16) इसी बीच पृथ्वीराज और परमाल राज्य में सुलह हो गयी थी। आल्हा और ऊदल अपनी माँ के कहने पर महोबा वापस आये और महोबा को हारने से बचा लिया। कन्नौज का शासक जयचन्द पृथ्वीराज

चौहान का घोर शत्रु था अपने दो पुत्रों के साथ उसने एक बहुत बड़ी सेना बनाकर जालि की सहायता के लिये भेजी। आल्हा ने भाभूंराम की सेना को मीरतालन के साथ मिलकर पराजित किया। सब सेना को महोबा आना पड़ा यहाँ पर पृथ्वीराज और परमाल के मध्य संधि होने से युद्ध बन्द हो गया। (17)

महोबा परमार्दिदेव के समय में चन्देलराज्य की राजधानी थी। पृथ्वीराज ने विक्रम सं. 1239 में इसे जीत लिया था परन्तु फिर छोड़ दिया था। संवत 1248 में जब पृथ्वीराज ने दूसरी लड़ाई लड़ी तब जान पड़ता है कि महोबा ले लिया गया था। कुछ समय पश्चात दिल्ली के मुसलमान शासकों के हाथों में चला गया था। (18) परमाल को 1282 में एक बड़े शत्रु के रूप में कुतुबुद्दीन ऐबक का सामना करना पड़ा महोबा और कालपी दोनो नगर कुतुबुद्दीन ने विक्रम सं. 1253 में ले लिये थे। विक्रम संवत 1491 में जौनपुर के सूबेदार इब्राहिम शाह ने कालपी पर आक्रमण किया । परन्तु एक साल के बाद जब दिल्ली बादशाह और जौनपुर के सूबेदार के विरुद्ध युद्ध हुआ तब कालपी और महोबा मालवा के बादशाह हुशंगशाह के हाथ चले गये। परन्तु फिर से जौनपुर के सूबेदार ने

ये प्रदेश अपने कब्जे में कर लिये। (19)

<u>मध्यकाल:</u>

तुर्की शासकों द्वारा कालिंजर पर अधिकार सन 1203 में कर लिया गया लेकिन चन्देलों की शक्ति पूरी तरह से समाप्त नहीं की जा सकी। परमाल का पुत्र त्रैलोक्यवर्मन ने कालिंजर पर पुनः अपना शासन 1231 में स्थापित कर लिया 16वीं शताब्दी तक वह उनके हाथ में रहा। परमाल के पुत्र समरजीत को महोबा से सहाबुद्दीनगौरी ने हटा दिया। कुछ समय पश्चात महोबा राज्य उज्जैन के राज्य द्वारा अधीकृत कर लिया गया उसके समय में वहां से मुसलमान शासक बाहर रहे। (20) सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी (1294-1316) ने वहां बंगार शासकों का गढ़ कुरारा को लेकर (जो झांसी से 27 किमी. पूर्व में स्थित है) अपना राज्य बनाया। सुल्तान गियासुद्दीन द्वारा महोबा में 1322 में एक मस्जिद बनवायी। जो यह बताते हैं कि मुसलमान शासक यहां आये।

1376-77 में सुल्तान फिरोजशाह तुगलक (1351-1388) ने महोबा को मालिक-उल-शाह-मर्दन दौलत का हिस्सा बना दिया और उसे नसीर उल मुल की उपाधि प्रदान की गयी। (21) कुछ समय पश्चात मुगलों ने अपने आगमन से दिल्ली सुल्तानों के लिये समस्या पैदा कर दी।

तैमूर द्वारा दिल्ली पर आक्रमण का प्रभाव राज्यों पर पड़ा। प्रान्तों के सूबेदारों ने स्वतन्त्र होना कर दिया, महोबा और कालपी मुहम्मद खान के हाथों चला गया जो कालपी का सूबेदार था। (22) महोबा कालपी का एक अंग बन गया और बुन्देलखण्ड का राजनीतिक केन्द्र है। (23)

पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त तक का इतिहास अन्धकारमय है। कहा जाता है कि 1488 में सिकन्दर लोधी ने इस स्थान पर आक्रमण करके चन्देलों द्वारा निर्मित मन्दिर नष्ट भ्रष्ट किये। (24) 16वीं शताब्दी में चन्देल शक्ति कुछ कमजोर थी और दिल्ली के शासकों से कुछ लड़ाईयां हुईं। 1507 में रुद्र प्रताप ने 1.25 करोड़ रुपये टैक्स के रूप मे इस प्रदेश से वसूले । रुद्र प्रताप के बाद उसके तीसरे पुत्र उदयजीत ने महोबा पर अधिकार कर लिया। बुन्देलों और मुगलों के बीच लड़ाईयां बेतवा और धसान के बीच हुईं । लेकिन कालिंजर शासक रामचन्द्र बघेला ने 1569 में आत्मसमर्पण कर दिया जो उस समय हमीरपुर जिले में था। अकबर के समय में सन् 1556-1605 ई0 में हमीरपुर जिला दो सूबों में बांट दिया गया। मौदहा तथा महोबा परगनें इलाहाबाद सूबे के अंग थे तथा राठ जरेला खन्दौत हमीरपुर कालपी आगरा सूबे में थे। (25)

मुगल काल में महोबा रुद्रप्रताप के तीसरे पुत्र उदयजीत के अधिकार में था। बुन्देला शक्ति चम्पतराय के समय में एक बहुत बड़ी शक्ति थी। (26) चम्पतराय के पास महोबा की जागीर थी वे अपनी वीरता के लिये प्रसिद्ध थे उनको सलाहकार वीरसिंह देव ने जहांगीर की मृत्यु के पश्चात शाहजहां को कर देना बन्द कर दिया। शाहजहां ने बकी खां को एक बड़ल बुन्देलों को वश में करने के लिये भेजी बकी खां को बुन्देलों से हार खानी पड़ी। इस प्रकार बुन्देलों की स्वतंत्रता कायम रही। (27) शाहजहां ने कई लड़ाईयां लड़ी किन्तु अन्त में उसे सन्धि करनी पड़ी। चम्पतराय की वीरता से प्रसन्न होकर उसे कोंच परगना दिया गया और उसकी गणना मुगल दरबार के शाही अमीरों में होने लगी और वह मनसब मान लिया गया।(28) दारा के प्रभाव से पहाड़सिंह ने चम्पतराय से कोंच की जागीर वापस लेनी चाही और यह प्रलोभन दिया कि वह 9 लाख रुपये जागीर से देगा। दारा ने इसे स्वीकार कर लिया और जागीर पहाड़ सिंह को प्रदान कर दी गयी। औरंगजेब दारा से शत्रुता रखता था उसे अच्छा अवसर प्राप्त हुआ और चम्पत राय को भी बदला लेने का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ। (29) औरंगजेब इस समय दक्षिण का सूबेदार था उसको शासक

बनाने में चम्पत राय की मुख्य भूमिका रही थी। परन्तु दोनों के सम्बन्ध धीरे-धीरे बिगड़ने लगे। औरंगजेब किसी बहाने से उसकी जागीर छीन लेना चाहता था। वे बुन्देलखण्ड में स्वतंत्रता का नारा लेकर आये। एक के बाद एक किले जीतना आरम्भ कर दिया। औरंगजेब ने दतिया के शुभकरण को दिल्ली के बादशाह की ओर से बुन्देलखण्ड का सूबेदार नियुक्त किया था औरसेनापति भी बनाया था। चम्पतराय और शुभकरण में कई युद्ध हुए। (30) शुभकरण चम्पतराय को हरा नहीं सका अन्त में औरंगजेब ने एक बड़ी सेना लेकर बुन्देलखण्ड पर चढ़ाई कर दी। चम्पतराय ने बड़े धैर्य और वीरता से औरंगजेब का मुकाबला करता रहा। अंत में महारानी लाल कुंवर और महाराज ने सिपाहियों से मरने की अपेक्षा आत्महत्या करना अधिक उचित समझा और पेट में कटार भोंक ली। यह घटना वि० सं० 1721 की है। (31)

औरंगजेब की दक्षिणी नीति के कारण उत्तरी भारत में उसकी अनुपस्थिति से छत्रसाल ने ललितपुर पन्ना कालिंजर बांदा में हमीरपुर जीतते

हुए अपना ध्यान जालौन जिले की ओर कोंच, कनार, कालपी, उरई, प्रदेश को रौंदने में लगाया। केवल सैयद लतीफ का अधिकार कोटरा में सुरक्षित रहा। इन सभी राज्यों ने चौथ देना आरम्भ किया। औरंगजेब के पश्चात बहादुर शाह ने छत्रसाल को दरबार में आमंत्रित किया और उसके अधिकृत देशों शाही मुहर लगा दी। सन् 1713 ई० फर्रुखसियर के गद्दी पर बैठने के बाद मुहम्मद खाँ ने एरच भाण्डेर कालपी कोंच सिहोंड़, मोंदहा सीपरी जालौन प्राप्त किये। सन् 1719 - 1720 ई० में बुन्देलों ने कालपी को ध्वस्त किया। पीर खाँ को मार डाला। छत्रसाल का आधिपत्य इस प्रदेश पर हो गया। (32)

<u>छत्रसाल तथा मुहम्मद खान बंगश के बीच युद्ध</u> :

छत्रसाल का जन्म सन् 1647 ई० में झाँसी जिले कटेरा के समीप मोर पहाड़ी में हुआ था। (33) जिस समय उनका जन्म हुआ उस समय उनके पिता चम्पत राय मुगलों के विरुद्ध संघर्ष में व्यस्त थे (34) छत्रसाल नेपोलियन की तरह अपने जन्म से ही बुन्देलखण्ड में हिन्दू धर्म तथा संस्कृत के संरक्षक बन गये। तत्कालीन मुगल शासक फर्रुखसियर सन् 1713-19 ई० ने छत्रसाल की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर उसे दबाने का निश्चय

किया। अतः उसने अपने सबसे बहादुर सेनानायक मुहम्मद खाँन बंगश को एरच तथा भाण्डेर परगने देते हुए एक विशाल मुगल सेना के साथ उसे बुन्देलखण्ड भेजा गया ताकि क्षेत्र में मुगलों की खोई हुई प्रभुता को पुनः स्थापित किया जा सके। मुगलों की विशाल सैनिक शक्ति के सामने छत्रसाल हताश नहीं हुए। शीघ्र ही एक मुठभेड़ के बाद जून सन् 1728 ई० में छत्रसाल ने जैतपुर के किले में शरण ले ली जिसे छत्रसाल ने घेर लिया।

## पेशवा बाजीराव द्वारा छत्रसाल की सहायता :

पेशवा बाजीराव अपनी सेना के साथ जबलपुर के समीप गण्डला नामक स्थान पर रुका हुआ था। पेशवा मालवा तथा उत्तरी भारत में अपने विजय अभियान के सम्बन्ध में आया हुआ था। (35) छत्रसाल ने एक पत्र लिखकर मुगलों के विरुद्ध बाजीराव से मदद की माँग की। बाजीराव जो कि हिन्दू धर्म का संरक्षक था, (36) ने छत्रसाल को पेशवा से अपनी सेना के साथ जैतपुर पहुंच गया। छत्रसाल और बाजीराव की सेनाओं ने मिलकर मुहम्मद खान बंगश पर आक्रमण किया जिसमें बुरी तरह पराजित होकर मुहम्मद खान बुन्देलखण्ड से वापस हुआ।

## छत्रसाल द्वारा पेशवा बाजीराव का सम्मान तथा साम्राज्य का विभाजन:

बाजीराव की सहायता से छत्रसाल बड़े प्रभावित हुए। युद्ध की समाप्ति के बाद उन्होंने बाजीराव के सम्मान में एक समारोह किया तथा उसे अपने दरबार की सबसे सुन्दर मस्तानी नाम की नर्तकी भेंट की। इसके साथ ही पेशवा को उन्होंने अपना तीसरा पुत्र मान लिया। छत्रसाल उस समय तक काफी वृद्ध हो चुके थे। अतः उन्होंने अपने दोनों पुत्रों हृदयशाह और जगतराज के बीच अपने साम्राज्य का बंटवारा कर दिया तथा तीसरा हिस्सा पेशवा बाजीराव को भेंट किया (37) पेशवा को जो हिस्सा मिला उसमें कालपी, इटावा नगर आदि क्षेत्र शामिल थे। इसमें महोबा का परगना भी शामिल था। वास्तव में धसान नदी के दक्षिण वाले क्षेत्र में बाजीराव को हिस्सेदारी दी गयी जिसकी वार्षिक आय 32 लाख रुपया थी। (38) छत्रसाल ने अपने पुत्रों को यह आदेश दिया कि वे पेशवा से मिलकर समय-समय पर उसकी सहायता करते रहें।

## छत्रसाल के बाद मराठा बुन्देला सम्बन्ध :

छत्रसाल द्वारा अपने साम्राज्य के बंटवारे के फलस्वरूप मराठों को बुन्देलखण्ड का क्षेत्रफल मिला था उसे केन्द्र बनाकर पेशवा ने अपनी शक्ति

का विस्तार प्रारम्भ किया। इस प्रकार बुन्देलखंड में मराठों का आधिपत्य स्थापित हो गया। पेशवा बाजीराव ने इस क्षेत्र की बागडोर अपने सूबेदार गोविन्द पन्त खेर को दी जो सागर में रहते हुए इन क्षेत्रों का प्रबन्ध करने लगा। (39) बांदा और कालपी के क्षेत्र पेशवा की अवैध संतान शमशेर बहादुर के हिस्से में पड़े। इसी प्रकार झाँसी का प्रबन्ध रघुनाथ हरी निवालकर को सौंप दिया गया।

दुर्भाग्यवश इस क्षेत्र में मराठा और बुन्देलाओं के सम्बन्ध क्रमशः खराब होते गए बुन्देला मराठाओं को चौथ देने में कतराते थे और साथ ही साथ वे मराठों की प्रभुता के अधीन रहना नहीं चाहते थे लेकिन इसके बावजूद भी गोविन्द पन्त ने बुन्देलखण्ड को केन्द्र बनाकर मराठा सत्ता को चारों ओर विस्तार किया।

पन्ना के बुन्देला राजाओं की स्थिति भी निरन्तर कमजोर होती गयी 14 दिसम्बर सन् 1731 ई० में छत्रसाल की मृत्यु से लेकर सन् 1857 ई० के विद्रोह तक पन्ना की आन्तरिक स्थिति विरोध तथा षडयंत्रों से भरी पड़ी थी। इस स्थिति का लाभ लेकर छतरपुर राज्य का गठन सोनेशाह पवार ने किया। वह पन्ना नरेश की सेना में सेना नायक था धीरे-धीरे सन् 1826

ई० में वह स्वतंत्र हो गया। सन् 1854 ई० में उसकी मृत्यु हुई। इसके पश्चात् उसका पुत्र जगतराज गद्दी पर बैठा। ठीक यही स्थिति छत्रसाल के पुत्र जगतराज के रियासत की भी रही। इस प्रकार सन् 1777 ई० में जब अंग्रेजों ने बुन्देलखण्ड में प्रवेश किया उस समय तक सन् 1731 ई० में छतरपुर सन् 1784 बांदा सन् 1764 जैतपुर सन् 1731 चरखारी सन् 1764 और बिजावर 1765 आदि राज्यों का जन्म हो चुका था। (40)

इसी बीच सन् 1761 ई० में पानीपत का द्वितीय युद्ध हुआ जिसमें मराठों की पराजय हुई। इस पराजय से मराठा सत्ता की प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगा। बुन्देलखण्ड में भी इसका प्रभाव पड़ा और जो बुन्देले राजा अभी तक मराठों के अधीन समझे जाते थे, अब उन्होंने मराठों के विरुद्ध विद्रोह प्रारम्भ कर दिये। बुन्देलखण्ड की अस्त व्यस्तता व अव्यवस्था का लाभ लेकर अवध के नवाब वजीर शुजा उद्दौला के इस क्षेत्र पर पुनः मुगल सत्ता की स्थापना करने का निश्चय किया। (41) परन्तु मुगलों के विरुद्ध एक बार पुनः बुन्देला और मराठों ने स्वयं को संगठित किया और नाने अर्जुन सिंह के नेतृत्व में इस संयुक्त सेनाओं ने सन् 1763 ई० के तिंदवारी के युद्ध में शुजा उद्दौला के सेनानायक हिम्मत बहादुर को पराजित किया। (42)

हिम्मत बहादुर गोसाईं और बुन्देलखंड :

हिम्मत बहादुर गोसाईं बुन्देलखण्ड में अपनी सत्ता स्थापित करने
का स्वप्न देख रहा था। गोसाईयों के प्रारम्भिक इतिहास के बारे में
जानकारी प्राप्त नहीं होती लेकिन यह ज्ञात होता है कि दतिया में अकालों
के समय एक महिला ने अपने पुत्रों किसी साधू को बेच दिया था और
सम्भवतः यही इन्दर गिरि तथा अनूपगिरि गोसाईं के नाम से विख्यात
हुए(43) इन्हीं में इन्दर गिरि ने कोंच में सन् 1745 ई0 में अपनी प्रभुता
स्थापित कर ली यहीं पर इसने एक किला बनवाया उसके चारों ओर अपना
अधिपत्य स्थापित कर लिया। झांसी के मराठा गवर्नर नारो शंकर ने सन्
1750 ई0 में इन्दर गिरि को पराजित किया था अतः उसे अपने साथियों
के साथ मोंठ खाली करना पड़ा तत्पश्चात वह बुन्देलखण्ड से अवध के नवाब
शुजा उद्दौला की सेना में चला गया। सन् 1752 ई0 में इन्दर गिरि की
मृत्यु हुई उसके पश्चात उसका शिष्य अनूपगिरि अवध की सेना का
सेनानायक बन गया।

तिलवारी के युद्ध के एक वर्ष पश्चात सन् 1754 ई0 में अवध की
सेना को अंग्रेज सेनानायक हेक्टर मुनरो ने बक्सर के युद्ध में परास्त किया

को देखते हुये अंग्रेज यहां अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहते थे। उन्हें यह ज्ञात था कि यह सेना रखकर ही आस-पास की रियासतों पर अंकुश बनाए रखा जा सकताहै। निश्चित ही इस क्षेत्र में अंग्रेजों के आधिपत्यकेपीछे यही उद्देश्य था। अतः जब बुन्देले और मराठे आपसमेंएकदूसरे का विरोध कर रहे थे. उस समय वारेन हेस्टिंग्सने काल्पी होकर एकसेना पुना भेजने का निश्चय किया। यद्यपि मराठों ने अंग्रेजों को आगे बढ़ने से कुछ समय तक रोके रखा; किन्तु अन्त में ग्वालियर, भोपाल और नागपुर के राजाओं से समझौता करके ब्रिटिश सेना को बुन्देलखंड होकर महाराष्ट्र भेज दिया गया। अंग्रेजी सेना का इस क्षेत्र सेजाना बुन्देलखंड में मराठा आधिपत्य की प्रतिष्ठा को और धक्का लगाने में सफल रहा। यद्यपि जब अंग्रेजी सेनाएँ नर्वदा नदी पार कर चुकी थी उससमय झांसी की मराठा सेनाओं ने काल्पी पर पुनः अधिकार लिया था, लेकिन बाद में चलकर यह क्षेत्र बुन्देलों की पकड़ में आ गया।

<u>अली बहादुर तथा हिम्मत बहादुर गोसाईं का बुन्देलखण्ड अभियान</u>:

उपरोक्त परिस्थिति में 18वीं शताब्दी के अंत तक बुन्देलखण्ड में मराठा प्रभुताके पतन का क्रम जब जारी था उस समय सन् 1789 ई० में अलीबहादुर और हिम्मत बहादुर को इस क्षेत्र पर मराठा प्रतिष्ठा को

स्थापित करने के लिये पुनः नियुक्त किया गया। दोनों नेताओं ने यह निश्चय किया कि इस विजय अभियान के बाद अलीबहादुर को बांदा का नवाब बना दिया जाएगा तथा हिम्मत बहादुर को भी जीते हुए क्षेत्र में हिस्सा मिलेगा। (45) इस समझौते के अंतर्गत लगभग चालीस हजार सेना के साथ दोनों सेनानायकों ने बांदा, चरखारी, बिजावर आदि को जीतते हुये पन्ना, छतरपुर को भी अपने अधिकार क्षेत्र में ले लिया। (46) इस प्रकार इस क्षेत्र में मराठा सत्ता की पुनः स्थापना हुई। 26 अगस्त सन् 1802 ई0 को जब अलीबहादुर ने कालिंजर पर घेरा डाला हुआ था उस समय उसकी मृत्यु हो गई। फलतः उसके पुत्र शमशेर बहादुर ने आकर मोर्चा सम्भाला और स्वयं को बांदा का राजा घोषित किया।

सिन्धिया, सन् 1803 ई0 में पेशवा और अंग्रेजों के बीच हुई बेसिन की सन्धि से नाराज था और वह दोआब तथा आस-पास के ब्रिटिश क्षेत्रों पर आक्रमण करने की योजना बना रहा था। इसके अतिरिक्त बुन्देलखण्ड में मराठों की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने के लिये नाना पडनवीस ने शमशेर बहादुर को नियुक्त किया। (47) इस प्रकार मराठों का संयुक्त अभियान बुन्देलखण्ड में अंग्रेजी प्रभुसत्ता के विरुद्ध खोई

हुई मराठा सत्ता को स्थापित करने का एक प्रयास था, लेकिन इसी बीच हिम्मत बहादुर मराठों का साथ छोड़कर अंग्रेजों की ओर जा मिला।

अंग्रेजों के साथ हुई एक सन्धि के अनुसार उसने इस क्षेत्र में ब्रिटिश सत्ता हिम्मत बहादुर गोसाईं को बुन्देलखंड में यमुना के दाहिने किनारे पर 38 लाख रुपया वार्षिक आय की एक जागीर देने का वचन दिया। (48)

इस प्रकार गोसाईं नेता की स्वार्थ और गद्दारी से इस क्षेत्र की स्वाधीनता को एक खतरा पैदा हो गया। हिम्मत बहादुर को बुन्देलखण्ड की भौगोलिक स्थिति का अच्छा ज्ञान था जो अंग्रेजों को अपनी सत्ता स्थापित करने में बड़ी सहायक सिद्ध हुई।

सन् 1803 ई० में बेसिन की सन्धि से बुन्देलखण्ड का वह क्षेत्र जो मराठों के आधीन था उस पर अंग्रेजों का आधिपत्य हो गया। इस क्षेत्र पर अपना संगठन तथा प्रशासन प्रभावशाली बनाने के लिए सन् 1803 ई० में अंग्रेज अधिकारी कैप्टेन बेली बुन्देलखण्ड पहुंचा। (49) बेली ने जिस

इस युद्ध में अनूपगिरि ने अपनी सैनिक प्रतिभा परिचय देते हुए नवाब शुजा उद्दौला के प्राणों की रक्षा की उसकी बहादुरी से प्रभावित होकर उसे हिम्मत बहादुर की पदवी दे दी उसके पश्चात सिंदकी तथा उसके आस पास के परगने जागीर के रूप में दे दिये।

इसी बीच बुन्देलखण्ड की आन्तरिक स्थिति विद्रोहों तथा अराजकता से ग्रस्त हुई। (44) बुन्देला राजा आपस में ही संघर्ष करने लगे। मराठों की स्थिति भी अच्छी न थी। पानीपत की पराजय के बाद मराठे भी काफी कमजोर हो गये थे। इस स्थिति का लाभ लेने के लिये हिम्मत बहादुर ने पुनः बुन्देलखण्ड का अभियान किया। यद्यपि सन् 1163 ई0 में तिंदवारी के युद्ध में उसकी पराजय हुई थी लेकिन इसके बाद भी वह हतोत्साहित नहीं हुआ तथा बुन्देलखण्ड में वह अपनी सत्ता स्थापित करने के लिये प्रयास करता रहा बक्सर के युद्ध में उसकी प्रतिभा से प्रभावित होकर शुजा उद्दौला ने उसे विशाल सेना दे कर बुन्देलखण्ड में अभियान करने के लिये भेजा। सबसे पहले दतिया के राजा रामचन्द्र को उसने पराजित कर चौथ वसूल किया इसके पश्चात मोंठ तथा गुरसराय पर आक्रमण किया। गुरसराय के राजा बालाजी गोविन्द ने इस विषम परिस्थिति में पूना

दरबार में मदद प्राप्त करने के लिये एक पत्र लिखा। उन दिनों नाना पडनवीस ने अपने सेनानायक दिनकर राव अन्ना के नेतृत्व में एक सेना बालाजी की मदद के लिए भेजी। इसके साथ ही ग्वालियर व इन्दौर के मराठा रघुनाथ हरि निवालकर ने भी उसकी सहायता की। इस प्रकार सम्मिलित मराठा सेनाओं ने हिम्मत बहादुर के विरुद्ध अभियान किया जिसमें पराजित होकर हिम्मतबहादुर को मोंठ और गुरसराय खाली करना पड़ा तत्पश्चात् वह अवध चला गया।

बुन्देलखण्ड में अपनी लगातार असफलताओं के बावजूद भी वह इस क्षेत्र में अपनी प्रभुता स्थापित करने के लिए प्रयास में प्रयत्नरत रहा। अंत में सन् 1775 ई0 में वह मराठों की सेना में आ गया। मराठों ने उसे अपने उत्तरी अभियानों के लिये नियुक्त किया। इसी बीच उसका संपर्क अलीबहादुर के साथ हुआ। वह दोनों मिलकर बुन्देलखण्ड में अपने लिये क्षेत्रफल प्राप्त करना चाहते थे। अन्त में अलीबहादुर और हिम्मत बहादुर ने मिलकर इस क्षेत्र की विजय योजनाएँ बनाना प्रारम्भ कर दीं।

<u>आधुनिक युग</u>। <u>बुन्देलखण्ड में अंग्रेजी सत्ता का प्रारम्भ</u>।

जिस समय अलीबहादुर और हिम्मत बहादुर गोसाईं, बुन्देलखण्ड विजय की योजनाएँ बना रहे थे उस समय सन् 1778 ई0 में अंग्रेजों ने पहली बार इस क्षेत्र में प्रवेश किया। इस क्षेत्र की केन्द्रीय स्थिति व्यापारिक महत्व

प्रकार का शासन प्रारम्भ किया वह मौलिक रूप से सैनिक तथा राजस्व वसूल करने वाला था। उसके पश्चात अंग्रेजी सत्ता का विस्तार प्रारम्भ हुआ जिसे पराजित कर उसके क्षेत्र पर अधिकार कर लिया गया। अंग्रेजों तथा शमशेर बहादुर के बीच हुए समझौते के अनुसार उसे 4 लाख रु० की वार्षिक पेंशन तथा बांदा में रहने की अनुमति भी दे दी गयी। सन् 1812 ई० में इस समझौते की पुनः पुष्टि की गयी। (50)

शमशेर बहादुर की मृत्यु सन् 1823 ई० में हुई इसके बाद उसका उत्तराधिकारी उसी का भाई जुल्फिकार अली हुआ। जुल्फिकार की मृत्यु के बाद अलीबहादुर गद्दी पर बैठा और उसने सन् 1857 ई० में अंग्रेजों के विरुद्ध बिगुल बजाया। बागी हो जाने के कारण उसकी 4 लाख की पेंशन जब्त कर ली गयी तथा उसका निवास बांदा से हटाकर इन्दौर कर दिया गया। बाद में सरकार ने 36 हजार रु० प्रति वर्ष उसके जीवन निर्वाह के लिये देना स्वीकार किया। इस प्रकार अन्ततः सन् 1873 ई० में उसकी मृत्यु हो गयी। (51)

बांदा पर अधिकार करने के साथ ही साथ अंग्रेजों ने यमुना नदी के आस पास के क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया जिसकी वार्षिक आय 14

लाख रुपया थी। इन्हीं क्षेत्रों को लेकर आधुनिक बांदा, हमीरपुर जिलों का गठन किया गया। धीरे-धीरे अंग्रेजी सत्ता बुन्देलखण्ड के चारों ओर फैल गयी। अनेकों राजाओं तथा सामन्तों ने अंग्रेजी सत्ता की सर्वोच्चता को स्वीकार कर लिया। सन् 1817 ई० में जैसे ही पेशवा ने अपने अधिकार को बुन्देलों के पक्ष में छोड़ दिया। इसके परिणाम स्वरूप तमाम जागीरदारों तथा राजाओं महाराजाओं ने अंग्रेजी सत्ता के समक्ष समर्पण कर दिया। धीरे धीरे राजाओं को सरकार की ओर से सनद दी जाने लगी और इस प्रकार इस क्षेत्र में अंग्रेजी शासन स्थापित हो गया।

## Foot Notes

1. गजेटियर आफ इण्डिया उत्तर प्रदेश (डिस्ट्रिक्ट हमीरपुर) बलवंत सिंह स्टेट एडीटर सन् 1988 पृष्ठ- 1
2. इण्डियन आर्क्योलोजी- 1963-64 : ए. घोष नई दिल्ली 1967 पृष्ठ- 45
3. सभापर्व, महाभारत अध्याय 43 पृष्ठ- 383-385
4. प्राचीन भारत सार सी० मजूमदार पृष्ठ- 186
5. मजूमदार और पुसल्कर दि हिस्ट्री एण्ड कल्चर आफ दि इण्डियन प्यूपिल भाग-II पृष्ठ- 95
6. ट्रेक सोकोमैन डी० एल० हमीरपुर गजेटियर पृष्ठ- 217
7. मजूमदार और पुसल्कर दि हिस्ट्री एण्ड कल्चर आफ दि इण्डियन प्यूपिल भाग-II पृष्ठ- 99, ई० जे० रेप्सन दि कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया भाग-II
8. गजेटियरआफ इण्डिया उत्तर प्रदेश (डिस्ट्रिक्ट हमीरपुर) बलवंत सिंह स्टेट एडीटर 1988 पृष्ठ- 24
9. मजूमदार और पुसल्कर दि हिस्ट्री एण्ड कल्चर आफ दि इण्डियन प्यूपिल भाग-II पृष्ठ- 23
10. चन्देल और उनका राजत्व काल- केशवचंद्र मिश्र अध्याय 4 पृष्ठ-60 प्रथम संस्करण संवत् 2011
11. आर० एस० त्रिपाठी- हिस्ट्री आफ कन्नौज टू दि मुस्लिम Conquest पृष्ठ- 236
12. बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास- गोरेलाल तिवारी प्रथम संस्करण संवत् 1990 अध्याय 6 पृष्ठ- 44
13. ----------------------तदैव----------------------पृष्ठ- 51
14. बोस एन० एस०- हिस्ट्री आफ दि चन्देलाज आफ जैजाक मुक्ति पृष्ठ- 5-8
15. बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास - गोरेलाल तिवारी प्रथम संस्करण संवत् 1990 अध्याय सात पृष्ठ- 53
16. ----------------------तदैव----------------------पृष्ठ- 55
17. ----------------------तदैव----------------------पृष्ठ- 58
18. ----------------------तदैव----------------------पृष्ठ- 58
19. ----------------------वही---------- अध्याय आठ पृष्ठ-67-68
20. दि अर्ली रूल आफ कन्नौज पृष्ठ- 27-29 : मिश्रा एस. के.

21. ड्रेकब्रोक मैन डी० एल० हमीरपुर गजेटियर इलाहाबाद 1989 पेज-136

22. सरहिन्दी, याहिया-बिन-अहमद-बिन अब्दुल्ला तारीख मुबारक शाही, इंग्लिश ट्रान्सलेशन के० के० बसु 1932 पृष्ठ- 140

23. ड्रेकब्रोक मैन डी० एल० हमीरपुर गजेटियर इलाहाबाद 1999 पेज-137

24. ड्रेकब्रोक मैन डी० एल० हमीरपुर गजेटियर इलाहाबाद 1989 पेज-139

25. ----------------------तदैव--------------पृष्ठ- 139

26. ----------------------तदैव--------------पृष्ठ- 139

27. ----------------------तदैव--------------पृष्ठ- 139

28. बुन्देलखंड का ऐतिहासिक मूल्यांकन - राधाकृष्ण बुन्देली श्रीमती सत्यभामा बुन्देली प्रथम भाग पृष्ठ- 89

29. ----------------------तदैव--------------पृष्ठ-90

30. एटकिन्सन ई. टी. स्टेटिस्टिकल डिस्क्रिप्टिव एण्ड हिस्टोरिकल एकाउण्ट आफ दि नार्थ वेस्ट प्राविंसेज आफ इण्डिया जिल्द -1 (बुन्देलखण्ड) इलाहाबाद सन् 1874 पृष्ठ - 22

31. ----------------------तदैव--------------पृष्ठ- 22

32. बुन्देलखण्ड का ऐतिहासिक मूल्यांकन: राधाकृष्ण बुन्देली श्रीमती सत्यभामा बुन्देली प्रथम- भाग -1 पृष्ठ- 95-96

33. बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास- गोरेलाल तिवारी प्रथम संस्करण संवत् 1990 काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी पृष्ठ- 66-116

34. सरदेसाई जी० एस० ए० न्यू हिस्ट्री आफ मराठाज भाग- 2 पृष्ठ- 185 - 187

35. पान्निकर के० एम० ए० सर्वे आफ इण्डियन हिस्ट्री बम्बई सन् 1966 पृष्ठ- 193

36. बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास-- गोरेलाल तिवारी प्रथम संस्करण संवत् 1990 काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी पृष्ठ- 66-116

37. पान्निकर के० एम० ए० सर्वे आफ इण्डियन हिस्ट्री बम्बई सन् 1966 पृष्ठ- 193

38. सरदेसाई जी० एस० ए० न्यू हिस्ट्री आफ मराठाज भाग- 2 पृष्ठ- 185-187

39. इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया (सेन्ट्रल इण्डिया) पृष्ठ- 367

40. एस० एन० सेन अठारहवें सौ सत्तावन पृष्ठ- 267 तथा सरदेसाई जी० ए० न्यू हिस्ट्री आफ मराठाज भाग- 2 पृष्ठ- 230-31

41. इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया (सेन्ट्रल इण्डिया) पृष्ठ- 367

42. श्रीवास्तव ए० एल० शुजाउद्दौला भाग-1 आगरा 1961 पृष्ठ- 122-123

43. तिवारी जी० एल० बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास पृष्ठ- 66-115 तथा इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया (सेन्ट्रल इण्डिया) पृष्ठ- 367

44. सरकार जे० एन० फाल आफ दि मुगल एम्पायर भाग-3 पृष्ठ-221

45. पाठक एस० पी० झाँसी ड्यूरिंग ब्रिटिश रूल 1987, रामानंद विद्या भवन नई दिल्ली - पृष्ठ - 13

46. तिवारी जी० एल० बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास पृष्ठ- 175 तथा इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया (सेंट्रल इण्डिया) पृष्ठ- 367

47. ------------ तदैव ------------

48. एचीन्सन सी० यू० ट्रीटीज इन्गेजमेन्ट्स एण्ड सनद पृष्ठ- 187

49. ------------तदैव------------

50. स्टेटिस्टिकल डिस्क्रिप्टिव एण्ड हिस्टोरिकल एकाउण्ट आफ एन० डब्लू० पी० बुन्देलखण्ड भाग-1 इलाहाबाद 1874 - पृष्ठ- 355

51. डब्लू० आर० पागसन० ए० हिस्ट्री आफ बुन्देलाज -पृष्ठ- 185

## अध्याय - II

### 1857 ई0 के विद्रोह के समय हमीरपुर की दशा :-

सन् 1803-1804 ई0 में बुन्देलखंड के अधिकांश भाग पर कम्पनी सरकार का अधिकार हो गया था। कम्पनी सरकार ने कैप्टन जॉन बैली को बुन्देलखंड में पोलिटिकल एजेंट के रूप में नियुक्त किया गया। इधर हमीरपुर जनपद में धीरे धीरे कम्पनी सरकार ने अपना घेरा बढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। इससे पूर्व अनेक आक्रमणों के कारण बुन्देल खंड पहले से ही रण स्थल बन गया था। पन्ना के राजा हिंदूपत (1776 ई0) की मृत्यु के पश्चात समस्त पूर्वी बुन्देलखंड जैसे रण स्थल ही बन गया था। पन्ना और जैतपुर के राज्यों में उत्तराधिकार के युद्धों ने लगातार खून-खराबे और मारकाट से स्थिति अराजकतापूर्ण बना दी थी। इसी बीच प्रथम मराठा युद्ध (1774-82ई0), में दुजली गोडाई के बुन्देलखंड के अभियान (1778 ई), महाराजा सिंधिया के सरदार खांडेराव हरि के पूर्व बुन्देलखंड पर आक्रमण (1785-87ई0)' फिर तुरंत ही पश्चात बुंदेलखंड में अली बहादुर के पदार्पण और लगभग दस वर्ष (1792-1802 ई0) उस की ओर से हिम्मत बहादुर की सैनिक कार्रवाइयों एवं अभियानों ने सभी प्रशासकीय तथा आर्थिक व्यवस्था को चौपट कर के रख दिया था।(1)

ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक ही था कि अंग्रेज अधिकारी आते ही अमन चैन की स्थापना के साथ ही हमीरपुर की आर्थिक व्यवस्था की ओर मुख्य रूप से मालगुजारी व्यवस्था की ओर ध्यान देना आवश्यक था, क्योंकि वह ईस्ट इंडिया कम्पनी के आर्थिक हितों से सबसे अधिक संबंधित थे। (2) इधर हिम्मत बहादुर और कम्पनी सरकार के बीच 4 सितम्बर 1803 ई० में संधि होते ही दोनों की मिली जुली सेना ने लेफ्टिनेंट पावेल के सेनापतित्व में एक सेना 6 सितम्बर 1803 ई० में राजापुर घाट से बुन्देलखंड में घुस पड़ी। जल्द ही सेना ने हमीरपुर जनपद के महोबा परगने पर अधिकार कर लिया। (3) 18 अक्टूबर 1803 को इलाहाबाद के कलैक्टर अहमदे ने जनपद के परगनों की एक सूची गवर्नर जनरल को भेजी इसमें हमीरपुर जनपद के महोबा एवं राठ कस्बों को ब्रिटिश राज्य के आधीन होना लिखा था। 15 मार्च 1804 ई० की एक अन्य सूची में जनपद के कस्बा जलालपुर, खरका, कोनी तथा सुमेरपुर को भी ब्रिटिश सरकार के आधिपत्य में लिखा। (4) वाजिब-उल-अर्ज तथा इकरारनामा के तहत हमीरपुर जनपद की सरीला, बेरी, अलीपुरा रियासतें भी अंग्रेजों के आधीन हो गयीं। (5)

जैतपुर :- जुलाई 1805 को जैतपुर के राजा केसर सिंह और ब्रिटिश सरकार में एक इकरारनामा पर हस्ताक्षर हुए जिसके तहत 52 गाँव तथा पनवाड़ी कस्बा फ्री टैंट के तहत सरकार को मिल गया तथा राजा को सनद प्राप्त हो गई। 13सितम्बर 1812 ई० में राजा केसर सिंह तथा एक दूसरे इकरारनामें पर हस्ताक्षर हुए। इस बीच केसर सिंह की मृत्यु हो गयी तथा उसका उत्तराधिकारी पारीक्षत जैतपुर का राजा हुआ। 1842 ई० में अंग्रेजों ने सनद को समाप्त करके जैतपुर किले पर तथा कस्बे पर अधिकार कर लिया। 1849 ई० में पारीक्षत की विधवा रानी को 1200\- रु० माह की पेंशन सरकार ने बाँध दी ।(6)

बंदोबस्त (सेटेलमेंट) हमीरपुर जनपद:-

इधर कम्पनी सरकार का जनपद पर अधिकार होता जा रहा था, तथा कम्पनी सरकार का आर्थिक स्थिति मजबूत करने के मालगुजारी की अधिक से अधिक वसूली पर अंग्रेज अधिकारियों ने ध्यान देना आरम्भ कर दिया। इसलिए वाल्डेन, इरिस्किन, वाइनयाप, स्काट वेयरिंग, वालपी, लेविन और मूर ने हमीरपुर जनपद में मालगुजारी बंदोबस्त की ओर सर्वाधिक ध्यान दिया। जिसके फलस्वरूप 1805 ई० से 1842 ई० तक वारेन तथा वालपी ने कलैक्टर फोर्ड के साथ हमीरपुर जनपद में बंदोबस्त (सेटेलमेंट)

लागू किया और साथ ही 77,700 रु मालगुजारी के खजाने में जमा किये। कमिश्नर ऐनोसिली ने जनपद को हमीरपुर, सुमेरपुर, जलालपुर, पानी, मौदहा तथा राठ कस्बों का दौरा किया तथा बंदोबस्त अथवा सेटेलमेंट के कार्य का निरीक्षण किया। (7) इस बीच 1809 से 1830 ई0 तक के बीच के समय में अकालों, सूखा, अतिवर्षा और तूफानों - बवंडरों का क्रम सा चलता रहा। कांस के असाधारण रूप से फल जाने से उपजाऊ भूमि नष्ट होती गयी और उसे उसे जोता नहीं जा सका। महाजनियों ने जनपद में अलग आतंक आरम्भ कर दिया। फल स्वरूप समस्त हमीरपुर और बांदा जनपद में "अर्थ विस्थापन" की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी और गाँव देहात उजड़ने लगे थे। इस कारण माल गुजारी किस्तों का भुगतान ही हो सका। (8) अगला बंदोबस्त 1842 में कमिश्नर ऐनोसिल, सी एलिन तथा एच मूरे ने 1842 ई0 में आरम्भ किया तथा परगना राठ सुमेरपुर, मौदहा और पनवाड़ी से रु0 7,98,634.00 तथा मुख्यालय हमीरपुर तथा जलालपुर से रु0 3,41,395.00 मालगुजारी के वसूल किये गए। (3) इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के चौथे दशक तो जनपद का समस्त निजाम अथवा प्रशासन कम्पनी सरकार के हाथों में पहुंच चुका था। जनपद का इस समय मुख्यतः चार परगनों में बाँटा गया था,

मौदहा, राठ, हमीरपुर, महोबा आदि में राठ, हमीरपुर, चरखारी में तहसीलें भी बनायीं गईं। (10)

सन् 1857 ई० के सिपाही विद्रोह के समय हमीरपुर जनपद का कलैक्टर टी० के० लायड था। तथा वहाँ पर 56 वीं नेटिव इन्फैन्टरी की सेना तैनात थी, इसके अतिरिक्त डोनाल्ड ग्रांट ज्वाइंट मजिस्ट्रेट था। (11) क्योंकि गुजरे वर्षों में दैवी विपदाओं के कारण सरकारी मालगुजारी का भुगतान करने में असमर्थ होने के कारण पुराने काश्तकारों और जमींदारों ने अपनी अपनी जमींदारियाँ छोड़ दीं और इस प्रकार 200 के आस पास जमींदारियाँ और जायदादें सरकारी नियंत्रण में लेली गईं। सन् 1833-34 के वर्षों में भी पूरे बुन्देलखंड में ही अकाल छाया रहा। इसके साथ ही अगले वर्षों में भी स्थिति सुधरी नहीं इसलिये सन् 1840 ई० में वसूली फिर कम हुई। (12) ऐसे समय में पटवारियों कानूनगो और तहसील ने जनता को लूटना खसोटना शुरु कर दिया। उपरोक्त स्थिति का प्रभाव स्थानीय उद्योग धंधों और जनता के दैनिक जीवन पर पड़ा। संक्षेप में 1857-85 में विद्रोह के समय समस्त जनपद की जनता में ब्रिटिश सरकार के प्रति असंतोष और द्वेष की भावना उत्पन्न हो रही थी।

## अध्याय II - क
## II-क :-

## हमीरपुर में विद्रोह के कारण

हमीरपुर में विद्रोह का कारण था जनता का लगातार आर्थिक शोषण तथा देशी रियासतों को ब्रिटिश सरकार द्वारा अधिकार में ले लेना था। स्थानीय जागीर शाद तथा जमींदार की जमीनें जब्त होना, कुछ ऐसे कार्य थे जिससे हमीरपुर जनपद में ब्रिटिश सरकार के प्रति असंतोष तो फैल ही रहा था, उस पर सरकार द्वारा अकाल के समय मालगुजारी की सख्ती से वसूली से समस्त जनपद का आर्थिक शोषण शुरु हो गया था। उपरोक्त कारण के अतिरिक्त सरकार ने स्थानीय जनता के सामाजिक और धार्मिक मामलों में भी हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया था। 1857 ई० के समय जनपद में क्यों विद्रोह हुआ या जनपद में विद्रोह के क्या कारण थे उपरोक्त घटनाओं पर नजर डालें तो जनपद में विद्रोह के निम्न कारण थे :-

**अराजकतापूर्ण स्थिति कुव्यवस्था और शोषण :-**

सन् 1803-1804 ई० कर्नल जान बेली की नियुक्ति बुन्देलखंड में गवर्नर जनरल के पोलिटिकल एजेन्ट के रुप में की गई, और शासन की सुविधा के लिये हमीरपुर जनपद को सात परगनों में बाँटा गया

जलालपुर, राठ, हमीरपुर, पानी, मौदहा, मरूसा सुमेरपुर और महोबा। (13) परन्तु हमीरपुर जनपद के इन परगनों की स्थिति पहले से ही बहुत खराब थी। ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक था कि अंग्रेज अधिकारी आते ही अमन-चैन अथवा शांति व्यवस्था के साथ जनपद की आर्थिक व्यवस्था और मुख्य रूप से मालगुजारी व्यवस्था को अमल में लाना तथा कंपनी सरकार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करना था। इसलिए जानबेली, वॉफ चाप, स्काट, वेयरिंग, वाल्पी, सीमसलिन और एच0 मूर ने बॉंदा और हमीरपुर के प्रदेशों में मालगुजारी बंदोबस्त की ओर सर्वाधिक ध्यान दिया। जिसके फल स्वरूप सन् 1804 से 1842 ई0 तक छह माल गुजारी व्यवस्थाएें या बंदोबस्त लागू किये गये। इन मालगुजारी बंदोबस्त का मुख्य उद्देश्य अधिक से अधिक वसूली करके अंग्रेजी सरकार के खजाने का भरना था। इसलिये अंग्रेज अधिकारियों में मालगुजारी बढ़ाना और उसकी वसूली करने की होड़ सी लग गयी। उदाहरण के लिये वाल्पी द्वारा 1815-1818 किये गये बंदोबस्त में राजस्व या मालगुजारी की रकम रू0 77,700.00 खजाने में जमा किये गये। (14) 1809 से 1838 ई तक के बीच का समय में अकालों, सूखा, अतिवर्षा और तूफानों का क्रम सा चलता रहा था। कांस के असाधारण रूप से फैल जाने से उपजाऊ भूमि नष्ट होती गई और उसे

जोता नहीं जा सका। महामारियाँ अलग जनपद में लड़ाई-झगड़े करती रहीं। फलस्वरूप पूरे हमीरपुर जनपद में "आर्थिकविस्थापन" की स्थिति उत्पन्न हो गयी। देहात उजड़ने लगे। मालगुजारी की किश्तों का भुगतान नहीं हो सका। (15) अगले दो तीन वर्षों में भी स्थिति वैसी ही खराब रही। सरकारी मालगुजारी का भुगतान करने में असमर्थ होने के कारण पुराने काश्तकारों और जमींदारों की आय समस्त जनपद की मालगुजारी की आय से दो तिहाई से भी अधिक थी। (16) सन् 1833-34 ई० की सालों में बुन्देलखंड में एक बार फिर अकाल पड़ गया। अगले वर्षों में भी स्थिति सुधरी नहीं। 1842 ई० में सी० ऐलन और एच० मूर ने बन्दोबस्त के समय मालगुजारी दरें घटा दीं, इस कारण परगना सुमेरपुर, मौदहा, पनवाड़ी और राठ की मालगुजारी की वसूली जो लगभग रू० 7,98,634.00 होनी थी घट कर रू० 6,78,972.00 रह गई। इसी प्रकार मूर ने परगना हमीरपुर, जलालपुर में भी रू० 1986% लगान की वसूली कम कर दी इसलिये कुल जमा मालगुजारी रू०3,41,396.00 होनी थी कम हो कर कुल रू० 3,11,795.00 रह गई। (17) मालगुजारी की लाग में छूटदेने से स्थिति में कोई अंतर नहीं आया। लोग अपनी जमीन जायदाद बेच कर या रहन रख कर

जनपद, छोड़ कर जाने लगे। इधर स्थानीय व्यापारी साहूकार भी कर्ज दे कर अधिक सूद लेकर मुनाफा कमाने लगे। जनपद एवं अनेक किसानों की जमीन उन्होंने अपने यहाँ गिरवी रख ली।(12) परन्तु सरकार ने खेती और किसानों की स्थिति में कोई सुधार नहीं किया। इस कारण स्थानीय लोगों का सरकार के प्रति विश्वास उठ गया। इधर आर्थिक शोषण की गति तेज होती गयी। जिस ने ब्रिटिश वर्ग और उनके पृष्ठ पोषक अंग्रेजी शासक के विरुद्ध भयंकर असंतोष और जन आक्रोश को जन्म दिया।

उजड़ते उद्योग धंधे :-

उपर्युक्त स्थिति का प्रभाव स्थानीय उद्योग धंधों पर भी पड़ा। बुन्देलखंड की जिसमें हमीरपुर जनपद भी शामिल है इसकी आर्थिक व्यवस्था मुख्य रुप से कृषि प्रधान थी। जब कृषि ही चौपट हो जाय तो उससे जुड़े व्यवसायों और उद्योग धंधों की स्थिति भी ख्राराब हो जायेगी। यह हमीरपुर जनपद में हुआ। अभाव गरीबी, बेकारी असुरक्षा और अराजकतापूर्ण स्थिति ने सभी उद्योग धंधों को लगभग समाप्त कर दिया। राठ, कस्बे कुछ कुष्ठा परिवार धोती, अंगौछा तथा लहँगा आदि बनाया करते थे परन्तु लगातार अकाल पड़ते रहने से कच्चा माल अर्थात कपास की खेती न होने से उन्हें सूत प्राप्त नहीं हो पाया जैसे तैसे कर्ज उधार ले कर माल तैयार किया परन्तु बाजार में ग्राहक न होने के कारण उनका माल नहीं बिक पाता

था क्योंकि माल खरीदने आस पास के गाँव के लोग ही आ पाते थे। बाँदा और हमीरपुर की सीमा पर बढ़िया किस्म की कपास की खेती होती थी। जिसकी खपत बुन्देलखंड के अतिरिक्त देश के अन्य बड़े औद्योगिक नगरों में भी होती थी। परन्तु 1829-30 ई0 में अमेरिकन रुई बाजार में आ जाने से स्थानीय कपास की माँग ही लगभग समाप्त हो गयी। कपास की खेती अब आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद नहीं रही और जितनी कृषि योग्य भूमि पर उसकी खेती की जाती थी उसका अनुपात कम हो गया। सन् 1842 ई0 बाँदा और हमीरपुर जनपद में कपास की खेती की जाने वाली (19) भूमि का अनुपात केवल 24-25 प्रतिशत रह गया। यह प्रतिशत बराबर गिरता ही गया। माँग के अभाव तथा भावों की गिरावट से जनपद में कपास की खेती लगभग समाप्त हो गयी और कपड़ा उद्योग बन्द सा हो गया। जुलाहों, कुष्टों, रंगरेजों और छीपियों में बेकारी घर कर गई और कपड़े का सामान्य व्यापारी और दलाल हाथ पर हाथ रख कर बैठ गये।

स्थानीय रियासतें और जागीरों का जब्त होना:-

हमीरपुर जनपद में विद्रोह का एक प्रमुख कारण स्थानीय राजाओं की रियासतें तथा जागीरदारों की जागीरें जबरदस्ती अंग्रेजी राज्य में शामिल कर ली गयीं। इसका प्रथम शिकार जैतपुर स्टेट हुयी। जैतपुर के राजा

केसर सिंह ने 1812 ई० में अंग्रेजों से सनद प्राप्त हुयी थी । केसर सिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र पारीक्षत जैतपुर का राजा बना 1849 ई० में पारीक्षत की मृत्यु के बाद जैतपुर को ब्रिटिश सरकार में मर्ज कर लिया गया। क्योंकि उसका कोई वारिस नहीं था। विधवा रानी ने सरकार के सामने अपना दावा प्रस्तुत किया परन्तु उसे खारिज कर दिया गया और उसको 1,200.00 रु० प्रति माह की पेंशन बाँध दी गयी। सरकार के इस कार्य से समस्त जैतपुर राज्य में असंतोष फैल गया तथा सरकार के प्रति बदले की भावना उत्पन्न हो गयी। स्वयं रानी सिपाही विद्रोह के समय विद्रोहियों का खुल कर साथ दिया था, और उसके सरदार देशपत ने अंत तक सरकार के प्रति विद्रोही बना रहा।(20) धसान नदी के वर्ग में एक जागीर थी अलीपुरा यह जागीर मुगल काल से छत्रसाल के वंशजों के हाथों में थी। इस रियासत के राजा दीवान प्रताप सिंह ने 1808 में अंग्रेजों से सनद प्राप्त की थी। बाद इसका वारिस बख्त सिंह था। परन्तु सरकार बख्तसिंह को वारिस न मान कर अलीपुरा को अपने अधिकार में कर लिया।(21) सरकार के इस कार्य से बख्तसिंह सरकार के प्रति बागी हो गया तथा 1859 ई० तक सरकार के प्रति छापामार लड़ाई लड़ता रहा।(22)

<u>इसाई धर्म का प्रचार</u> :-

इधर अंग्रेज सरकार और उसकी प्रेरणा से ईसाई मिशनरियों समस्त बुन्देलखंड और उसके साथ हमीरपुर जनपद में चर्च बनाना तथा अपने धर्म का प्रचार करना आरम्भ कर दिया। सन् 1856-57 ई० में तत्कालीन जनपद के कलैक्टर लायड ने ईसाई मिशनरियों को अनेक सुविधायें प्रदान कीं तथा राठ, कुलपहाड़, हमीरपुर, महोबा में ईसाई चर्च अथवा गिरजों की स्थापना हुयी। ईसाई धर्म के इस प्रसार और प्रचार से स्थानीय हिन्दू और मुस्लिम दोनो धर्मावलम्बी आशंकित हो उठे। ईसाई पादरियों को जो प्रोत्साहन और संरक्षण रकार से मिलने लगा था, वह उन्हें अच्छा न लगा। इधर सरकार हिन्दुओं के कुछ धार्मिक कार्य जैसे सती प्रथा, का बंद करना तथा विधवा विवाह को वैध ठहराना और ईसाई धर्म को सहज करने के लिये धर्म परिवर्तन के बाद धर्म बदलने वाले को अपनी पैतृक सम्पत्ति में भाग पा सकने का कानून बन जाने से जनसाधारण की परंपरागत धार्मिक और सामाजिक आस्थाओं को गहरी चोट लगी। इस पहलू को स्वीकार करते हुए प्रसिद्ध इतिहासकार आर० सी० मजूमदार का कथन तथ्य सम्मत है कि :-" निस्संदेह सरकार की यह धार्मिक नीति अन्य धर्मों के परम्पराओं और मान्यताओं में से खुला हस्तक्षेप था।(23)

इस कारण हमीरपुर जनपद में जून 1857 में विद्रोह के समय तक सरकार के प्रति विद्रोही बना रहा। (24) धसान नदी के तट में एक जागीर थी अलीपुरा यह जागीर मुगल काल से छत्रसाल के वंशजों के हाथों में थी। इस रियासत के राजा दीवान प्रताप सिंह ने सन् 1808 ई० में अंग्रेजों से सनद प्राप्त की थी। बाद इसका वारिस बरदन सिंह था। परन्तु सरकार बख्तसिंह को वारिस न मानकर अलीपुरा को अपने अधिकार में कर लिया। (25) सरकार के इस कार्य से बदरदन सिंह सरकार के प्रति बागी हो गया तथा सन् 1859 ई० तक सरकार के प्रति छापामार लड़ाई लड़ता रहा। (26)

<u>सिपाही विद्रोह</u>:-

जनपद हमीरपुर में उपर्युक्त कारणों से जब स्थिति विस्फोटक होती जा रही थी, तभी अंग्रेज अधिकारियों द्वारा भारतीय सैनिकों को सुअर और गाय की चर्बी लगे कारतूस दिये जाने की अफवाह तेज होने लगी तथा इसके साथ यह भी अफवाहें तेज होने लगी कि बाजार में जो आटा मिल रहा है उसमें हड्डियों का चूरा मिला हुआ है। परन्तु यह निराधार नहीं थी। जनवरी 1857 ई० में कलकत्ते की एक घटना से यह बात उजागर हुयी और सर्वप्रथम बैरकपुर और बहरामपुर के 34 वीं रेजीमेन्ट के सिपाही

इस अफवाह से भड़क उठे। चौंतीसवीं नेटिव इंफेन्ट्री का एक सिपाही मंगल पाँडे यह बात न सह सका और 29 मार्च 1857 को धर्म के नाम पर अंग्रेजों से मोर्चा लेने के लिये ललकारने लगा। इसी बीच उसने अपने अंग्रेज अधिकारी पर गोली चला दी। अंत में मंगल पांडे हिरासत में ले लिया गया और उसे फाँसी दे दी गयी। परन्तु मंगल पांडे की यह शहादत व्यर्थ नहीं गई। शीघ्र उत्तरी भारत की छावनियों में विद्रोह फैलने लगा और विद्रोह की यह ज्वाला शीघ्र ही बुन्देलखंड में प्रवेश कर गई तथा हमीरपुर जनपद में टी० के० लायड कलैक्टर था तथा 56 वीं नेटिव इंफेन्ट्री यहां तैनात थी। कलैक्टर लायड को जब सेना के विद्रोह का आभास हुआ तब उसने अनेक सुरक्षा के प्रबन्ध करना आरम्भ कर दिये परन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी थी और समस्त जनपद में विद्रोह की ज्वाला फैल गई जिसमें ब्रिटिश सरकार का अस्तित्व समाप्त होने लगा।

## अध्याय - II (ख)

### जनपद में सामाजिक, आर्थिक पिछड़ापन :-

अंग्रेजों के आने के पूर्व यद्यपि जनपद अनेक युद्ध अभियानों तथा युद्ध का केन्द्र बना रहा परन्तु सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र से जनपद की स्थिति काफी अच्छी थी। कारण की अधिकतर देशी नरेश आपस ही जमीन-जायदाद के कारण ही युद्ध करते थे स्थानीय जनता और उनके उद्योग धंधों से उन्हें कोई सम्बन्ध नहीं था, बस राजस्व की वसूली से उनका सम्बन्ध रहता था एवं जनता के धार्मिक अथवा सामाजिक संस्कारों में भी वह विघ्न नहीं डालते थे। परन्तु अंग्रेजों ने जनपद में आ कर जनपद के आर्थिक सामाजिक दोनों ही क्षेत्र में हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया था। इस कारण जनपद में आर्थिक और सामाजिक पिछड़ापन उत्पन्न हो गया। जनपद में अंग्रेजों के आने से पूर्व एक स्वच्छ समाज था समाज में वर्ग के हिसाब से सब अपना कार्य करते थे जहाँ पर हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी और मकतब थे जहाँ पर हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी, अरबी पढ़ाई जाती थी। कस्बों में सप्ताह में एक बार हाट लगा करता था जहाँ पर लोग अपनी आवश्यकतानुसार वस्तुऐं खरीदा करते थे। कारीगर, जुलाहे, कुष्टे, रंगरेज, कुम्हार, लुहार, बढ़ई आदि लोग अपनी वस्तुऐं बना कर

हाट या नगरों के बाजार में बेचा करते थे और सुखपूर्वक अपनी जीविका चला रहे । वह वर्ष भर का खाने का अनाज और अन्य वस्तुएँ एकत्रित कर लेते थे। क्योंकि बहुत सी वस्तुओं का विनिमय अनाज से ही हो जाता था, नकद रुपया नहीं देना पड़ता था। चैत के मास में जब फसल कटती थी सैकड़ों लोग फसल काटने जाते तथा कटाई के बदले उनको साल भर का अनाज मिल जाता था। इसके अतिरिक्त सहरिया जाति के लोग जंगल से शहद, लकड़ी, मोम, गोंद और जड़ी बूटियाँ ला कर नगर कस्बों में बेचा करते थे। परन्तु अंग्रेजों का जनपद में आगमन से जनपद के सामाजिक और आर्थिक ढाँचे पर व्यापक प्रभाव पड़ा। जनपद में अंग्रेजों के आते ही स्थानीय शासन तथा धार्मिक-सामाजिक संस्कारों में अपना हस्तक्षेप आरंभ कर दिया। एक तो उनके आते ही ईसाई पादरियों ने भी जनपद में जगह-जगह अपने मिशन स्थापित कर लिये साथ ही अपने धर्म और अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार भी आरंभ कर दिया। सन् 1858 ई0 के आसपास लगभग 125 मकतब और पाठशालायें थीं। इनमें सामान्य रूप से हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, अरबी, फारसी आदि पढ़ाई जाती थी। ईसाई पादरियों ने अब शिक्षा में भी दखल देना आरम्भ कर दिया। जबकि हिन्दू और मुस्लिम अंग्रेजी शिक्षा के विरुद्ध थे।(27) इधर सरकार ने सती प्रथा जो पहले से ही बंद करवा

दी थी साथ ही विधवा विवाह वैध घोषित कर दिया साथ ही धर्म परिवर्तन करने वाले व्यक्ति को अपनी पैतृक सम्पत्ति में भाग मिलने का कानून भी बना दिया। (28) उपरोक्त कारणों से जनपद का सामाजिक जीवन अस्त व्यस्त हो गया। जबरन अंग्रेजी पढ़ने और पढ़ाने तथा मकतब और पाठशालाओं को सरकारी उपेक्षा का शिकार होने से मकतब और पाठशाला उजड़ने लगे धर्म परिवर्तन करें ईसाई बन गए तथा उनको सरकारी नौकरी भी प्राप्त हो गई। इधर 1804 और 1817-18 ई0 के बीच बुन्देलखंड के सभी राजे रजवाड़े अंग्रेजी सरकार से समझौता और संधियाँ कर उनकी दासता के पाश में बंध चुके थे। (29) इन समझौतों और संधियों ने बुंदेलखंड के शासकों की सैन्य-शक्ति सीमित कर दी थी। वे केवल अब उतनी ही सेना रख सकते थे, जितनी उन को सामान्य आंतरिक व्यवस्था बनाये रखने और राजस्व की वसूली के लिये आवश्यक थी। फिर चूंकि अंग्रेजी सरकार ने उन्हें आंतरिक सुरक्षा करने और किसी भी आक्रमण से बचाने की गारंटी भी दे रखी थी। इसलिये उन्हें कोई अच्छी बड़ी स्थायी सेना रखने की आवश्यकता नहीं रह गई थी। अस्तु बुंदेलखंड के सभी राजे-रजवाड़ों ने अपने फालतू सैनिकों की छटनी कर दी जिसके फलस्वरूप सैकड़ों सैनिक बेकार हो गये। पेशेवर सैनिक होने के कारण उनके लिये

शांतिकाल के छोटे मोटे रोजगार धंधे अपनाना कठिन था। फिर बुन्देलखंड में पहले से ही कृषि योग्य भूमि की कमी और सिंचाई के साधनों के साथ उन्नीसवीं सदी के प्रथम अर्द्धांश में जो अकाल, सूखे, अतिवर्षा और कांस के प्रसार का एक अटूट क्रम सा चल पड़ा था, उस ने संपूर्ण प्रदेश और जनपद में आम भुखमरी और बेकारी की स्थिति उत्पन्न कर दी थी। इस स्थिति में निकले हुए बेकार सैनिक का खपना और भी कठिन हो गया था। फलस्वरूप उन में से बहुत से पिंडारी, डाकू और ठग हो गए। बुन्देलखंड में बांदा और हमीरपुर के अनेक प्रदेश इन की कार्यवाइयों के क्षेत्र और अड्डे बन गये। उन की कार्यवाइयों सामान्य जनजीवन और आवागमन भी असंभव और असुरक्षित कर दिया। बांदा के पास हमीरपुर में जलालपुर तथा फतेहपुर मार्ग तथा बांदा जनपद में चित्रकूट और उससे लगा भू भाग वहां होने वाली अत्यधिक लूटपाट और हत्या के कारण बुरी तरह बदनाम हो गये। इस कारण से अन्तर्प्रदेशीय और स्थानीय व्यापार चौपट हो गया। इस घोर अराजकता और अशांति से आतंकित हो कर जनपद से बहुत से लोग अपने घर बार छोड़ कर जीविका की तलाश में अन्यत्र चले गए। उपर्युक्त कारणों से बांदा और हमीरपुर जनपद की आबादी सन् 1853 ई० तक इतनी कम हो गयी कि वहां के अंग्रेज अधिकारियों तक को चिंता हो

उठी और अपनी जनगणना की रिपोर्ट में शासन का ध्यान इस ओर आकर्षित कराते हुए उन्होंने लिखा "बांदा और हमीरपुर जिलों को एक ओर विपत्ति से जूझना पड़ रहा है, वह है कृषि-योग्य भूमि की तुलना में आबादी की कमी; एवं खेत जोतने के लिये अधिक एकड़ों की नहीं अपितु जल चलाने के लिये सबल भुजाओं की आवश्यकता पड़ती है।(39)

उपर्युक्त कारणों से समस्त जनपद में सामाजिक और आर्थिक पिछड़ापन व्याप्त हो गया क्योंकि ब्रिटिश सरकार के अधिकारियों को किसी भी तरह से सरकारी खजाना भरने तथा सरकार की प्रशंसा प्राप्त करने की होड़ लगी हुयी थी। उन को इससे मतलब नहीं था कि स्थानीय समाज में क्या हो रहा है अथवा स्थानीय समाज उद्योग धंधों का सर्वनाश हो रहा है या स्थानीय जनता भुखमरी और बेकारी के कगार पर पहुंच चुका है।

## अध्याय II - ग

### आन्दोलन का स्वरूप:-

सन् 1857 ई० के भीषण विद्रोह अथवा क्रांति के दो ही कारण थे। ये कारण समझने के लिए भारत वर्ष के सौ वर्ष पूर्व की ऐतिहासिक घटनाओं का अवलोकन करने पर यह तथ्य सामने आते हैं कि :-

सन् 1857 ई० के विद्रोह में जिन भारतीय सैनिकों ने क्रांति की थी, उनके मुख से बार-बार यह शब्द ही सुनायी देते थे कि "हमें प्लासी का बदला लेना है। प्लासी का युद्ध सन् 1757 ई० में लड़ा गया था। उस युद्ध में विजयी हो कर अंग्रेजों ने भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना की थी। भारत की सिपाहियों के मुख से निकले हुए यह शब्द जाहिर करते हैं कि हिन्दुस्तानी सिपाहियों के अन्तःकरण में प्लासी के युद्ध की पराजय की आग धधक रही थी। एक सौ वर्ष तक लगातार दबी रहने के बाद भी, वह आग बुझ न सकी और नाना साहब और अजीमुल्लाह की ललकार पर उस आग की चिनगारियाँ पुनः प्रज्जवलित होने लगी।(31)

भारत में स्थान-स्थान पर इस प्रकार की ज्वाला दबी हुयी थी। अंग्रेजी राज्य की प्रति इस देश में क्षोभ और असंतोष के जो भाव पैदा हुये थे, उनकी वृद्धि प्लासी युद्ध से प्रारम्भ हुयी थी। क्लाईव के समय से

लेकर लार्ड डलहौजी के समय तक जिस प्रकार अंग्रेज अधिकारियों ने अपने काले कारनामों से भारतीय जनता के साथ के विश्वासघात किया था, राजाओं, नवाबों और जागीरदारों को मिटाकर अंग्रेजी साम्राज्य में वृद्धि की थी, उन राजाओं, नवाबों तथा जागीरदारों के मन भी सरकार के प्रति विद्रोह की भावना दबी थी।(32) भारतीय व्यवसाय और वाणिज्य को मिटाकर जिस प्रकार अंग्रेजों ने इस देश के करोड़ों मनुष्यों को खाने--पीने से भी मोहताज कर दिया था, उस कारण भी एक विद्रोह की ज्वाला इस देश के जन साधारण की बीच उत्पन्न हो गयी थी। जिस प्रकार अंग्रेजों ने इस देश की जागिदारों की जागिदारियां जब्त की थीं और उनके परिवार को मिटा कर अंग्रेजी राज्य के खजाने भरे गये थे, उनसे उत्पन्न होने वाली ज्वाला भी अभी तक बुझ न सकी थी और सुप्तावस्था में भारत के कोने-कोने में दबी पड़ी थी। भारत के नवाबों और नरेशों की रानियों और बेगमों को अपमानित करके बंदी बनाया था तथा बेईज्जत किया था, उन सब घटनाओं का इस विद्रोह से विशेष सम्बन्ध था।(33)

भारत के लाखों-करोड़ों किसानों के साथ जिस प्रकार का अंग्रेजों ने अत्याचार किये थे और उनको जिस प्रकार पैतृक जमीनों के अधिकारों से वंचित किया था, उन लाखों-करोड़ों किसानों के दिलों में भी अंग्रेजों के

विरुद्ध विद्रोह की ज्वाला भड़क रही थी।(34) इन्हीं दिनों में एक घटना और हुयी। जिन दिनों में क्रांति की एक तेज हवा प्रारम्भ हो गयी थी. और छोटे से लेकर बड़े तक सब के होठों पर यह बात थी कि देश में जो क्रांति होने जा रही है उसमें रूस भारत के क्रांतिकारियों की सहायता करेगा। इस प्रकार की एक दूसरी घटना की जिन दिनों 1857 में भारत में ब्रिटिश सरकार के प्रति विद्रोह की तैयारियाँ हो रही थी उन्हीं दिनों इटली में भी मैटी बाल्डी क्रांतिकारियों का संचालन कर रहा था। उसने भी भारतीय क्रांतिकारियों को सहायता का वचन दिया ।(35)

इस बीच पेशवा नाना साहब का एलची अजीमुल्लाह जो कि नाना साहब की अपील के कागजात ले कर इंगलैंड गया हुआ था वह अपील नामंजूर हो गयी अजीमुल्लाह इसके काफी समय तक वहीं ठहरा वहां पर अनेक क्रांतिकारियों के संपर्क में आया। बाद वह वहां से रूस चला गया। वहाँ वह इस लिये गया था कि वह एशिया के अनेक देशों में अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध करने के लिये तैयार कर सके।(36)

**नाना साहब द्वारा क्रांति की योजना तैयार करना :-**

अजीमुल्लाह के इंगलैंड के वापिस आने पर क्रांति का सूत्रपात हुआ और योजना बनाई जाने लगी। योजना के तैयार होते ही इस योजना का

प्रचार करने और संगठन का कार्य आरम्भ करने के लिये वह निकल पड़े साथ में अजीमुल्लाह भी था। सर्व प्रथम उन्होंने राजाओं और नवाबों के पास इस योजना के पत्र भेजना आरम्भ कर दिये। इसके साथ हरकारे लोग इस क्रांति की योजना का प्रचार करने लगे।

योजना के तहत क्रांति की तारीख 31 मई 1857 ई॰ रखी गई क्रांति का सम्पर्क और पहचान चिन्ह कमल का फूल और चपाती रखा गया।(37) इस प्रकार 31 मई 1857 को इतवार (रविवार) का दिन पड़ता था। इस निर्धारित दिन-तारीख की सूचना प्रत्येक केन्द्र तथा प्रमुख व्यक्तियों को बता दी गयी। जो सिपाही पल्टने विप्लव के लिये तैयार थी, उनके प्रत्येक पल्टन के तीन अफसरों को उस तारीख की सूचना थी। बाकी लोगों को अथवा सैनिकों को बतलाया गया था कि वह अपने नेताओं और उच्च अधिकारियों से सम्पर्क करें और उनकी आज्ञाओं का पालन करें।(38) बुन्देलखंड के उस समय के सरकारी अभिलेखों के अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि बुन्देलखंड के अनेक गाँव, नगरों, कस्बों और फौजी छावनियों में क्रांति के निशान स्वरूप चपातियाँ बाँटी गई थीं।(39) इस बीच झाँसी, बाँदा हमीरपुर जनपद के बाजार में जो आटा मिल रहा है उसमें हड्डियों का चूरा मिला हुआ है यह अफवाह भी फैल गई(40)

समय से पूर्व क्रांति का होना :--

सम्पूर्ण देश में क्रांति के लिये जो तिथि जो समय नियत किया गया था, उससे पहले ही क्रांति का श्री गणेश हो गया। सर्व प्रथम यह आग बैरक पुर छावनी में भड़की शुरूआत की। परन्तु मंगल पांडे नामक एक सिपाही ने इसकी शुरूआत की। परन्तु मंगल पांडे को फांसी देदी गई तथा बैरकपुर छावनी स्थित 34वीं नेटिव इंफेन्ट्री को तुरंत भंग कर दिया गया। (41) परन्तु मंगल पांडे की शहादत व्यर्थ नहीं गई। बैरकपुर से 1857 ई० के विप्लव की जो चिन्गारी उड़ी उससे उत्तरी भारत में शीघ्र ही विशाल लपटों का रुप धारण कर लिया जससे अंग्रेजी साम्राज्य झुलस कर आखिरी सांसे गिनने लगा। मार्च 1857 ई० के अंत से जून 1857 के मध्य तक के ढाई माह में अम्बाला, मेरठ, दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, अलीगढ़, इलाहाबाद और अवध तथा उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रांत (आधुनिक उत्तर प्रदेश) के इटावा, मैनपुरी, नसीराबाद, रुड़की, मथुरा, बरेली शाहजहांपुर, फैजाबाद, फतेहपुर, फतेहगढ़ आदि सभी जिले क्रांति की इस आग के लपेट में आ गये। (42) परन्तु बुंदेलखंड की सक्रिय आहुति के बिना यह क्रांति यज्ञ भला कैसे पूरा हो सकता था। शीघ्र ही यह आग सम्पूर्ण बुन्देलखंड में भी फैल गई पहले झांसी फिर हमीरपुर और बांदा में

भयंकर क्रांति के ज्वाला धधकने लगी। झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई और उनके 15 सौ विलायती (पठान), बाँदा के नवाब अली बहादुर सानी (द्वितीय), बानपुर के राजा मर्दन सिंह और शाहगढ़ के राजा बखत अली और इनके साथ सैकड़ों सैनिक तथा हजारों नर-नारी जीवन का मोह त्याग कर इस क्रांति यज्ञ में कूद पड़े और जाते-जाते बुंदेलखंड के इतिहास में अमिट स्वर्ण पृष्ठ जोड़ गए। अब तक समस्त बुंदेलखंड में विद्रोह का समाचार फैल चुका था, तथा बुंदेलखण्ड की समस्त जनता धीरे-धीरे एक सूत्र में बंधने लगी। गाँव- गाँव में यह बात फैल गई कि कुछ न कुछ होने वाला है। इस जनपद के पोसी जिले झाँसी में सर्व प्रथम विद्रोह 2 जून 1857 को प्रारम्भ हो गया तथा 8 जून 1857 तक झाँसी में सभी फिरंगियों को कत्ल कर डाला। (43)

इसकी खबर बिजली की तरह समस्त हमीरपुर जनपद में फैल गई और जनपद के समस्त नगरों, कस्बों और परगनों में हलचल प्रारंभ हो गयी। लोग हथियार असलहे इकट्ठे करने लगे। गुप्त सभाऐं होने लगीं। लोग स्थान स्थान पर पड़ोसी जिले झाँसी में विद्रोह की बातें करने लगे। लोग उत्तेजित हो कर झाँसी कानपुर और इलाहाबाद की घटनाओं और खबरों और अफवाहों पर खुले आम प्रतिक्रिया व्यक्त कर अंग्रेजों को कोसने

लगे। तभी जनपद में इलाहाबाद और कानपुर से मुक्त हुये कैदी और भंग हुयी हिन्दुस्तानी सेनाओं के बागी सिपाही कलेक्टर लायड और बांदा के कलेक्टर मैन द्वारा रोके जाने के बावजूद सभी प्रयत्नों को विफल कर के दोनों जनपदों (हमीरपुर, बांदा) के कस्बों और परगनों में प्रवेश कर गये। (44) इस प्रकार समस्त जनपद अंग्रेजों के विरुद्ध क्रोध और नफरत के भाव जनता में उत्पन्न होने लगे और अंग्रेजों के विरुद्ध एक जन आन्दोलन प्रारम्भ हो गया जिसमें स्थानीय जनता जागीरदार जमींदार कृषक तथा विद्रोही सैनिक थे। बांदा के कलैक्टर मैन ने स्वयं अपनी रिपोर्ट में लिखा था कि ऐसा लगता कि स्थानीय लोग हमारे विरुद्ध आन्दोलन के लिये तैयार बैठे हैं। (45) जब चारों ओर स्वतंन्त्रता की ज्वाला धधक रही थी तब हमीरपुर जनपद में अंग्रेजों के विरुद्ध यह विद्रोह एक जन आन्दोलन का स्वरुप ले चुका था। जनपद के प्रत्येक व्यक्ति के जुबान पर एक बात थी कि अब "फिरंगी" भारत से निकाले जायेंगे और भारत में सुराज (स्वराज) आ जायेगा। हमीरपुर जनपद का कलैक्टर टी0के0लायड के मन भय और आशंका के बादल मंडरा रहे थे। जनपद में तैनात 56 वीं नैटिव इंफैन्टरी के सैनिकें पर से उसका विश्वास उठता जा रहा था। क्यों कि रातों को लश्कर छावनियों से अनेक सरकार विरोधी नारों की आवाज आती

थी जैसे- "फिरंगियों को मार डालो" नाना साहब जिन्दाबाद आदि। (46) कलैक्टर लायड के अतिरिक्त जनपद में उस समय ज्वाइंट मजिस्ट्रेट डोनाल्ड ग्रांट, रिवन्यू लिपिक कस्टम अधिकारी तथा दो अन्य ब्रिटिश अधिकारी मुरें और क्राफर्ड और उनके परिवार के सदस्य भी थे।(47) यह सभी आस-पास के जनपदों से और विशेष रूप से झाँसी जिले के बलद्रोह के समाचार से अत्यंत भयभीत थे। उधर पड़ोसी जनपद बांदा तो विद्रोही सैनिकों का मुख्य केन्द्र बन गया था, वहाँ भी अंग्रेज विरोधी वातावरण एकाएक बहुत ही उग्र रूप धारण कर चुका था। नगर दीवारों पर ईसाईयों को मार डालने और अंग्रेजी शासन को खत्म कर देने के नारे लिखे जाने लगे और पोस्टर चिपकाये जाने लगे। (48) इधर हमीरपुर जनपद और बांदा से लगे फतेहपुर जनपद की स्थिति बहुत ही नाजुक हो गयी और 8 जून 1857 ई० को अंग्रेज अधिकारियों को वहाँ से भागना पड़ा।(49)

## अध्याय – II / ब

### जागीरदारों व उबारीदारों की जागीरें जब्त करना :–

कंपनी सरकार की लड़ाइयों और राज्य करों तथा ब्रिटिश गवर्नर लार्ड डलहौजी की राज्य हड़पने की नाराज्य हड़पने की नीति ने धीरे-धीरे समस्त बुन्देलखंड पर अपना अधिकार कर लिया था। बुन्देलखंड के इस भाग (बांदा, हमीरपुर जनपद) में अंग्रेजों को लाने का श्रेय हिम्मत बहादुर गोसाँई (1753-1805) को जाता है। हिम्मत बहादुर गोसांई ने नवाब बांदा शमशेर बहादुर का साथ छोड़ कर अंग्रेजों की शरण में चले जाना तथा सेनापति कर्नल मीसलबैक के माध्यम से जनरल वेलेस्ली से सम्पर्क स्थापित करना, बाद में अंग्रेजों और हिम्मत बहादुर के बीच 4 सितम्बर 1803 ई० में एक संधि होना मुख्य घटना क्रम है।(58) हिम्मत बहादुर और अंग्रेजों के मध्य 4 सितंबर 1803 ई० की संधि होते ही कर्नल पावेल के सेनापतित्व में एक सेना 6 सितंबर 1803 ई० को राजापुर घाट से यमुनापार कर बुंदेलखंड में प्रवेश कर गई। इस सेना में तोपखाना सहित पैदल सेना की पाँच बटालियन और घुड़सवार सेना की पूरी रेजीमेंट थी। हिम्मत बहादुर इस समय शमशेर बहादुर के साथ कालिंजर का घेरा डाले था। उसे जैसे ही अंग्रेजी सेना की बुंदेलखंड में प्रवेश की सूचना मिली, वैसे

ही वह अम्मार बहादुर का साथ छोड़ कर अपनी सेना सहित पावेल से जा मिला। इस प्रकार अंग्रेजो और हिम्मत बहादुर की संयुक्त सेना ने बुंदेलखंड पर आतंक फैलाना तथा अधिकार करनाआरम्भ कर दिया। (51)

बाद में बेसिन की पूरक संधि ने अंग्रेजों द्वारा अधिकृत बुंदेलखंड के प्रदेशों पर ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को मान्यता दे दी। अब कैप्टन बेली को बुंदेलखंड में अंग्रेज गवर्नर जनरल का एजेंट नियुक्त किया गया। (52) इस प्रकार हिम्मत बहादुर गोसाई और अंग्रेजों की संधि दोनों पक्षों के स्वार्थ सिद्ध हुए। हिम्मत बहादुर को अंग्रेजी संरक्षण प्राप्त होने के साथ-साथ 20 लाख सालाना रुपये के मूल्य की जायदाद मिल गई, जबकि अंग्रेजों का बुंदेलखंड में मराठों के विरूद्ध शक्तिशाली और अनुभवी सहायक मिल गया। इधर हिम्मत बहादुर गोसाई ने अंग्रेजों से संधि करके तथा सनद प्राप्त करके बुंदेलखंड के अन्य राजाओं के लिये एक नया रास्ता खोल दिया जिससे अन्य स्थानीय अथवा बुंदेलखंड के राजाओं में अंग्रेजों से सनद प्राप्त करने और संधि करने की होड़ सी लग गयी। यह सौदा नरेशों को फायदेमंद लगा कि उनका राज्य अंग्रेजों के आधीन रहे तथा उनको तथा उनके अधिकारियों को बदले में "फ्री रेंट" अथवा फ्री रिवेन्यू के क्षेत्र प्राप्त हुए। फ्री रेंट के अर्थ हैं राजस्व की छूट। (53)

जागीरदारों को सनद में प्राप्त क्षेत्रों में - हमीरपुर में सनद के तहत निम्नवत रियासतें आ गई :-

चरखारी, सरीला, बेरी, अलीपुरा, जैतपुर तथा जागीरों में :-

रामरी, सरीला खुर्द एवं सरीला बुजुर्ग इस प्रकार इन जागीरदारों को अंग्रेजों का संरक्षण प्राप्त हो गया। (54)

<u>जनपद की सनद प्राप्त जागीरें:-</u>

हमीरपुर जनपद "सनद" प्राप्त मुख्य जागीरें निम्नवत थीं :-

<u>जैतपुर</u>:- जैतपुर की रियासतत अथवा जागीर छत्रसाल के पुत्र जगतराज के वंशज की थी। जगत राज की मृत्यु 1758 ई0 में हुयी थी। उनके तीन पुत्र थे वीर सिंह (मृत्यु 1793) कीरतसिंह (दिवंगत) और पहाड़सिंह (1758-65) ई0 । वीरसिंह के पुत्र खुमानसिंह को चरखारी की जागीर मिली, गुमान सिंह को (बांदा-अजयगढ़) यह कीरतसिंह का पुत्र था, और पहाड़सिंह को जैतपुर की जागीर मिली।(55)

महाराजा छत्रसाल
(1649-1731 ई०)

जगत राज
(1731- 58 ई)

वीरसिंह (मृत्यु 1793 ई०)
(बिजावर)

कीरत सिंह
(दिवंगत)

पहाड़सिंह
(1758-65 ई)

खुमान सिंह
(चरखारी)

गुमानसिंह
(बाँदा, अजयगढ़)
(मृत्यु 1783)

गजसिंह
(जैतपुर)

केसरसिंह
(मृत्यु 1842)

परीक्षत
(मृत्यु 1849)

जैतपुर के जागीरदारों का शिजरा (वंश वृक्ष)

पहाड़सिंह जगत राज (1731-58) ई० का सबसे छोटा पुत्र था। जागीर के बटवारे में उसे जैतपुर की जागीर प्राप्त हुयी थी। उसकी मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र गजसिंह जैतपुर का राजा बना। बाँदा के नवाब अली बहादुर ने 1795 ई० में एक युद्ध में गजसिंह को पराजित करके जैतपुर पर अधिकार कर लिया था। जब अली बहादुर रीवाँ और कालिंजर में युद्ध कर रहा था। उस समय गजसिंह जैतपुर पर पुनः अधिकार कर लिया। गजसिंह की मृत्यु के पश्चात केसर सिंह उसका पुत्र जैतपुर का राजा हुआ।(56) केसर सिंह अंग्रेजों के मध्य एक संधि 4 जुलाई 1805 में हुयी जिसमें किले का कब्जा अंग्रेजो ने लिया था। इसके एक सनद के तहत 52 गाँव तथा पनवाड़ी सहित अन्य गाँव की मालगुजारी की वसूली भी प्राप्त हुआ।(56) परन्तु राजा केसर सिंह इससे संतुष्ट नहीं हुआ । अतः उसकी अर्जी पर पुनः विचार कर 1812 ई० में उसका एक इकरारनामा अंग्रेजो से हुआ, तथा पुनः सनद प्राप्त हुई जिसमें परगना पवई पन्ना की हीरो के खान वाला क्षेत्र उसे प्राप्त हुआ। (58) केसर सिंह की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र पारीक्षत जैतपुर का राजा बना। 1842 ई० में ब्रिटिश सेना ने ब्रिगेडियर एम० शा के नेतृत्व में आकर जैतपुर के किले तथा नगर पर अधिकार कर लिया। इधर दीवान खेत

सिहको अपना वारिस बनाया वह छत्रसाल का वंशज था। पारीक्षत की मृत्यु 1849 ई० में हुयी। क्योंकि उसके कोई पुत्र नहीं था इस कारण जैतपुर जागीर जब्त करके अपने अधिकार में ले ली तथा पारीक्षत की विधवा रानी को 1200\-रु० प्रति माह पेंशन बाँध दी। (59)

<u>चरखारी</u> :-

छत्रसाल के पुत्र जगत राज कीरत सिंह की मृत्यु कम आयु में हो गयी थी। उसकी मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र खुमान सिंह को चरखारी की जागीर प्राप्त हुयी थी। खुमान सिंह एक युद्ध में मौदहा के समीप नोनि अर्जुन सिंह द्वारा मारा गया।(60) उसकी मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र विक्रमजीत विजय बहादुर चरखारी का राजा बना। इसी ने सन् 1804 ई० में ब्रिटिश सरकार से सनद प्राप्त की थी।(61)

<u>सरीला</u> :-

जैतपुर के राजा गज सिंह ने अपने छोटे भाई अमान सिंह को सरीला की जागीर दी थी। अमान सिंह के पश्चात उसका द्वितीय पुत्र तेज सिंह सरीला का राजा बना। उसके राज्य काल में बांदा के नवाब अली बहादुर ने सरीला पर अधिकार कर लिया। बाद में हिम्मत बहादुर के कहने पर सरीला के अतिरिक्त कुछ अन्य गाँव भी तेज सिं को वापिस कर दिये।(62) जब बुंदेलखंड पर अंग्रेजों को अधिकार हो गया था। उस

समय सरीला की वार्षिक आय रु0 9000.00 थी। कम्पनी सरकार ने सनद दे कर रु0 1000.00 अतिरिक्त सहायता के रुप में देना स्वीकार कर लिया। बाँदा के नवाब शमशेर बहादुर की पराजय के पश्चात जब कम्पनी सरकार ने उसके संपूर्ण राज्य पर अधिकार कर लिया, उस समय तेजसिंह ने सरकार से अपनी जागीर वापिस माँगी। अंग्रेज सरकार ने उस समय पुनः सनद दे दी, उसके तहत सरीला सहित 11 गाँव तेज सिंह को प्राप्त हुऐ परन्तु रु0 1000.00 की सहायता बंद कर दी, क्यों कि सरीला राज्य की आय रु0 दो लाख छत्तीस हजार रुपया सालाना हो गयी थी। (63)

बेरी :-

बेरी जागीर छत्रसाल के पुत्र जगत राज के पुत्री के दहेज में प्राप्त हुयी थी। यह जागी बेतवा नदी के किनारे जलालपुर, कस्बे के पास थी। इसकी सनद दीवान जगत प्रसाद ने 1816 ई0 में प्राप्त की थी। (64)

अलीपुरा :-

बुंदेलखंड में अन्य राज्यों में समथर और अदौरा बावनी रियासत को छोड़ कर शेष राज्य अथवा जागीरें राजा छत्रसाल के नातेदारों तथा सामन्तों के अधिकार में थीं। कम्पनी सरकार ने इन राज्यों के जागीरदारों

को सनदें दे कर उनको खालसा संपत्ति से अलग से अलग कर दिया था। इनमें मुख्य जागीरें थीं मैहर, गौरिहार, बरौंध अलीपुरा, बीहट, नैगवा, रिवई, कोठी, सोहवाल और उचेहरा।(65) अलीपुरा उपरोक्त रियासतों में से ही थी। यह रियासत धसान नदी के पूर्व में स्थित थी। दीवान प्रताप सिंह ने सन् 1808 ई० में इस जागीर की सनद प्राप्त की थी।(66) प्रताप सिंह की मृत्यु के बाद इस जागीर का उत्तराधिकारी बख्तसिंह था परन्तु यह जागीर सरकार ने जब्त कर ली बख्त सिंह ने सन् 1859 ई० तक अपनी जागीर प्राप्त करने के लिये ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह करता रहा।(67)

<u>रामरी</u> :-

हमीरपुर जनपद की यह एक छोटी सी जागीर थी। बाद में इस जागीर के जागीरदारने ही सर्वप्रथम 1857 ई० के सिपाही विद्रोह में विद्रोही सैनिकों का खुल कर समर्थन किया था। 12 जून 1857 ई० को विद्रोही सैनिकों ने रामरी गाँव के जागीरदार की हवेली पर अपनी गुप्त सभा एवं वार्तालाप का मुख्य केन्द्र बना लिया था। चरखारी पर आक्रमण करने की योजना रामरी गाँव के जागीरदार की हवेली पर बनायी गई थी। बाद में इसके साथ सरीला खुर्द तथा सरीला बुजुर्ग के जागीरदार भी हो गये थे। इन तीनों जागीरदारों की जागीरें बाद कम्पनी सरकार ने जब्त कर ली थी।(68)

## अध्याय - II / ड.

### बख्तसिंह को अलीपुरा जागीर न देना :-

पूर्व पृष्ठों में लिखा जा चुका है कि बुंदेलखंड के अन्य राज्यों में समथर और कदौरा बावनी को छोड़ शेष राज्य महाराजा छत्रसाल के नातेदारों और सामन्तों के अधिकार में आ गये थे। बाद में अंग्रेजों ने इन राज्यों के जागीरदारों को सनदें देकर छत्रसाल संतानों के अधिकारों से मुक्त कर दिया था। इनमें छतरपुर, कालिंजर, मैहर, गौरिहार, ददरौधा, अलीपुरा, बीहट, नैगवां, रिवई, कोठी, सोहावल और उचेहरा के राज्य आते थे। (69) इसमें अलीपुरा के जागीरदार दीवान प्रताप सिंह को 1808 ई0 में कम्पनी सरकार से सनद प्राप्त हुयी थी। (70) यह जागीर छत्रसाल के पुत्र हृदय शाह के वंशजों की थी।

**अलीपुरा के जागीरदारों का शिजरा (वंश वृक्ष) :- (71)**

छत्रसाल
|
हृदय शाह
|
दीवान अचल सिंह
|
दीवान प्रताप सिंह
(सनद प्राप्त 1808 ई0)

| | | | |
|---|---|---|---|
| किशोर सिंह | जवाहर सिंह | तिलोक सिंह | पंचम सिंह |

पंचम सिंह
|
राव दौलत सिंह
|
राव हिन्दूपत
|
राव छत्रपति सिंह
|
परबल सिंह

अलीपुरा जागीर धसान नदी के पूर्व में तथा नौगाँव छावनी (म०प्र०) से पश्चिम की ओर जाने वाली सड़क पर 10 वें मील पर स्थित है। इसके चारो ओर क्रमशः हमीरपुर जनपद, जैतपुर जागीर तथा पश्चिम में क्रमशः मऊरानीपुर तथा गरौली रियासत है। 1871 ई० की जनगणना के अनुसार इसकी कुल आबादी 14891 थी तथा इसका क्षेत्रफल लगभग 69 वर्ग मील था। (72) यह जागीर परमार ठाकुरों की थी तथा इसे छत्रसाल के बड़े पुत्र हृदय शाह ने दीवान अचल सिंह को प्रदान की थी अचल सिंह की मृत्यु के पश्चात उसका एकलौता पुत्र दीवान प्रताप सिंह इस जागीर का वारिस बना, जो बड़ा वीर और बहादुर था। बांदा के नवाब अली बहादुर के बुन्देलखंड विजय के अभियान में अली बहादुर ने इस जागीर के ऊपर आक्रमण नहीं किया दीवान प्रताप सिंह से इसके बदले कुछ मांग भी नहीं की। (73) बाद में सन 1808 ई० को दीवान प्रताप सिंह ने भी सरकार से सनद प्राप्त करली (74) दीवान प्रताप सिंह की मृत्यु के बाद उनके चार पुत्र उत्तराधिकारी की लाइन में लगे थे, वे थे क्रमशः राव पंचम सिंह, त्रिलोक सिंह, दीवान जवाहर सिंह तथा राव किशोर सिंह। परन्तु अलीपुरा रियासत का वारिस दीवान प्रताप सिंह का बड़ा पुत्र राव

पंचम सिंह हुआ और बाकी तीन पुत्र को कुछ गाँव जागीर में दिये गये। 18 अक्टूबर 1839 ई0 को उसकी मृत्यु हो गयी। पंचम सिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र दौलत सिंह अलीपुर जागी का वारिस हुआ। परन्तु वह अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह पाया तथा एक वर्ष तीन माह में ही उसकी मृत्यु हो गयी। (75) दौलत सिंह की मृत्यु के बाद हिन्दूपत राज्य का वारिस बना। हिन्दूपत के राजा बनते ही राज्य में उत्तराधिकारी का विवाद पनपने लगा। दीवान प्रताप सिंह के पुत्र राव किशोर सिंह के वंशजों ने यह विवाद उठाया कि हम लोगों को जागीर में से कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ। परन्तु हिन्दूपत इससे घबराया नहीं उसने इस विवाद को सरकार के पोलिटिकल एजेन्ट के सामने रखा। रावकिशोर सिंह के वंशज लाल सिंह गुलाब सिंह, फतेहसिंह तथा महीपत सिंह ने भी अपना विवाद अथवा दावा उसके सम्मुख रखा। ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि ने कुछ गाँव की जागीर और बड़ा कर लगभग रु0 4218.88 की नगदी (अशर्फी या सोने की मुहर) चारों दावेदार लाल सिंह, गुलाब सिंह, तथा फतेह सिंह और महीपत सिंह में बराबर से बाँट दिये। (76) परन्तु लाल सिंह इससे संतुष्ट नहीं हुआ और जागीर पर अपना अधिकार प्राप्त करने के लिये संघर्ष करने लगा। यद्यपि लाल सिंह राज्य का असली वारिस नहीं

थी। परन्तु उसका स्वभाव विद्रोही था। उसके अन्य भाई अपने-अपने भाग से संतुष्ट हो गये परन्तु वह संतुष्ट नहीं हुआ।(77) बाद में बखत सिंह जैतपुर के दीवान देशपत तथा एक अन्य विद्रोही उमराव खंगार के साथ, क्रांतिकारियों के दल में शामिल हो कर ब्रिटिश सरकार विरोधी कार्यवाही करने लगा हमीरपुर जनपद में 1859 ई० की क्रांतिकारी कार्यवाहियों में बखत सिंह ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। हमीरपुर जनपद तथा झाँसी जनपद में लूटमार करने लगा। बखत सिंह ने ब्रिटिश सरकार को पना दुश्मन माना तथा स्वंय को अलीपुरा का वारिस समझा।(78)

## Foot Notes

1. सर देसाई भाग-3 पेज - 69,73,78,79,152
2. एइकनोमिक्स हिस्ट्री आफ इंण्डिया-रोमेश्वर दत्त भाग-1 पेज - 8-11
3. बोर्ड आफ रिवन्यू (फोर्ट विलियम) जनवरी 1805 कन्सल्टेशन न0 18
4. ------------------ तदैव------------------
5. ट्रीटी ऐंगेजमेंट एण्ड सनद एचीसन भा-3 पेज 312-13,330,332,390-391
6. एचीसन भाग-3 पेज 175,हमीरपुर कलेक्टेट म्यूटनी रिकार्ड फाईल न0 13 पेज 125
7. सदर बोर्ड रिवन्यू (नार्थ वेस्ट प्रोविन्स) पेज 28 जनवरी 1845 कन्सलटेशन न0 21
8. ------------------ तदैव------------------
9. ------------------ तदैव------------------
10. नैरेटिव इवेन्ट्स हमीरपुर डिस्ट्रिक्ट पेज 2
11. ------------------ तदैव------------------
12. बुन्देलखण्ड गजेटियर- पेज 124
13. सदर बोर्ड रिवन्यू (नार्थ वेस्ट प्रोविन्स) फरवरी 1831 ई0 कन्सलटेशन न0 21
14. ------------------ तदैव------------------
15. बांदा गजेटियर पेज 63
16. बुन्देलखण्ड गजेटियर पेज 124
17. सदर बोर्ड रिवन्यू नार्थ वेस्ट प्रोविन्स 20 फरवरी 1845 कन्सलटेशन न0 21
18. बुन्देलखण्ड गजेटियर पेज 124
19. बांदा गजेटियर इलाहाबाद 1909 पेज 49
20. नैरेटिव इवेंट्स इन हमीरपुर डिस्ट्रिक्ट पेज 8
21. दि ट्रीटी इंगेजमेंट एण्ड सनद एचीसन भाग-3 पेज 390-91
22. नैरेटिव इवेन्ट्स इन हमीरपुर डिस्ट्रिक्ट पेज 5
23. दि सिपाय म्यूटिनी एंड रिवोल्ट आफ 1857 आर0 सी0 मजूमदार पेज 172
24. नैरेटिव इवेन्ट्स एण्ड सनद एचीसन पेज 5

25. 1857 एस० एन० सेन पेज 41-44
26. नैरेटिव इवेन्ट्स एण्ड सनद एचीसन हमीरपुर जनपद पेज- 2
27. असबाबे सरकशी-ए-हिन्दुस्तान- सर सैय्यद अहमद खां पेज 160
28. लाईफ आफ मारकोस, डलहौजी भाग-2 पेज 364, ली वारनर
29. एचीसन भाग-5 संकलित पेज 47-220
30. पॉलिटिक्स इन ....गी पेपर्स इन द सागर रिसीप्टस एंड इश्यू आफ दि मिस्लेनियस सेक्शन आफ दि फारेन डिपार्टमेंट पेज 220§21 डा० हीरा लाल गुप्ता का शोध पत्र
31. नाना साहेब पेशवा- केशव कुमार ठाकुर पेज 44-45
32.---------- तदैव---------- पेज 45-46
33.---------- तदैव---------- पेज46, 47, 48
34.---------- तदैव----------
35.---------- तदैव----------
36.---------- तदैव----------
37. हिस्ट्री आफ दि इंडियन म्यूटिनी-के० एण्ड मैलसन भाग-5 पेज 281
38.---------- तदैव----------
39. नैरेटिव इवेंट्स एचीसन झांसी डिवीजन पेज 2
40. नैरेटिव इवेंट्स एचीसन बांदा डिवीजन भाग-1 पेज 3
41. दि सिपाय म्यूटिनी एंड रिवोल्ट आफ 1857 आर० सी० मजूमदार पेज 44§47
42. 1857 एस० एन० सेन पेज 49-50
43. नैरेटिव इवेंट्स एचीसन झांसी डिवीजन पेज 1
44. नैरेटिव इवेंट्स एचीसन बांदा डिवीजन पेज 521
45. ---------- तदैव ----------
46. दी म्यूटिनी रिकार्ड हमीरपुर जनपद फाईल नं० XIII पेज 125
47. ---------- तदैव ----------
48. नैरेटिव इवेन्ट्स एचीसन बांदा जनपद पेज 522
49. ---------- तदैव ----------
50. दि ट्रीटी इंगेजमेंट एण्ड सनद एचीसन भाग--3 पेज 143-46
51. दि हिस्ट्री आफ बुन्देलखण्ड - कर्नल पाग्सन पेज 123-24
52. ---------- तदैव ---------- पेज126

53. सनद प्राप्त जागीर एचीसन भाग-3 पेज 174
54. ------------------ तदैव ------------------ पेज174
55. जैतपुर राजाओं का सिजरा-- पन्ना गजेटियर पेज 8--14
तवारीखें बुन्देलखण्ड- श्यामलाल देहलवी फारसी भाग-3 पेज 64
56. प्राचीन हिन्दी पत्र संग्रह -- डाकूमेंट्स नं0 51 पेज 84--85
57. प्राचीन हिन्दी पत्र संग्रह - डाकूमेंट्स नं0 52 पेज 85--86
58. सनद प्राप्त जागीर एचीसन भाग--3 पेज 174
59. प्री म्यूटिनी रिकार्डस फाइल नं0 XIII पेज 125
60. तवारीखे बुन्देलखण्ड-- मुंशी श्यामलाल देहलवी फारसी भाग--3
पेज 182
61. सनद प्राप्त जागीर एचीसन भाग--3 पेज 278
62. बुन्देलों का इतिहास खरे, श्रीवास्तव पेज 136
63. सनद प्राप्त जागीर एचीसन भाग--3 1887 ई0 पेज 312--13
64. सनद प्राप्त जागीर एचीसन भाग--3 1887 ई0 पेज 329--30
65. बुन्देलों का इतिहास, खरे, श्रीवास्तव पेज 145
66. सनद प्राप्त जागीर एचीसन भाग--3 पेज 331
67. प्री म्यूटिनी रिकार्डस जालौन कलैक्टेट फाईल नं0 52
68. प्री म्यूटिनी रिकार्डस फाईल XIII पेज नं0 125
69. दि ट्रीटी इंगेजमेंट एण्ड सनद एचीसन भाग-3 पेज
70. ------------------ तदैव------------------
71. तवारीखें बुन्देलखण्ड मुंशी श्यामलाल भाग-3 पेज 184
72. ------------------ तदैव------------------
73. ------------------ तदैव------------------
74. ------------------ तदैव------------------
75. तवारीखें बुन्देलखण्ड मुंशी श्यामलाल देहलवी भाग--3 पेज 185
76. ------------------ तदैव------------------
77. ------------------ तदैव------------------
78. नैरेटिव इवेंट्स एचीसन झाँसी डिवीजन पेज 18--19

## अध्याय – 3

### 1857 के विद्रोह में जनपद की गतिविधियाँ व ब्रिटिश दमनात्मक नीति:-

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासकों के अत्याचारों तथा कार्यकलापों का चरमोत्कर्ष लार्ड डलहौजी की नीतियों से स्पष्ट रुप से प्रकट हो गया था। ब्रिटिश शासकों का उद्देश्य था, भारत का सर्वांगीण शोषण। उनकी आर्थिक शोषण और अत्याचार की नीतियाँ भारतीय जनमानस से अधिक दिनों तक छिप नहीं सकी। लार्ड डलहौजी के चले जाने पर भारतीय जनता का रोष तथा असन्तोष अनेक क्षेत्रों में फूटने लगा। 1857 ई० में ब्रिटिश शासन की नीतियों के विरुद्ध विस्फोट की आग सेना से प्रारम्भ हुयी। जनवरी 1857 ई० में कलकत्ते पाँच मील उत्तर में दमदम की छावनी में एक निम्न जाति के खलासी और ब्राह्मण सैनिक की आपसी बातचीत और तानेबाजी से शुरु हुई और वहाँ से शीघ्र ही 15 मील दूर बैरकपुर और ब्रह्मपुर की छावनी तक जा पहुंची। (1) वहाँ की 34 वीं नेटिव इन्फैंट्री के हिन्दुस्तानी सिपाही इन अफवाहों से भड़क उठे। इन्होंने लुके-छिपे कुछ सरकारी इमारतों और यूरोपियन अधिकारियों के बंगलों में आग लगा दी। कमांडिंग आफीसर हियरसे ने डरा-धमका कर सैनिकों पर काबू पाना चाहा, पर आग सुलगती गई। इधर 34 वीं नेटिव इन्फेन्ट्री का

एक सिपाही मंगल पांडे यह तनाव बरदाश्त नहीं कर सका। वह 29 मार्च को उत्तेजना में बाहर निकल कर अपने साथियों को धर्म के नाम पर योरोपियन से मोर्चा लेने को ललकारने लगा। ब्रिटिश लेफ्टिनेंट बाग के बाहर आने पर मंगल पांडे ने उसे गोली मार दी, तभी योरोपियन सैनिकों ने उसे घेर लिया। बाद में उस पर मुकदमा चला और मृत्यु दंड दे कर फांसी दे दी गई। तथा 34 वीं नेटिव इन्फैंट्री भंग कर दी गई।(2) परन्तु मंगल पान्डे की शहादत बेकार नहीं गई। बैरकपुर से 1857 ई0 के विप्लव की जो अग्नि भड़की वह उत्तरी भारत में शीघ्र ही दावाग्नि का भयंकर रूप धारण कर लिया जिसमें अंग्रेजी साम्राज्य झुलस कर अंतिम सांसे गिनने लगा। मार्च 1857 के अन्त से जून 1857 ई0 के मध्य तक ढाई माह में उत्तरी भारत में अम्बाला, मेरठ, दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, अलीगढ़, इलाहाबाद और इटावा, मैनपुरी, रुड़की, मथुरा, बरेली, शाहजहांपुर, फैजाबाद, फतेहपुर, फतहगढ़ आदि सभी जिले लपेट में आ गये। (3) शीघ्र ही यह बगावत की आग स्थान-स्थान पर भड़कती हुयी यमुना पार कर के वीर बुन्देलों की वीर भूमि बुन्देलखंड में प्रवेश कर गई। बुन्देलखंड में यह ज्वाला सर्व प्रथम झाँसी नगर में भड़की तदउपरांत शनैः शनैः समस्त झाँसी मंडल में फैल गई। मंडल के अन्य जिले हमीरपुर, बांदा, जालौन तथा ललितपुर इस विद्रोह की अग्नि से जलने लगे। (4)

## अध्याय = 3 =

### (क) विद्रोह का प्रारंभ:--

जिस समय समस्त भारत में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध की ज्वाला भड़क रही थी एवं झाँसी तथा अन्य जनपद में सैनिकों का विद्रोह आरम्भ हो चुका था, उस समय हमीरपुर जनपद में टी० के० लायड कलेक्टर के पद पर कार्यरत था। (5) पड़ोसी जिलों से विद्रोह के समाचार बराबर उसे मिल रहे थे। इस समय हमीरपुर जनपद में ब्रिटिश सेना की 56 वीं टुकड़ी ( 56 वीं नेटिव इन्फेंट्री )तैनात थी। (6) कलेक्टर लायड इस सैनिक टुकड़ी से संतुष्ट नहीं था। शीघ्र ही उसने सेना का पुनर्गठन एवं अन्य सुरक्षा के उपाय करना आरम्भ कर दिये। सर्व प्रथम उसने समस्त जनपद की नाका-बंदी कर दी तथा शीघ्र ही 500 नये सैनिकों की भर्ती कर ली। तदुपरांत जनपद के समस्त तहसीलों में एक जमादार (सुपरवाईजर) एवं दस रंगरुटों को भेजा इसके अलावा प्रत्येक थानों में दो-दो गरंदाज (तोप दागने वालों) की भी नियुक्ति की। इसके पश्चात कलैक्टर लायड ने यह घोषणा भी करवा दी की जनपद में सार्वजनिक स्थल पर कोई भी व्यक्ति असलाह या शस्त्र लेकर नहीं घूमेगा। (7) यमुना और बेतवा नदी के घाटों पर भी सैनिक टुकड़ियां तैनात कर दी। (8) इस

प्रबन्ध के अतिरिक्त उसने ब्रिटिश सरकार के मित्र देशी रियासतों से भी सैनिक एवं युद्ध सामग्री मंगवाली। चरखारी रियासत से सौ पैदल सैनिक, दस घुड़सवार तथा एक तोप सबदल सिंह दौवा के नेतृत्व में हमीरपुर नगर मुख्यालय पर कलैक्टर लायड ने मंगवा ली (9) इसके अतिरिक्त कदौरा छावनी के नवाब ने 50 सैनिक तथा एक तोप तथा बेरी के जागीरदारों ने 80 सैनिक भेजे। (10) जनपद हमीरपुर तैनात 56 वीं इन्फैंट्री के सैनिकों के विद्रोही सैनिकों के साथ स्थानीय जनता ने मिल कर रामरी गाँव के जागीरदार का व आने वाली घटनाओं के सम्बन्ध के बारे बताया तथा विद्रोहियों का साथ देने के लिये कहा। इस बीच 12 जून को एक गुप्त सभा विद्रोही सैनिकों ने की तथा अपने अगले कार्यक्रम की रूप रेखा तैयार की। 14 जून 1857 ई0 को चरखारी के सेना नायक सबदल सिंह दौवा एवं कदौरा छावनी के सेनानायक ने 56 वीं इन्फैन्ट्री रेजीमेंट के विद्रोही सैनिकों के साथ मिल कर हमीरपुर मुख्यालय पर विद्रोह कर दिया। (11) विद्रोही सैनिकों ने खजाना लूट लिया तथा जेल के ताले तोड़ कर अनेक कैदियों को मुक्त कर दिया। (12) कलक्टर लायड तथा ज्वाइंट मजिस्ट्रेट डोनाल्ड ने यमुना नदी पार कर के भागने का प्रयास किया परन्तु कुछ स्थानीय अहीरों ने उन्हें पकड़ कर विद्रोहियों के हवाले कर दिया। जिन्हें बाद में गोली मार दी गयी। (13) दो ब्रिटिश अधिकारी मुरे और

क्रॉफोर्ड चरखारी सैनिकों की सुरक्षा में हमीरपुर नगर में एक भवन में छुपे हुये थे, विद्रोहियों ने उन्हें भी मार डाला। (14) बाद में हमीरपुर नगर के सभी योरोपियन के निवास स्थानों पर आग लगा दी गयी। तथा सभी योरोपियन यहां तक के चर्च के पादरियों तक की हत्या कर दी गई। (15) अन्त में विद्रोही सैनिकों के सूबेदार अली बख्श ने जनपद में मुगल बादशाह के शासन की घोषणा कर दी तथा यह ऐलान करवा दिया "खल्क खुदा का, मुल्क बादशाह का अमल सिपाहियों का अली बख्श ने बादशाह का प्रतिनिधि बन कर जनपद का प्रशासन अपने हाथ में ले लिया। (16) इन घटनाओं के पश्चात हमीरपुर में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन लगभग समाप्त हो गया। विद्रोही सैनिकों ने खजाने की राशि जो कि रू० 149695/- 3 आना 11 पैसे थी अपने अधिकार में ले ली। सूबेदार अली बख्श अपने साथियों सहित यह रकम दिल्ली ले जाना चाहता था, परन्तु चरखारी के सैनिकों ने उन्हें इस कार्य के लिये रोका उनका कहना था कि चरखारी राजा की आज्ञा के बिना यह रकम कोई नहीं ले जा सकता। शीघ्र ही सूबेदार अली बख्श ने कानपुर के नाना साहब से सहायता प्राप्त की तथा 21 जून 1857 ई० को सब उक्त धन राशि के कानपुर की ओर प्रस्थान किया। (17) विद्रोही सैनिकों के नगर के चले जाने के बाद हमीरपुर जिले के डिप्टी कलैक्टर एक भारतीय था, इसका नाम वहीदुज्जमा

था। उसने नगर में शांति स्थापित करने का प्रयास किया। परन्तु शीघ्र ही समस्त हमीरपुर जनपद में नाना साहब का शासन घोषित कर दिया गया, तथा सभी जमींदारों जागीरदारों को नाना साहब के एजेन्ट को राजस्व देने की घोषणा की गई। (18) इस बीच चरखारी राजा के अधिकतर सैनिकों ने अपनी पूर्ण शक्ति सहित अंग्रेज अधिकारियों की रक्षा करने का प्रयत्न किया। उधर गुरसराये के मराठा शासक ने महोबा, जलालपुर पर अपना अधिकार कर लिया। जैतपुर की रानी ने खजाने पर अधिकार कर अपने आप को स्वतंत्र घोषित कर दिया। नवाब बांदा ने मौदहा कस्बे पर अधिकार कर लिया। (19)

<u>महोबा का पतन</u>:-

विप्लव के समय महोबा तहसील का डिप्टी कलैक्टर एस० एच० कोर्न था। उसने हमीरपुर तथा अन्य स्थानों पर विद्रोह के समाचार सुन कर वह सपरिवार चरखारी राज्य के शरण में गया। महोबा इस समय ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन से मुक्त हो गया। ठीक इसी समय गुरसराये के मराठा शासक ने महोबा पर अधिकार कर लिया। डिप्टी कलैक्टर कोर्न ने चरखारी राजा से हमीरपुर जनपद के अन्य कस्बे राठ, पनवाड़ी महोबा कुलपहाड़ तथा जैतपुर के प्रशासन की देखभाल करने के लिये कहा। (20)

चरखारी का पतन :--

जिस समय विद्रोही सैनिक हमीरपुर नगर में विद्रोह कर रहे थे, उस समय चरखारी के राजा रतन सिंह ने विद्रोहियों के सरदार अली बाशा को पत्र द्वारा सूचित किया कि वह छत्रसाल के राज्य के क्षेत्रों पर अधिकार न करें क्योंकि वह मुगल बादशाह द्वारा हमें प्राप्त हैं। (21) इस बीच नाना साहब ने चरखारी के राजा रतन सिंह को अपने पक्ष में लाने का प्रयत्न किया। परन्तु रतन सिंह ने नाना साहब की सलाह पर ध्यान न देते हुए डिप्टी कलैक्टर कोर्ने की बात मान ली और जैतपुर पनवाड़ी तथा राठ में अपने सैनिक भेज दिये। (22) चरखारी के राजा रतन सिंह द्वारा पेशवा नाना साहब की सलाह पर ध्यान न देने पर विद्रोही सैनिकों में बहुत रोष फैल गया। इस बीच चरखारी के राजा ने सेना नायक सबदल सिंह तथा अन्य सैनिकों को विद्रोहियों का साथ देने के अपराध में उसे धोखे से पकड़ कर फांसी दे दी। (23) इस घटना के बाद समस्त विद्रोही सैनिकों में राजा रतन सिंह से बदला लेने की भावना प्रबल हो गयी। शीघ्र ही नाना साहब ने अपने सेना नायक तात्या टोपे को जनवरी 1858 ई० में चरखारी पर अधिकार करने के लिये भेजा। तात्या टोपे के साथ 900 पैदल सैनिक, 200 घुड़सवार तथा 4 तोपें

थी।(24) शीघ्र ही उनके साथ दौलत सिंह और शाहगढ़ तथा कानपुर के विद्रोही सैनिक टुकड़ियाँ उनसे आ कर मिल गईं। कुछ दिनों पश्चात रहुनिया बिहारी का निवासी नोनेसिंह भी तात्या टोपे से आ कर मिल गया।(25) नोने सिंह ने समीपवर्ती क्षेत्रों से हजारों लोगों को जमा कर लिया। नोने सिंह पहले चरखारी राज्य का जागीरदार था बाद में विद्रोही सैनिकों के साथ मिल जाने से चरखारी राज्य से निकाल दिया गया था।(26) तात्या टोपे ने शीघ्र ही चरखारी राज्य को घेरने और आक्रमण करने की योजना बनायी। चरखारी का किला एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित मंगल गढ़ दुर्ग कहलाता था । उस पर आक्रमण करना आसान काम नहीं था। विद्रोही सेना दुर्ग के पीछे वाली पहाड़ी पर अपना मोर्चा लगाया। (27) उधर नोने सिंह बुन्देला ने महामुनि आश्रम की ओर से अपना मोर्चा लगाया। पीछे वाली पहाड़ी जिसे इमलिया कहते थे. चरखारी दुर्ग पर गोलाबारी आरम्भ की गयी। इससे दुर्ग की पिछली दीवार ध्वस्त हो गयी। जिससे विद्रोही सैनिक किले में प्रवेश कर गये, इधर नोने सिंह के सैनिकों ने नगर में लूट-पाट मचा दी साथ वह यह भी कहते जाते थे :-

जय बोलो महामुनि बाबा की,
चरखारी लूट गयी राजा की,

चरखारी नरेश रतन सिंह ने अपने पुत्र को तात्या टोपे के पास भेजा साथ

में तीन लाख रुपये भी भेजे, तथा यह भी अनुरोध किया कि चरखारी नगर में लूट-पाट न करें। (28) डिप्टी कलैक्टर कोर्ने राजा रतन सिंह के महल में शरण लिये हुये था। जिस समय किले की पिछली दीवार ध्वस्त हुयी। महल में आतंक फैल गया। इस बीच पेशवा के अनुरोध पर बांदा के नवाब अली बहादुर ने भी 1000 सैनिक और भेज दिये साथ में 4 तोपें तथा अनेक युद्ध सामग्री भी भेजी। (29) राहत गढ़ के नवाब ने कुछ घुड़सवार भेजे। (30) इस समय तात्या टोपे के साथ बानपुर के राजा और शाहगढ़ के राजा के अतिरिक्त दीवान देशपत तथा दौलत सिंह भी थे। (31) इस प्रकार विद्रोहियों के बड़े समूह ने चरखारी को चारों ओर से घेर रक्खा था। 1 मार्च 1858 ई0 लगभग 2000 विद्रोही सैनिकों के साथ तात्या टोपे ने नगर में प्रवेश किया। (32) डिप्टी कलैक्टर कोर्ने ग्रामीण का वेश बदल कर पन्ना भाग गया। तथा वहां से भारत सरकार के सचिव को एक पत्र चरखारी के विप्लव के सम्बन्ध में लिखा। (33) इधर चरखारी के राजा ने भी अपनी रक्षा के लिये अंग्रेजों से सहायता मांगी। जनरल ह्यूज रोज इस समय बानपुर, तालबेहट, होकर झाँसी पहुँच रहा था। सर रोबर्ट हैमिल्टन भी उसके साथ था। जनरल व्हिटलॉक 22 मार्च 1858 ई0 को चरखारी राजा की सहायता के लिये दमोह से चल पड़ा। (34)

## अध्याय -III = ख

### जनता की प्रतिक्रिया व भागीदारी :-

जून सन् 1857 के शुरू से ही हमीरपुर जनपद परगने राठ, पनवाड़ी, मौदहा, चरखारी एवं महोबा में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध जनता में हलचल प्रारंभ हो गई थी। गुप्त मंत्रणायें और बैठकें होने लगी। लोग उत्तेजित हो कर कानपुर और इलाहाबाद, मेरठ की घटनाओं संबंधी खबरों और अफवाहों पर क्रोधमय प्रतिक्रिया व्यक्त कर अंग्रेजों को बुरा भला कहने लगे। तभी इलाहाबाद और कानपुर से मुक्त हुये कैदी और भंग हुयी हिन्दुस्तानी सेनाओं के भगी सिपाही बांदा के कलैक्टर मैन द्वारा रोके और पकड़े जाने के सभी प्रबन्धों और प्रयत्नों को व्यर्थ कर लुक--छुप हमीरपुर जनपद के अनेक क्षेत्रों में फैल गये। (35) बांदा के कलैक्टर मैन एवं हमीरपुर के तत्कालीन कलैक्टर लायड की रिपोर्ट के अनुसार बांदा एवं हमीरपुर जिले की जनता जैसे उनके स्वागत के लिये तैयार बैठी थी। इस घटना के बाद शीघ्र ही जनपद हमीरपुर के सरीला खुर्द एवं सरीला बुजुर्ग, रामरी आदि गाँव में जनता ने विद्रोही सैनिकों के साथ मिल कर अंग्रेज सरकार विरोधी उपद्रव शुरू कर दिया।(36) आस पास गाँव जलालपुर, भरुआ सुमेरपुर में भी जनता का जमघट शुरू हो गया। उनका कहना था

कि अंग्रेज सरकार के हट जाने के बाद जब नयी हिन्दुस्तानी सरकार वह हमारी अपनी होगी। परगनाधिकारी के अनेक कार्यालयों में घुस कर उपद्रवियों ने वहां के कागज आदि फाड़ डाले अथवा जला डाले, क्योंकि उनका कहना था कि जब नयी जनता की सरकार बने तब अंग्रेजी शासन के काल के उन पर कर्ज और देनदारी के कोई कागजात नहीं मिलना चाहिये।
(37) इस बीच स्थानीय अंग्रेज अधिकारी तथा मजिस्ट्रेट भी हमीरपुर जनपद में तैनात 56 वीं नेटिव इंफैन्ट्री के सैनिकों तथा अन्य देशी सैनिक अधिकारियों को शंका की दृष्टि के साथ देखते तथा भयभीत होते थे।
(38) विद्रोही सैनिक तथा स्थानीय जनता भी शीघ्र ही रामरी गाँव के जमींदार के पास पहुंचा और उसको डराया धमकाया तथा जनपद में होने वाली आगे की भयंकर घटनाओं के बारे में बताया। 12 जून 1857 ई0 को एक गुप्त सभा रामरी गाँव में की गयी जहाँ पर जनता तथा 56 वीं सैन्य दल के सूबेदार तथा सरकारी खजाने पर तैनात सैनिकों और अधिकारी भी शामिल थे, यहाँ पर अगली कार्यवाही के लिये कार्यक्रम बनाया गया।
(39) अगली सुबह विद्रोह के लक्षण दिखने लगे। खजाने पद तैनात सुरक्षा सैनिकों ने खजाने की चाबी अंग्रेज अधिकारियों को देने से इंकार कर दिया। 14 जून 1857 को चरखारी राज्य का सूबेदार सबदल सिंह तथा कबौरा राज्य का तोपची रहीमुद्दीन भी अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह में शामिल

हो गया। इसी दिन हमीरपुर मुख्यालय के एक सरकारी कार्यालय को चारों ओर से विद्रोही जनता ने घेर लिया तभी विद्रोही सैनिकों ने जनता के साथ मिल कर उस पर अधिकार कर लिया। कुछ विद्रोही सैनिकों ने जेल से अनेक कैदियों को मुक्त कर दिया। इस प्रकार समस्त हमीरपुर जनपद एवं हमीरपुरनगर में विद्रोह की ज्वाला धधक उठी तथा जनता ने अंग्रेज शासन के विरुद्ध खुला विद्रोह आरम्भ कर दिया। (40) विप्लव की लहरें जिस तूफानी गति से समस्त जनपद में फैल रही थी उसे रोकने में कलेक्टर लायड तथा ज्वाइंट मजिस्ट्रेट डोनाल्ड ग्रांट स्वयं को बिल्कुल ही असहाय और असमर्थ पा रहे थे। जनपद की स्थिति दिन पर दिन बिगड़ती जा रही थी। अनेक स्थानों पर विप्लवियों को लूटपाट तथा विध्वंसात्मक कार्यवाहियों से रोकने के लिये स्थानीय व्यापारियों और अंग्रेजों के प्रति निष्ठावान कुछ हिन्दुस्तानी अधिकारियों द्वारा इक्के दुक्के प्रयत्न किये जा रहे थे। पर उन के प्रयत्न भी विप्लवी सैलाब के सामने रुक नहीं सके। लोगों में अंग्रेजी शासन के प्रति जो भयंकर रोष व्याप्त था, अब वह विभिन्न रूपों में प्रकट हो रहा था। (41) धीरे धीरे हमीरपुर मुख्यालय विद्रोहियों के गिरफ्त में आता गया। खजाना लूट लिया गया। लायड और ग्रांट ने अपनी जान बचा कर भागना बेहतर समझा। एक नाव में छुप कर वह यमुना नदी पार करके

भागने का प्रयास कर रहे थे परन्तु स्थानीय "मोहिरों" ने उनको पकड़ कर विद्रोहियों के नेता सूबेदार अली बख्श को सौंप दिया विद्रोही सैनिकों ने उन्हें कचहरी के सामने ला कर गोली से मार दिया। दो अन्य अंग्रेज अधिकारी मुरे और ओसबोर्न भी मारे गये जिनकी रक्षा चरखारी राज्य के सैनिक कर रहे थे। स्थानीय लोधियों, बुंदेलों तथा सैय्यद मुसलमानों का बड़ा समूह विद्रोहियों से जा कर मिल गया। बाद में समस्त अंग्रेजी निवास स्थानों को जला दिया गया। राठ और हमीरपुर तहसीलों में सेठ-साहूकारों जमींदारों तथा नीलामी ठेकेदार जो अंग्रेजों के मित्र थे उनके निवास स्थानों पर भी विप्लवियों हमला बोल दिया। स्थानीय ईसाई मिशनरी भी इनके शिकार बने।(42) उधर महोबा, जैतपुर में जनता ने विद्रोही सैनिकों के साथ मिल कर अंग्रेज विरोधी कार्यवाहियाँ आरम्भ कर दीं। जैतपुर की रानी ने देश भक्त बुन्देलों और अन्य योद्धाओं के साथ मिल कर खजाने पर अधिकार कर लिया तथा जैतपुर को स्वतंत्र घोषित कर दिया। बाद में चरखारी राजा ने अपनी सेना जैतपुर भेजी।(43) उधर गुरसराय के मराठा शासक ने हमीरपुर जनपद के जलालपुर तथा महोबा तहसील पर बाँदा के नवाब अली बहादुरने अधिकार कर लिया।(44) इस प्रकार हमीरपुर जनपद अंग्रेज रहित हो गया केवल चरखारी राज्य जो उनका

वफादार बना रहा परन्तु स्थानीय जनता के नजर में वह हमेशा खटकता रहा। समस्त विद्रोही सैनिकों तथा चरखारी राज्य की जनता ने राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया व विद्रोह की अगुवाई तात्या टोपे ने की इसके साथ मोने सिंह बुन्देला भी था। चारों ओर से चरखारी को घेरा गया। चरखारी के राजा रतन सिंह ने अंग्रेजों की सहायता मांगी। 22 मार्च को जनरल व्हिटलॉक दमोह से राजा की सहायता के लिये चल दिया। बाद में चरखारी के राजा रतन सिंह को अंग्रेजों ने अपना परम मित्र मान कर अनेक जागीरें तथा खिताब दिये। (45)

## अध्याय – III – ख

## पड़ोसी जिलों के क्रांतिकारियों से सम्बन्ध :–

बैरकपुर, अम्बाला, मेरठ और दिल्ली आदि में सिपाहियों के बागी हो जाने और कई हिन्दुस्तानी रेजीमेंटस को भंग किये जाने के समाचार उत्तरी भारत की सभी सैनिक छावनियों तेजी से फैल गया। मेरठ, कानपुर, लखनऊ तथा इलाहाबाद के बागी सैनिक विशेष सन्देश ले कर, झाँसी, बाँदा जालौन हमीरपुर ओर आने लगे। हमीरपुर जनपद में जिला फतेहपुर और बांदा से बागी सैनिक छुप-छुप कर विद्रोह की रुप रेखा बताने के लिये पहुंचने लगे। इधर हमीरपुर जिले में विद्रोहियों को रोकने के लिये कलैक्टर लायड सक्रिय हो गया। जनपद के सभी थानाें में सिपाहियों की संख्या बढ़ा दी गयी। जनपद के मुख्य मार्गों पर और यमुना तथा बेतवा के घाटों पर विद्रोहियों की गतिविधियों पर नजर रखने और बांदा और फतेहपुर से बागियों की घुसपैठ रोकने के लिये पहरे और चौकियाँ बिठा दी गईं। हमीरपुर जनपद के प्रवेश मार्गों पर नाका बंदी कर हमीरपुर फतेहपुर से आने वाली सड़कों पर घुड़सवारों के दल को कड़ी निगरानी के लिये तैनात कर दिया गया। यमुना नदी पद चिल्ला घाट पर आवागमन के लिये नावों का पुल था, बाँदा के कलैक्टर मैन ने मुहम्मद सरदार खाँ को एक

सैन्यदल सहित नियुक्त कर दिया और उसे कड़े आदेश कर दिये गये कि पुल पर किसी भी संदिग्ध व्यक्ति को यमुना के इस पार न आने दें।(46) फतेहपुर के डिप्टी कलैक्टर हिकमत उल्ला खाँ फतेहपुर के निर्देशों पर फतेहपुर हमीरपुर, बांदा जनपद के मार्गों के बीच में बागियों को रोकने और पकड़ने के लिये मार्गों में छावनी डाल कर बैठ गया था। सरदार खाँ को भी उससे सहयोग कर फतेहपुर बांदा, हमीरपुर जनपद मार्गों के बागियों को समाप्त करने के लिये कहा गया। इस समय मेजर एलिस बुन्देलखंड में सहायक पोलिटिकल एजेन्ट था। उसने हमीरपुर जनपद के कलैक्टर लायड तथा बांदा के कलैक्टर मैन को यह संदेश भेजा कि स्थानीय ब्रिटिश सरकार के मित्र रियासतों से तथा अमीर उमरा लोगों से धन और सैनिक तथा सैन्य सामग्री की मदद ले ली जावे।(47) इतना सब कुछ करने पर जनपद हमीरपुर में तथा पड़ोसी जिलों में कुछ ऊपरी शांति दिखने लगी पर कलैक्टर लायड हमीरपुर जनपद में तैनात 56 वीं नेटिव इन्फैन्ट्री के सैनिकों की ओर से संतुष्ट नहीं था, वह जानता था कि इस भ्रामक शांति में आने वाले तूफान के लक्षण निहित हैं। वह यह भी जानता था कि वह और समस्त ब्रिटिश अधिकारी एक बारूद के ढेर पर बैठे हैं। इस बीच कलैक्टर मैन तथा लायड ने उत्तर-पश्चिमी प्रांतीय अंग्रेजी सरकार को कुछ विद्रोह

सम्बन्धी घटनाओं को ले कर कुछ घोषणायें और विज्ञप्तियाँ प्रसारित की।(48) इधर जनपद में इतने व्यापक प्रबन्ध और निगरानी के बावजूद, आस पास के जनपदों और सैनिक छावनियों से विद्रोही सैनिकों का लुके छुपे आना बराबर जारी रहा तथा उत्तरी प्रांत अथवा संयुक्त प्रांत की छावनियों के विद्रोह के समाचार बराबर आते रहे क्यों कि हमीरपुर जनपद का पश्चिमी उत्तरी सीमा अभी भी पूर्णतः असुरक्षित थी, इस सीमा पर मराठा स्टेट गुरसराये, जनपद झाँसी तथा जालौन उरई लगता था। इस सीमा पर बसे हुए कस्बे, मझगवाँ, सरीला, खंडौत, जलालपुर, बेरी आदि स्टेट भी थीं।(49) इस सीमा से लुके-छुपे बराबर सैनिक हमीरपुर जनपद में आते रहे तथा अन्य स्थानों और झाँसी तथा जालौन जनपद के बागी सैनिकों के समाचार बराबर हमीरपुर जनपद में तैनो 56 वीं सैनिक टुकड़ी को प्राप्त होते रहे। कलेक्टर लायड के अनुसार :-

जिले की उत्तरी पूर्वी तथा पूर्वी और पूर्वी दक्षिणी सीमा पर तो सुरक्षा के तमाम प्रबन्ध कर लिये गये हैं, परन्तु उत्तरी पश्चिमी और पश्चिमी सीमा अभी पूरी तरह असुरक्षित है।(50) इधर जनपद में एक समाचार फैल गया कि बाजार में आटा मिल रहा है उसमें हड्डियों का चूरा मिला है। इसके अतिरिक्त 'गदर' सम्बन्धी सूचनाएँ के पर्चे तथा यूरोपियन

को मारने की धमकियाँ भी दीवार पर लिखी जाने लगीं जिससे नगर और समस्त जनपद में यद्यपि इस समय समस्त बुन्देलखंड विद्रोह की लपेट में आ गया था। परन्तु इस विद्रोह का कुछ केन्द्र झाँसी और बांदा थे। झाँसी डिवीजन के चार जिलों में इस समय निम्न लिखित नैटिव टुकड़ियाँ तैनात थीं और जो आपस में बराबर सम्बन्ध बनाये हुयीं थीं।

झाँसी :- झाँसी में इस समय लेफ्ट विंग की 12 वीं रेजीमेंट आफ नैटिव इन्फैन्ट्री का मुख्यालय के साथ-साथ राईट विंग आफ दि 14 इरीगुलरी कैवलरी और पैदल तोपखाना तैनात था जो कि कैप्टन डनलप के कमांड में थी। एक विशेष विषय यह था कि उपरोक्त सैनिक टुकड़ियों में योरुपियन सैनिक नाम मात्र को थे। यह सब टुकड़ियाँ झाँसी छावनी के "स्टार फोर्ट" नामक एक छोटे से किले में थी, साथ- साथ इस किले में ही खजाना और शस्त्रालय भी था। झाँसी कमिश्नरी का कमिश्नर इस समय स्कैन्क्लेन्डर स्किन तथा डिप्टी कमिश्नर फ्रांसिस गार्डन था। (51)

जालौन :- जालौन जनपद में इस समय 53 वीं नैटिव इन्फैन्ट्री तैनात थी जो कि कैप्टन एलैक्जेन्डर के कमांड में थी। इसके अतिरिक्त 56 वीं रेजीमेंट के कुछ सैनिक कानपुर से आ कर यहाँ पर और तैनात कर दिये गये थे। इसमें आधे से अधिक सैनिक जनपद हमीरपुर भेज दिये गये थे।

कानपुर से इस सैनिक टुकड़ी के साथ कैप्टन रैक्स और लेफ्टीनेन्ट एनोसिन ब्राउन भी वहां पर आ गया था। अन्य योरोपियन अधिकारियों में कैप्टन ब्राउन डिप्टी कमिश्नर लेफ्टिनेंट लैम्ब, सहायक कमिश्नर जी पासनाड, डिप्टी कलैक्टर टालकन आदि थे। (52) सर्व प्रथम 1 जून 1857 को झाँसी में बागी सैनिकों ने विद्रोह आरम्भ कर दिया। इसकी सूचना हमीरपुर तैनात 56 वीं सैनिक टुकड़ी को प्राप्त होते ही 14 जून 1857 ई0 को हमीरपुर जनपद के सैनिकों ने विद्रोह कर वहां के योरोपियन को समाप्त कर दिया। बाँदा की प्रथम नेटिव इन्फैन्ट्री सेना ने भी उस ही दिन यह सूचना पाते ही बांदा में विद्रोह कर दिया। (53) इधर कानपुर के नाना साहब का सेनापति बराबर सब स्थानों पर विद्रोहियों से सम्बन्ध स्थापित कर रहा नवाब बांदा अली बहादुर शाहगढ़ के राजा बखत बली राहत गढ़ के नवाब तथा लक्ष्मी बाई भी आपस संपर्क स्थापित करे रहे। तात्या टोपे नाना साहब के प्रतिनिधि के रूप में बुन्देलखंड में विद्रोहियों में सक्रिय रहा। (54) अंत में झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई, कानपुर के राजा मर्दन सिंह और बांदा के नवाब अली बहादुर तथा नाना धोंडोपंत के बीच आपसी तालमेल बैठा कर 1857 के इस स्वतंत्रता संग्राम को एक संगठित और सुनियोजित रूप देने के लिये प्रयत्नशील थे। (55) अंत में सभी विद्रोही सैनिकों तथा

नरेशों ने कालपी में एकत्रित होने की सूचना सब को प्राप्त हुयी। नवाब बांदा 19 अप्रैल 1858 को बांदा से कालपी की ओर चल दिये, वह हमीरपुर जनपद के राठ तथा जलालपुर कस्बे से हो कर गुजरे जहां पर उनके साथ 56 वीं टुकड़ी के विद्रोही सैनिक हमीरपुर जनपद से आ कर मिल गये तथा ग्राम खंडौत से इन लोगों बेतवा पार करके कालपी में आ कर रानी झांसी और तात्या टोपे तथा नाना साहब से आ कर मिल गये। (56)

## अध्याय = III = घ

**देशपत, बख्तसिंह तथा उमराव खंगार द्वारा अंग्रेजों से डट कर मुकाबला :-**

नवंबर 1858 ई0 अक्टूबर तक बुन्देलखंड की विद्रोही गतिविधियों में कुछ ठहराव सा आ गया, कारण :- 17 जून 1858 ई0 को रानी लक्ष्मी बाई की मृत्यु हो चुकी थी। राव साहब, तात्या टोपे और बांदा के नवाब अली बहादुर सुरक्षा और आश्रय की खोज में इधर-उधर भटक रहे थे। उधर सितम्बर 1858 ई0 के अन्त में बानपुर के राजा मर्दन सिंह ने और शाहगढ़ के राजा बख्त अली अंग्रेजों के सामने आत्म समर्पण कर चुके थे।(57) इस बीच 1 नवंबर 1858 ई0 को ब्रिटिश सम्राज्ञी ने आम क्षमा दान " आम मुआफी नामा" का ऐलान कर दिये जिससे बचे हुए बाकी राजे- रजवाड़े ने भी अंग्रेजी शासन के समक्ष घुटने टेक दिये।(58) परन्तु बुन्देलखंड क्षेत्र के हमीरपुर जनपद में स्वतंत्रता की धीमी धीमी आग सुलगती रही। 18 मार्च 1858 ई0 को हमीरपुर के नवीन डिप्टी कलेक्टर जी0 एस0 फ्रीलिंग ने जो इस जनपद की रिपोर्ट भेजी थी उसमें लिखा था - " यद्यपि 1858 ई0 का विद्रोह दबा दिया गया है परन्तु यहां पर इस विद्रोह की आग अभी शांत नहीं हुयी है जैतपुर आदि कस्बों में अभी क्रांतिकारी संगठित हो रहे हैं।(59) इसी प्रकार तत्कालीन " दि टाइम्स

स्टैन्डर्ड" समाचार पत्र की संवाददाता मिसेज हैनरी डयूबरले के अनुसार: बुन्देलखंड क्षेत्र के विद्रोहियों पर महारानी विक्टोरिया की आम मुआफी की घोषणा का तनिक भी असर नहीं हुआ। विद्रोहियों के नेता दीवान देशपत ने महारानी की घोषणा को अपनी चिलम के धुयें में उड़ा दिया, तथा अपने साथियों को विद्रोह के लिये पुनः संगठित करने लगा तथा कुलपहाड़ कस्बे के आस पास अपनी सरकार विरोधी कार्यवाही आरम्भ कर दी।(60) एक अन्य रिपार्ट जो गवर्नर जनरल के एजेन्ट ने इस क्षेत्र के बारे में भेजी थी उसके अनुसार :- चट्टानों, डागों ( घने जंगल की घाटियां ) में ऐसे ( विद्रोही अथवा आतंक फैलाने वाले) हजारों की संख्या में लोग बसते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ पर कुछ पुराने किले में भी कुछ लोग रहते हैं जो कभी भी सरकार के विरुद्ध आतंक फैला सकते हैं।(61) इस प्रकार सन् 1857-58 के महान स्वतंत्रता संग्राम के समाप्तहोने पर भी बुन्देलखंड का इस जनपद अंग्रजों के विरुद्ध बराबर संघर्ष चलता रहा और उस संघर्ष का नेतृत्व दीवपन देशपत, बखत सिंह तथा उमराव लंगार ने किया।

दीवान देशपत :- दीवान देशपत का सम्बन्ध रियासत जैतपुर से था। 1812 ई0की संधि के अनुसार जो सनद जैतपुर के राजा केशार सिंह को प्राप्त हुयी थी, उससे राजा को तत्कालीन जैतपुर राज्य केशार सिंह को

प्राप्त हुआ था। (62) केशरीसिंह की मृत्यु के पश्चात जैतपुर का राजा पारीक्षत बना। 1849 ई0 में उसकी मृत्यु के बाद कम्पनी सरकार ने राजा पारीक्षत की विधवा रानी को रु0 1200=00 महीना पेन्शन बांध कर जैतपुर राज्य को अपने राज्य में मिला लिया। अंग्रेजों के इस कार्य से रानी असंतुष्ट थीं तथा अपने राज्य को स्वतंत्र करने के लिये अपने अन्य बुन्देला सरदारों को इकट्ठा किया, उन सरदारों में ही एक सरदार दीवान देशपत था। देशपत ने तमाम बुन्देला सरदारों को इकट्ठा करके अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। फरवरी 1858 ई0 में जब तात्या टोपे के नेतृत्व में विद्रोही सेना ने चरखारी राज्य को घेर लिया था तब दीवान देशपत अपने सैनिकों सहित उस विद्रोही सेना में सम्मिलित हो गया था तथा चरखारी के पतन में तात्या टोपे के साथ रहा।(63) इधर चरखारी पर विद्रोहियों की कार्यवाही चलती रही इस बीच हमीरपुर जनपद पर कम्पनी सरकार का प्रशासन लगभग समाप्त हो गया था। इस अवसर का लाभ उठाते हुऐ गुरसराय के मराठा राजा ने हमीरपुर जनपद के जलालपुर कस्बे पर अधिकार कर लिया। उधर बांदा के नवाब ने अपने को स्वतंत्र घोषित करते हुऐ हमीरपुर जनपद के महोबा और मौदहा पर अधिकार कर लिया। (64) इस सुअवसर का लाभ उठाते हुऐ जैतपुर की विधवा रानी और देशपत ने अन्य बुन्देला सरदारों के साथ जैतपुर को स्वतंत्र घोषित कर दिया

तथा तहसील पर अधिकार कर समस्त सरकारी खजाने को अपने हाथ में ले लिया। इस अभियान का संचालन देशपत बुंदेला था।(65) बाद में चरखारी के राजा रतनसिंह ने एक सेना रानी और दीवान देशपत को बन्दी बनाने के लिये भेजी। देशपत अपने साथियों सहित भूमिगत हो गया तथा रानी को टीकमगढ़ राज्य में शरण लेनी पड़ी। इसके पश्चात देशपत लगातार जैतपुर राज्य पर अधिकार करने के लिये ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध संघर्ष करता रहा। 1859 के प्रारम्भ में जबकि सिपाही विद्रोह लगभग समाप्त हो चुका था। उस समय दीवान देशपत, उमराव सिंह पंवार छत्रसिंह तथा लक्ष्मन सिंह के नेतृत्व में जैतपुर बरौंदा और आरी ग्राम में लगभग 1500 सशस्त्र विद्रोहियों का समूह फिर विद्रोह के लिये एकत्रित हो गया।(66) इसकी सूचना सरकार को प्राप्त हुयी। इस समय हमीरपुर जनपद में मद्रास इन्फैन्ट्री की एक टुकड़ी थी, जिसकी कमांड कैप्टेन हिलियार्ड और कैप्टेन सेवर्स के हाथ में थी। 5 जनवरी 1859 ई० को इस विद्रोही ठिकाने पर आक्रमण कर दिया। इस अचानक हमले से विद्रोहियों में भगदड़ मच गई, फिर भी उन्होंने ब्रिटिश सेना का सामना किया। परन्तु अंग्रेजों के इस अचानक हमले से विद्रोही सैनिकों को बहुत क्षति उठानी पड़ी लगभग 50 विद्रोही मारे गए 45 घोड़े, 4 ऊंट तथा 2 पोर्टेबल (हल्की) तोपें ब्रिटिश सेना के हाथ लगी विद्रोही सरदार इधर-उधर छुप गये।(67) इधर 8

फरवरी 1859 ई० छत्तर सिंह बखत सिंह ने मौजा पिपरी परगाना पनवाड़ी पर अपने तीन सौ विद्रोही साथियों सहित आक्रमण कर दिया तथा लूट-पाट आरम्भ कर दी।(68) इसी समय बांदा में फरजन्द अली तथा रनमत सिंह तथा उनके साथ एक बड़ी संख्या में विद्रोहियों के झुंड ने भी विद्रोह कर दिया। उधर बखत सिंह छत्तर सिंह 18 मार्च 1859 ई० को गुमगावां गाँव से झाँसी जनपद की सीमा में प्रवेश कर गए और झाँसी जिले के सिमरहटी ग्राम पर आक्रमण करके उधर के जमींदार को लूट लिया। (69) इसी समय परगाना जैतपुर के गाँव डिकरिया के जमींदार अनन्त राव ने भी विद्रोह कर के लूट-पाट आरम्भ कर दी। इस समय हमीरपुर जनपद का परगाना जैतपुर एक बार फिर ब्रिटिश सरकार के हाथ में नहीं रहा अर्थात वहां पर कानून और आदेश नाम की कोई चीज नहीं रह गई।(70) 24 अप्रैल 1859 ई० को बखत सिंह ने मौजा टोहरी कलां परगाना पनवाड़ी पर दो बार आक्रमण कर दिया और लूट-पाट कर दी। इस बीच 16 मई 1859 ई० को कैप्टन सेवर्स बखत सिंह के कैम्प जो कि ग्राम कुरन अलीपुरा के पास था पहुंच गया। उधर डिप्टी मैजिस्ट्रेट परगाना गुरसराये अपने साथ एक मिलिटरी बटालियन लेकर धसान नदी पर पहुंच गया। (71) परन्तु परगाना जैतपुर और पनवाड़ी की कानून व्यवस्था में कोई सुधार नहीं हुआ।

विद्रोहियों ने समस्त जमींदारों तथा किसानों को सरकार को लगान न देने की धमकी दी। (72) इस धमकी से सभी जमींदार डर गये। इस बीच हमीरपुर जनपद के नये नियुक्त डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट जे०एस०ग्रीलिस ने जैतपुर के बारे में यह रिपोर्ट दी कि " मैंने जैतपुर परगने का दौरा करके पता लगाया है कि यहां पर सैकड़ों की संख्या में विद्रोहियों के झुंड इकट्ठा हो गये हैं इस कारण यहां के लोगों को अपनी जान और माल की हिफाजत करना मुश्किल हो गया है क्यों कि यह सब हथियारों से लैस हैं। परन्तु हमारी सैनिक टुकड़ियाँ उन पर काबू करने की कोशिश कर रही हैं।(73) इस बीच सितम्बर 1859 ई० में गवर्नर जनरल का एक एजेंट सर. आर० शेक्सपियर छतरपुर में आया तथा वहां आ कर महल में ठहरा। महल में उससे गरौली स्टेट के राजा रानी मिलने आये तथाअपने राज्य की सीमा तथा राज्य की विद्रोहियों से सुरक्षा की ब्रिटिश सरकार से अपील की। (74) इसके बाद इस क्षेत्र में एक अस्थायी सैनिक छावनी बनायी गई, जहां पर कानपुर और फतेहगढ़ की सशस्त्र सैनिक टुकड़ियां आ कर बस गई। जैतपुर में भी एक सैनिक छावनी (स्थायी) बनाई गई तथा चारों ओर चौकसी और गश्त बढ़ा दिया गया। इसकी प्रतिक्रिया यह हुयी की इस भाग में विद्रोहियों की गतिविधियों में काफी कमी आ गई अधिकतर विद्रोही

भूमिगत हो गये अथवा उन्होंने क्रांतिकारी गतिविधियां छोड़ दीं। कुछ विद्रोही सरदार जैसे उमराव खंगार, जालिम सिंह आदि अपने साथियों सहित डांगों अथवा जंगलों में चले गये देशपत भी इनके साथ था। (75) झांसी और उसके आसपास के क्षेत्रों, बांदा, तथा जालौन जिले में फिलहाल शांति हो गई थी। विद्रोही नेता जो कि झांसी और जालौन जनपद में सक्रिय थे, उन्होंने ग्वालियर के सिंधिया राज्य की सीमा में करौली में जा कर आश्रय लिया उनके ना बरजोर सिंह तथा दौलत सिंह थे। 1869 ई० के प्रारम्भ में उमराव खंगार तथा जालिम सिंह सैनिक मुठभेड़ में या तो मारे गए अथवा हथियार रख कर शांत हो गये।(76) इधर देशपत भी जैतपुर के पास " जीन्गौन" के घने जंगलों में जा कर भूमिगत हो गये। सरकार ने उसे पकड़ने या पकड़वाने के लिये दस हजार का ईनाम देने की घोषणा की। (77)

## अध्याय – III – ड.

## चरखारी राजा द्वारा अंग्रेजों का साथ देना:-

**चरखारी राज्य का पूर्व इतिहास:-** महाराजा छत्रसाल ने अपने द्वितीय पुत्र जगत राज को मुरगढ़, चरखारी, अजयगढ़, बिजावर, सरीला, जैतपुर, कालपी, हमीरपुर, जसो, कोंच, बांदा, महोबा आदि क्षेत्र राज्य के बटवारे में दिये थे परन्तु जगत राज ने अपनी बैठक जैतपुर में स्थापित की थी। (78) 1759 ई० में जगत राज की मृत्यु हुयी, जगत राज का तीसरा पुत्र पहाड़ सिंह उस समय उसके पास था। जगत राज की मृत्यु के पश्चात पहाड़ सिंह ने अपने आप को राजा घोषित कर दिया जबकि जगत राज ने कीरत राज को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था, परन्तु कीरत राज की असमय मृत्यु के कारण उनके दोनो पुत्र गुमान सिंह और खुमान सिंह राज्य के सच्चे उत्तराधिकारी थे। दोनो उत्तराधिकारियों ने पहाड़ सिंह से अपना राज्य मांगा परन्तु पहाड़ सिंह ने राज्य देने से मना कर दिया इससे बात युद्ध तक पहुंच गयी। 1765 ई० में पहाड़ सिंह महोबा में गंभीर रूप से बीमार पड़ा, उसे अपने बचने की कोई आशा न दिखी, तब उसने कीरत सिंह के दोनो पुत्र गुमान सिंह और खुमान सिंह को अपने पास बुलवा कर गुमान सिंह को बांदा अजयगढ़ तथा खुमान सिंह को चरखारी राज्य दिया। (79) राजा खुमान सिंह मौदहा के समीप मोने

अर्जुन सिंह के द्वारा एक युद्ध में मारा गया। उसका पुत्र विक्रमाजीत (विजय बहादुर) नोने अर्जुन सिंह का सामना नहीं कर सका और ग्वालियर दौलत राव सिंधिया के पास भाग गया। इस समय चरखारी राज्य का सामन्त अफजल हुजारी चरखारी दुर्ग मंगल गढ़ की रक्षा करता रहा, वह नोने अर्जुन सिंह के अधिकार में नहीं आया। (90) उधर विक्रमाजीत भाग कर हिम्मत बहादुर गोसाईं (1732-1805 ई०) और अलीबहादुर (बाद में बाँदा का नवाब बना) की सेना में सम्मिलित हो गया। हिम्मत बहादुर नोने अर्जुन सिंह का शत्रु था, अतः विक्रमाजीत सिंह ने नोने अर्जुन सिंह के विरोधी का पक्ष लिया। खुमान सिंह की मृत्यु के पश्चात चरखारी पर बाँदा राज्य का अधिकार हो गया था। अली बहादुर ने जब चरखारी पर आक्रमण किया उस समय विक्रमाजीत उसके साथ रहा। युद्ध में बिजावर का राजा वीर सिंह मारा गया और अली बहादुर की विजय हुयी। अली बहादुर ने विक्रमाजीत की सहायता से प्रसन्न हो कर चरखारी राज्य उसे वापिस कर दिया। विक्रमाजीत ने अली बहादुर के आधीन रहना स्वीकार कर लिया। उस समय चरखारी राज्य की आय केवल 4 लाख रुपये थी। (91) कालान्तर बेसिन की पूरक संधि के पश्चात बाँदा की नवाबी का अंत हो गया अली बहादुर का पुत्र शमशेर बहादुर अंग्रेजों के अधीन हो गया।

(82) तब चरखारी के राजा विक्रमाजीत ने अंग्रेजों से संधि कर ली। अंग्रेज सरकार ने विक्रमाजीत को 4 लाख की आय सहित चरखारी राज्य की सनद दे कर उसे अपने आश्रय में ले लिया। परन्तु यह सनद अस्थाई थी क्योंकि चरखारी राज्य की उस समय छतरपुर और अजयगढ़ राज्य से सीमाओं के सम्बन्ध में अनबन चल रही थी। सीमा सम्बन्धी झगड़े समाप्त हो जाने के पश्चात कम्पनी सरकार ने चरखारी राज्य को स्थाई सनद दे दी। 1811 ई० में बुन्देले राजाओं में राजा विक्रमाजीत ने सर्वप्रथम अंग्रेजों से सनद प्राप्त की थी।(83) राजा विक्रमाजीत ने चरखारी राज्य प्राप्त करने के पश्चात मंगलगढ़ के किलेदार भगवंत हुजूरी को जहर दे कर मरवा दिया। भगवंत हुजूरी चरखारी राज्य का विश्वासी सेवक था परन्तु विक्रमाजीत उसका मूल्यांकन न कर सका और अन्य सहायकों के कहने पर एक विश्वास पात्र सहायक से हाथ धोना पड़ा। सन 1829 ई० में विक्रमाजीत की मृत्यु हो गयी। विक्रमाजीत के आठ पुत्र थे, परन्तु ईश्वर सिंह, पूरनमल और रणजीत सिंह महारानी से पैदा थे। अतः वही राज्य के उत्तराधिकारी थे। दुर्भाग्यवश विक्रमाजीत के इन तीनों पुत्र का देहान्त उसके जीवन काल में हो गया था, अतः विक्रमाजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात रणजीत सिंह का पुत्र रतन सिंह (1829-1860) चरखारी का राजा हुआ। (84)

<u>चरखारी का राजा रतन सिंह और अंग्रेज</u> :- जब चारों ओर उत्तरी भारत में स्वतंत्रता का संघर्ष अथवा सिपाही विद्रोह फैला हुआ था, उस समय चरखारी राज्य में राजा रतन सिंह (1829-1860 ई0) की हुकूमत करता था। सनद के अनुसार उसने विद्रोहियों की परवाह न करते हुए उसने खुल कर अंग्रेज सरकार का साथ दिया। सर्व प्रथम हमीरपुर जिले में सिपाही विद्रोह आरम्भ होते ही महोबा के डिप्टी कलेक्टर एफ0 एच0 कोर्न को चरखारी दुर्ग मंगलगढ़ में शरण दी।(85) हमीरपुर के कलेक्टर टी0 के0 लायड तथा अन्य अधिकारियों ने भी चरखारी राजा से सहायता मांगी थी। राजा रतन सिंह सेना नायक सबदल सिंह के नेतृत्व में एक टुकड़ी जिसमें 100 बन्दूकची सैनिक 10 घुड़सवार एवं एक तोप हमीरपुर नगर मुख्यालय टी0 के0 लायड के पास भेजी।(86) जब हमीरपुर नगर में विद्रोह आरम्भ हुआ उस समय चरखारी के राजा ने अपनी शक्ति भर अंग्रेजों को बचाने एवं सहायता देने का प्रयत्न किया। चरखारी के सैनिकों ने ब्रिटिश अधिकारी मुरे एवं क्राफोर्ड बचाने का पूर्ण रूप से प्रयत्न किया। विद्रोही सूबेदार अली बख्श ने सरकारी खजाना लूटने से रोका। हमीरपुर नगर में पेशवा का शासन घोषित होने पर भी चरखारी की सेना हमीरपुर में ही अंग्रेज अधिकारियों की रक्षा करती रही। चरखारी राजा ने

विद्रोही सूबेदार अली बख्श को पत्र भेज कर यह सूचित किया कि वह छत्रसाल के राज्यों में विद्रोह न फैलायें।(87) नाना साहब ने चरखारी राजा रतन सिंह को अपने पक्ष लाने का प्रयत्न किया परन्तु राजा चरखारी ने इस पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। जब चरखारी के राजा को अपने सैनिकों और सेना नायक सबदल सिंह दौवा का विद्रोहियों की सहायता देने का समाचार मिला उसने सैनिकों को कड़ा दंड दिया एवं सेना नायक सबदल सिंह दौवा को फाँसी पर चढ़ा दिया।(88) चरखारी राजा रतन सिंह ने विद्रोह के समय अंग्रेजों को साथ देने तथा महोबा के डिप्टी कलैक्टर कोर्ने को चरखारी में पनाह देने, परगना राठ, पनवाड़ी एवं जैतपुर की देखभाल करना तथा सेना नायक सबदल सिंह को विद्रोहियों की सहायता करने पर फाँसी देने पर ब्रिटिश सरकार ने चरखारी राजा को अंग्रेजों का वफादार मित्र माना। डिप्टी कलैक्टर महोबा एफ0 एफ0 कोर्ने की सिफारिश पर ब्रिटिश सरकार ने राजा रतन सिंह को महाराजा का खिताब, खिल्लत एक सनद एक तलवार एवं रु0 2000=00 की जागीर प्रदान की।(89) राजा रतन सिंह के बाद, राजा जय सिंह (1860-1880), मलखान सिंह (1880-1908) राजा जुझार सिंह ( 1908-1914), राजा गंगा सिंह (1920-1929) आदि कालांतर चरखारी के शासक हुए।(90)

## अध्याय -III - प

### जैतपुर, महोबा, राठ तथा पनवाड़ी में क्रांतिकारियों द्वारा व्यापक तोड़फोड़ व अंग्रेजों का डराना धमकाना :-

हमीरपुर में 1857 ई० का सिपाही विद्रोह 14 जून 1857 ई० को हमीरपुर के मुख्यालय हमीरपुर नगर से प्रारम्भ हुआ था। परन्तु इसका भीषण रूप जो जन आन्दोलन के रूप में उभरा था, वह जनपद का दक्षिणी-पूर्वी भाग में था। इस भाग में महोबा, चरखारी, जैतपुर, राठ और पनवाड़ी कस्बे अथवा परगने थे। इन परगनों में यह आन्दोलन 1857 के छठे दशक से आरम्भ हो कर, ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया के क्षमादान के बाद 1859 ई० के मध्य तक चला था। हमीरपुर नगर में 14 जून 1857 ई० को विद्रोह प्रारम्भ हुआ था और छः दिन के अन्दर अर्थात 20 जून 1857 ई० को सूबेदार अली बख्श ने दिल्ली के मुगल बादशाह बहादुर शाह का शासन हमीरपुर में घोषित कर दिया था। बाद में यह आन्दोलन महोबा और चरखारी में फलता रहा, और इसके पड़ोसी कस्बों में यह आन्दोलन 1859 ई० तक चला।(91) हमीरपुर जनपद के मुख्य कस्बे हैं। जैतपुर, राठ, पनवाड़ी और महोबा थे। हमीरपुर और चरखारी के पतन के बाद इन कस्बों में क्रांतिकारियों का बड़ा समूह इकट्ठा हो गया था, तथा उन्होंने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध खुल कर विद्रोह

आरम्भ कर दिया था। इन क्रांतिकारियों के समूह के प्रमुख नेता दीवान देशपत, उमराव बंगार, कुंवर बाल सिंह आदि थे। इन लोगों ने समस्त दक्षिणी-पूर्वी जनपद में उत्पात मचाये रक्खा। 1858 ई० के बाद इन लोगों ने बाकायदा विद्रोह का रूप धारण कर लिया था। इनका प्रमुख कार्य लूट-पाट करना था तथा सरकारी सम्पत्ति की तोड़-फोड़ करना तथा योरोपियन्स को डराना धमकाना था। (92)

जनपद के दक्षिण-पूर्वी भाग में व्यापक विद्रोह :-

महोबा :- हमीरपुर के पतन के बाद वहां पर दिल्ली के मुगल बादशाह का शासन घोषित करके अधिकतर विद्रोही सैनिक कानपुर चले गये। हमीरपुर के तत्कालीन डिप्टी कलैक्टर वहीउज्जमा ने वहां पर शांति रखने का प्रयास किया परन्तु उसमें वह सफल न हो सका। 1 जुलाई 1857 ई० को वहां पर अन्य विद्रोही सैनिक कानपुर से आ गये, तथा वहां पर दिल्ली के बादशाह के अधीन पेशवा नाना साहब का शासन घोषित कर दिया तथा वहां पर कुछ सैनिकों को छोड़ शेष चरखारी और महोबा की ओर चल दिये। (93) महोबा परगने की स्थिति बहुत ही शोचनीय हो गयी वहां पर बांदा के विद्रोही सैनिकों ने नगर में प्रविष्ट कर अंग्रेज अधिकारियों तथा उनके परिवारों को डराना-धमकाना आरम्भ कर दिया।

आरम्भ कर दिया था। इन क्रांतिकारियों के समूह के प्रमुख नेता दीवान देशपत, उमराव दंगार, कुंअर बाल सिंह आदि थे। इन लोगों ने समस्त दक्षिणी-पूर्वी जनपद में उत्पात मचाये रक्खा। 1858 ई0 के बाद इन लोगों ने आकस्मिक विद्रोह का रूप धारण कर लिया था। इनका प्रमुख कार्य लूट-पाट करना था तथा सरकारी सम्पत्ति की तोड़-फोड़ करना तथा यूरोपियन्स को डराना धमकाना था। (92)

<u>जनपद के दक्षिण-पूर्वी भाग में व्यापक विद्रोह</u> :-

<u>महोबा</u> :- हमीरपुर के पतन के बाद वहां पर दिल्ली के मुगल बादशाह का शासन घोषित करके अधिकतर विद्रोही सैनिक कानपुर चले गये। हमीरपुर के तत्कालीन डिप्टी कलैक्टर वहीदुज्जमा ने वहां पर शांति रखने का प्रयास किया परन्तु उसमें वह सफल न हो सका। 1 जुलाई 1857 ई0 को वहां पर अन्य विद्रोही सैनिक कानपुर से आ गये, तथा वहाँ पर दिल्ली के बादशाह के अधीन पेशवा नाना साहब का शासन घोषित कर दिया तथा वहां पर कुछ सैनिकों को छोड़ शेष चरखारी और महोबा की ओर चल दिये।(93) महोबा परगने की स्थिति बहुत ही शोचनीय हो गयी वहां पर बांदा के विद्रोही सैनिकों ने नगर में प्रवेश कर अंग्रेज अधिकारियों तथा उनके परिवारों को डराना-धमकाना आरम्भ कर दिया।

महोबा में इस समय असिस्टेंट मैजिस्ट्रेट एफ० एच० कोर्ने था। वह महोबा की वह स्थिति देख कर बहुत घबराया हुआ था। उसने तुरंत चरखारी के राजा रतन सिंह से सम्पर्क कर महोबा की स्थिति से अवगत कराया तथा अपने सैनिक महोबा में भेजने के लिये कहा परन्तु चरखारी के राजा ने इसमें असमर्थता बताई। असिस्टेंट मैजिस्ट्रेट कोर्ने इतना घबराया गया कि वह बुन्देला ग्रामीण पुरुष का रुप धारण करके तुरंत चरखारी आ गया। कोर्ने के महोबा को छोड़ते ही बांदा के सैनिकों ने मौदहा तथा गुरसराये के मराठा सरदार ने महोबा पर नाना साहब का झंडा लगा दिया तथा पेशवा के शासन की घोषणा कर दी।(94)

जैतपुर:- 1857 ई० विद्रोह में जो भूमिका जैतपुर कस्बे ने अदा की है, वह जनपद के इतिहास में आश्चर्य में डालने वाली है, क्यों कि जब समस्त भारत में विद्रोह समाप्त हो चुका था परन्तु जैतपुर में ब्रिटिश सरकार विरुद्ध विद्रोह जारी रहा। जैतपुर में विद्रोह की भूमिका जैतपुर को ब्रिटिश सरकार द्वारा हड़पने के साथ आरम्भ हो गयी थी। जैतपुर के जागीरदार पारीक्षत की विधवा रानी अपने देश भक्त बुन्देला सरदार तथा योद्धाओं के साथ इस विद्रोह में कूद पड़ीं थीं। जिस समय हमीरपुर, महोबा आदि पर विद्रोहियों का अधिकार हो गया था। विधवा रानी ने अपने सरदारों

के सहित जैतपुर को स्वतंत्र घोषित कर दिया। इस समय जैतपुर से समस्त अंग्रेज अफसरगढ़ भाग गये। रानी ने तुरंत तहसील पर जा कर खजाने पर अधिकार कर लिया।(95) इधर महोबा के सहायक मजिस्ट्रेट कार्न ने चरखारी जा कर राजा से जैतपुर, पनवाड़ी तथा राठ कस्बों का प्रबन्ध अपने हाथ में लेने के लिये कहा। राजा ने जैतपुर की रानी के विद्रोह का समाचार सुन कर तुरंत एक सेना रानी को बन्दी बनाने के लिये भेजी। रानी के पास कोई संगठित सेना नहीं थी, इसलिये वह विवश हो कर टीकम गढ़ रियासत चली गयी।(96) वहाँ के देशभक्त बुन्देला सरदार जिनका नेता देशपत था अपने साथियों सहित भूमिगत हो गया। तथा अपना गिरोह संगठित कर राठ, पनवाड़ी, महोबा, कैथ, कुलपहाड़ आदि कस्बों और गाँव में लूट-पाट आरम्भ कर दिया। उसका यह विद्रोह 1859 ई० तक चलता रहा।(97)

<u>राठ-पनवाड़ी</u> :- जनपद के राठ-पनवाड़ी कस्बे आस-पास है। राठ तहसील है तथा पनवाड़ी एक छोटा कस्बा है। 1857 ई० के विद्रोह को दबाने के लिये ब्रिटिश सरकार ने चारों ओर से जनपद हमीरपुर पर घेराव आरम्भ कर दिया परन्तु हमीरपुर में विद्रोह दब ही नहीं पा रहा था और उनको क्रांतिकारियों के मुख्य केन्द्र का सुराग नहीं लग पा रहा था। इस

बीच ब्रिटिश सेना के आ जाने से चरखारी राज्य से भी विद्रोही चारों ओर फैल गये। (98) इधर चरखारी राज्य को जनपद का एक बड़ा भाग सुरक्षा के लिये ब्रिटिश सरकार ने सौंप दिया। राठ में गुरसराँये की ओर से आया हुआ एक क्रांतिकारियों के दल ने आ कर उत्पात मचाना आरम्भ कर दिया इस दल का नेता मार्तण्ड राव तातिया था। ब्रिटिश फोर्स जो इस समय पनवाड़ी के पासही था तुरंत राठ की ओर चल दिया। 3 जून 1858 ई0 को ब्रिटिश फोर्स तथा क्रांतिकारियों का आमना-सामना राठ कस्बे में हुआ। इस मुठभेड़ में ब्रिटिश सेना को सफलता मिली मार्तण्ड राव इस मुठभेड़ में मारा गया तथा अनेक क्रांतिकारी भी मारे गये। बाद में मार्तण्ड राव का सर कलम (कट) कर गुरसराँये के राजा को ब्रिटिश अधिकारियों ने भिजवाया। (99) इधर हमीरपुर जनपद बराबर क्रांतिकारियों का गढ़ बनता जा रहा था। छत्तर सिंह अपने साथियों सहित गरौठा पार करके जिगनी होता हुआ हमीरपुर जनपद में पहुंच गया। परन्तु ब्रिगेडियर मुनसे राठ में पहले से ही मौजूद था। इस लिये छत्तर सिंह अपने साथियों सहित ना मालूम स्थान पर चला गया। इस बीच जनरल व्हिटलॉक ने पनवड़ी पहुंच कर चारों ओर सेना का जाल फैला दिया। इसका नतीजा यह निकला कि इस भाग से समस्त विद्रोही भाग कर जैतपुर के दक्षिण के जंगलों में चले गये। (100)

1858 ई० में समाप्त होते ही हमीरपुर जनपद में समस्त ब्रिटिश सेना फतेहपुर, भागलपुर लौट गयी। यह सुअवसर देख कर जनपद में 1859 ई० में एक बार फिर जंगलों और झाँसी में छुपे क्रांतिकारी जिनके नेता उमराव कुम्हार जालिम सिंह तथा देशपत थे जनपद के राठ, पनवाड़ी और जैतपुर इलाके में फिर सक्रिय हो गये। (191) इस प्रकार एक बार फिर हमीरपुर जनपद की जैतपुर और पनवाड़ी की स्थिति फिर बिगड़ गयी। समस्त क्रांतिकारियों के नेताओं ने स्थानीय जमींदारों को डराया-धमकाया तथा यह आदेश जारी किया की कोई भी जमींदार अपनी जमीन न जोतेगा न फसल उगायेगा आदेश की अवहेलना करने वाले को कठोर दंड दिया जायेगा। (192) लिहाजा इस क्षेत्र में एक बार फिर भय और आतंक का वातावरण बन उत्पन्न हो गया। जनपद की इस स्थिति की रिपोर्ट लिखते हुए मैजिस्ट्रेट फिलिंग ने लिखा कि – " हमीरपुर जनपद के जैतपुर और पनवाड़ी कस्बों की स्थिति आलोचनीय है, इस वर्ष फिर यहाँ बड़ी संख्या में विद्रोही एकत्रित हो रहे हैं जिससे यहाँ पर जान माल और सम्पत्ति सुरक्षित नहीं है, विद्रोही जिनकी संख्या सैकड़ों में है जो हथियारों से लैस हैं जिससे सरकारी कर्मचारी परेशान हैं" (193) बाद में फतेहगढ़ और कानपुर की हथियारबंद ( आर्म्ड पुलिस ) सैनिक दस्ते जैतपुर भेजे गये। जिससे एक बार विद्रोहियों और उनके नेताओं को जैतपुर छोड़ कर भूमिगत होना पड़ा। (194)

## अध्याय - III - क

## विद्रोह की समाप्ति

1859 ई० के अन्त तक समस्त बुन्देलखंड पर कम्पनी सरकार का अधिकार हो गया। परन्तु जिला हमीरपुर के जैतपुर एवं चन्देरी जिले के बालाबेहट परगने में छुट पुट घटनायें होती रहीं।(185) बुन्देलखंड का विद्रोह शांत करने का मुख्य श्रेय अंग्रेज अधिकारी एवं सेना नायक ह्यूरोज, जनरल व्हाइटलाक, कैप्टन माइर्न तथा कैप्टन मैक्लेमन तथा देशी रियासतें (ओरछा, दतिया, पन्ना, चरखारी, सिंधिया, समथर, छतरपुर एवं नागोद) को प्राप्त होता है।(186) कालपी के पतन के पश्चात तात्या टोपे, नवाब बांदा गोपालपुर में इकट्ठा हुये। उधर झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई की मृत्यु (17 जून 1858)(187) के पश्चात क्रांतिकारी संगठन छिन्न-भिन्न हो गए। ग्वालियर के विद्रोह को दबाने के लिये ह्यूरोज ग्वालियर आया और ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। बानपुर और शाहगढ़ के राजाओं ने आत्मसमर्पण कर दिया बाद उन्हें लाहौर भेज दिया गया।(188) तात्या टोपे और राव साहब ने एक बार फिर अंग्रेजों के प्रति विद्रोह किया। तब तक अंग्रेज सेना सम्पूर्ण बुन्देलखंड पर अधिकार कर चुकी थी। जिससे राव साहब एवं तात्या टोपे चारों ओर से दूसरे स्थान को भागना पड़ा परन्तु यह स्थिति अधिक दिनों तक नहीं रह पायी। राव पेशवा नाना साहब तो

लापता हो गये परन्तु तात्या टोपे पकड़े गए। बाद में अंग्रेजों ने उन्हें शिवपुरी में फाँसी पर चढ़ा दिया।(109) अंग्रेजी सरकार भारत के नरेशों को प्रसन्न रखने में अपना हित समझती थी। अतः ब्रिटिश सरकार ने सन् 1862 ई० के लगभग सभी नरेशों को गोद लेने की सनद प्रदान की। (1) बाद में झाँसी, जालौन, बाँदा, हमीरपुर और ललितपुर के जिले संयुक्त प्रदेश (यू०पी०) में शामिल कर लिये गये। सागर एवं दमोह पुनर्गठित मध्य प्रांत में शामिल कर दिये गये। (110)

विद्रोह की समाप्ति के बाद बुंदेलखंड के रियासतों की स्थिति :-

बुन्देलखंड में विद्रोह की समाप्ति के पश्चात विद्रोही राजाओं के राज्य अधिकार जब्त करके ब्रिटिश सरकार में मिला लिये गये और उन्हें कड़ा दंड दिया गया। जैतपुर का राज्य जब्त करके वहाँ की रानी को ओरछा राज्य के अन्तर्गत मय विद्रोही सेनापति लाला सबदर सिंह के साथ जतारा में शेष जीवन बिताना पड़ा। (111) बानपुर, शाहगढ़, उदयपुर, बाँदा, करवी के राज्य अंग्रेजी राज्य में मिला लिये गये। ओरछा राज्य को विद्रोह के समय सरकार का साथ देने पर तथा विद्रोह के दमन के उपलक्ष में तीन सौ रुपये का कर जो झाँसी राज्य की टहरौली परगने का देने पड़ते थे, समाप्त कर दिया गया। (112)

<u>पन्ना</u> :- विद्रोह की समाप्ति के पश्चात पन्ना राज्य में स्थिति सामान्य हो गई। इस पन्ना का शासक निरपत सिंह था इसकी मृत्यु सन् 1870 ई० में हुयी। मृत्यु के बाद उसके पुत्र रुद्र प्रताप सिंह पनना का शासक बना। (113)

<u>अजयगढ़</u> :- अजयगढ़ में विद्रोह शांत होने के बाद ब्रिटिश सरकार ने रनजोर सिंह को वहाँ का शासक नियुक्त किया। वह सदैव अंग्रेज सरकार का वफादार रहा। रनजोर कुशल शिकारी होने के साथ-साथ कुशल निशाने बाज भी था। उसकी मृत्यु के पश्चात भोपाल सिंह अजयगढ़ का शासक बना। (114)

<u>जागीर</u> <u>जासो</u> :- जसो जागीर विद्रोह के समय ईश्वरी सिंह राजा के पास थी। सन 1860 ई० में वह ईश्वरी सिंह की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र रामसिंह राज्य का उत्तराधिकारी बना। रामसिंह की मृत्यु के बाद अजयगढ़ राज्य के शासक ने जसो जागीर पर अपना अधिकार जताया परन्तु सरकार ने राम सिंह के पुत्र गोपाल सिंह को ही राज्य का असली वारिस माना। (115)

<u>बिजावर</u> :- विद्रोह के समय बिजावर के राजा भानु प्रताप सिंह ने ब्रिटिश सरकार की कचहरी पर अधिकार करते समय, एक तोप एवं 100

सैनिक सहायता के लिये भेजे थे इसलिये सरकार ने उसके साथ मित्रता का व्यवहार किया परन्तु भानु प्रताप अधिक विलास प्रिय होने के कारण वह कर्ज के भार से इस कदर दब गया कि 1897 ई० में सरकार को राज्य का प्रशासन अपने हाथ में लेना पड़ा। (116)

<u>जागीर</u> <u>बेरी</u> <u>एवं</u> <u>कदौरा</u> :- हमीरपुर जिले के विद्रोह के समय बेरी के राजा एवं कदौरा जागनी के राजा ने ब्रिटिश सरकार का ससैन्य सहायता की थी हमीरपुर के कलैक्टर टी० के० लायड का साथ दिया था इस कारण सरकार ने उनके साथ मित्रता का व्यवहार किया। (117) इस प्रकार बुन्देलखंड के सब जागीरों के राजा एवं जागीरदार धीरे-धीरे ब्रिटिश सरकार के आधीन होते चले गए एवं उनका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रहा।

## Foot Note

1. 1857 एस० एन० सेन पेज 41--44
2. ------------ तदैव--------------पेज 41-44
3. ------------ तदैव--------------
4. स्मारिका झाँसी रानी समारोह 1982 ई० के डा० श्याम नारायण सिन्हा के लेख से पेज 5
5. नैरेटिव इवेंट्स हमीरपुर डिस्ट्रिक्ट 1857 पेज 58 सिलिंग जी० एच० पेज 2
6. ------------ तदैव--------------
7. ------------ तदैव--------------
8. ------------ तदैव--------------
9. एनालिसिस आफ दि इण्डियन रिवाल्यूशन -- चिक एन० ए० पेज 599 भाग-6 1859 ई० में कलकत्ता में प्रकाशित
10. ------------ तदैव--------------
11. हमीरपुर कलैक्टेट प्री म्यूटिनी रिकार्डस फाईल सं० XIII पेज 175
12. ------------ तदैव--------------
13. ------------ तदैव--------------
14. नैरेटिव इवेंट्स हमीरपुर डिस्ट्रिक्ट पेज 8--9
15. ------------ तदैव--------------
16. ------------ तदैव--------------
17. ------------ तदैव--------------
18. हमीरपुर कलैक्टेट प्री म्यूटिनी रिकार्डस फाईल सं० XIII पेज 135
19. ------------ तदैव--------------
20. ------------ तदैव--------------
21. ------------ तदैव--------------
22. ------------ तदैव--------------
23. बुन्देलों का इतिहास - खरे, श्रीवास्तव पेज 163
24. मिलिटरी कन्सल्टेशन 2 सितम्बर 1859 पेज 144
25. बुन्देलों का इतिहास - खरे, श्रीवास्तव पेज 163-64
26. ------------ तदैव--------------
27. ------------ तदैव--------------
28. ------------ तदैव--------------

29. फारेन पालिटिकल कन्सल्टेशन 30 दिसम्बर 1859 पेज 643
30. ---------------- तदैव---------------- पेज 636
31. ---------------- तदैव---------------- 644
32. बुन्देलों का इतिहास – खरे, श्रीवास्तव पेज 163
33. फ्रीडम स्ट्रगल इन उत्तर प्रदेश रिजवी भाग–3 पेज 242
34. ---------------- तदैव----------------
35. नैरेटिव आफ इवेंट्स अटैन्डिग दि आउट ब्रेक आफ डिस्टरबेंसेस एण्ड दि रेस्टोरेशन आफ अथॉरिटी 1857–58 भाग–1 पेज 521 फारेन डिपार्टमेंट प्रेस कलकत्ता 1881
36. ---------------- तदैव----------------
37. ---------------- तदैव---------------- पेज 521
38. हमीरपुर कलेक्टर प्री म्यूटिनी रिकार्डस फाईल सं0 XIII पेज 135
39. ---------------- तदैव----------------
40. नैरेटिव आफ इवेंट्स अटैन्डिग दि आउट ब्रेक आफ डिस्टरबेंसेस एण्ड दि रेस्टोरेशन आफ अथॉरिटी 1857–58 भाग–1 पेज 521 फारेन डिपार्टमेंट प्रेस कलकत्ता 1891
41. ---------------- तदैव ----------------
42. नैरेटिव इवेंट्स हमीरपुर डिस्ट्रिक्ट पेज 8–9
43. दि ट्रीटी इंगेजमेंट एंड सनद्स – एचीसन भाग–5
44. बुन्देलों का इतिहास– खरे, श्रीवास्तव पेज 163
45. बुन्देलखण्ड एजेन्सी रजिस्टर फार 1858 सं0 41
46. नैरेटिव इवेंट्स हमीरपुर डिस्ट्रिक्ट पेज 520
47. ---------------- तदैव ----------------पेज 520
48. ---------------- तदैव --------पेज 520
49. ---------------- तदैव --------पेज 520
50. ---------------- तदैव --------पेज 521
51. नैरेटिव इवेंट्स झांसी डिवीजन पेज 12
52. ---------------- तदैव ----------------
53. नैरेटिव आफ इवेंट्स अटैन्डिग दि आउट ब्रेक आफ डिस्टरबेंसेस एण्ड दि रेस्टोरेशन आफ अथॉरिटी 1857–58 भाग–1 पेज 523
54. फ्रीडम स्ट्रगल इन उत्तर प्रदेश – रिजवी भाग–3 पेज 161–165
55. ---------------- तदैव ----------------पेज 237–239
56. ---------------- तदैव ----------------247

57. विद्रोही कानपुर – गोस्वामी वसुदेव पेज 62-66
58. दि सिपाय म्यूटिनी एण्ड रिवोल्ट 1857 – मजूमदार आर० सी० पेज 158-60
59. हमीरपुर कलेक्टेट प्री म्यूटिनी रिकार्डस फाईल सं० XIII पेज 38
60. कापेनगिंग एक्सपीरियन्सेस इन राजपूताना एंड सेन्ट्रल इंडिया ड्यूरिंग दि सेपरेशन आफ दि म्यूटिनी 1857-58 पेज 238-39
61. फ्रीडम स्ट्रगल इन उत्तर प्रदेश – रिजवी भाग--एए पेज 609-610
62. कलेक्शन आफ ट्रीटी ऐंगेजमेंट एंड सनद्स एचीसन भाग–II पेज 128
63. मिलेट्री कन्सलटेशन 2 सितम्बर 1859 नं० 114
64. हमीरपुर कलेक्टेट प्री म्यूटिनी रिकार्डस फाईल सं० XIII पेज 128
65. ---------------- तदैव ----------------
66. जालौन डिस्ट्रिक्ट प्री म्यूटिनी रिकार्डस – फाईल सं० 52
67. ---------------- तदैव ----------------
68. ---------------- तदैव ----------------
69. ---------------- तदैव ----------------
70. ---------------- तदैव ----------------
71. ---------------- तदैव ----------------
72. हमीरपुर कलेक्टेट प्री म्यूटिनी रिकार्डस – फाईल सं० XIII पेज 38
73. ---------------- तदैव ----------------
74. जालौन कलेक्टेट प्री म्यूटिनी रिकार्डस फाईल सं० 52
75. ---------------- तदैव ----------------
76. ---------------- तदैव ----------------
77. बांदा कलेक्टेट प्री म्यूटिनी रिकार्डस फाईल सं० XVIII पेज 29
78. ए हिस्ट्री आफ बुन्देलखण्ड – डब्लू० आर० पागसन पेज 105
79. तवारीखे बुन्देलखण्ड मुंशी श्यामलाल देहलवी जिल्द-3 पेज 54
80. बुन्देलों का इतिहास– भगवानदास खरे व भगवानदास श्रीवास्तव पेज 132
81. ए हिस्ट्री आफ बुन्देलखण्ड – पागसन पेज 120
82. दि ट्रीटी इंगेजमेंट एण्ड सनद – एचीसन भाग–5 पेज 49-50
83. ---------------- तदैव ------------भाग–3 पेज 278
84. ए हिस्ट्री आफ बुन्देलखण्ड" डब्लू आर पागसन पेज 120
85. ---------------- तदैव ------------पेज 120
86. हमीरपुर जनपद के प्री म्यूटिनी रिकार्डस फाईल सं० 13 पेज 125
87. ---------------- तदैव ------------

88. बुन्देलों का इतिहास खरे-श्रीवास्तव पेज 163
89. बुन्देलखंड एजेन्सी रजिस्टर फार 1858 पेज 41
90. तवारीखे बुन्देलखण्ड मुंशी श्यामलाल देहलवी जिल्द 3 पेज 41
91. हमीरपुर जनपद प्री म्यूटिनी रिकार्ड्स फाईल सं0 13 पेज 125
92. ---------------- तदैव ------------
93. ---------------- तदैव ------------
94. ---------------- तदैव ------------
95. बुन्देलों का इतिहास - खरे, श्रीवास्तव पेज 163
96. ---------------- तदैव ------------
97. जालौन जनपद प्री म्यूटिनी रिकार्ड्स फाईल सं0 52
98. फारेन पौलिटिकल कन्सलटेशन 31 दिसंबर 1858 पेज 2140
99. ---------------- तदैव ------------
100. नैरेटिव इवेन्ट्स झांसी डिवीजन पेज 21
101. जालौन जनपद प्री म्यूटिनी रिकार्ड्स फाईल सं0 52
102. हमीरपुर जनपद प्री म्यूटिनी रिकार्ड्स फाईल 13 पेज 38
103. ---------------- तदैव ------------
104. जालौन जनपद प्री म्यूटिनी रिकार्ड्स फाईल सं0 52
105. दि रिवोल्ट आफ 1857 इन बुन्देलखण्ड श्यामनारायण सिन्हा पेज 182
106. बुन्देलखण्ड एजेन्सी रिकार्ड्स आफ 1857 फाईल सं0 2
107. दि रानी आफ झांसी- डी0 वी0 तहमनकर पेज 168
108. बुन्देलों का इतिहास- खरे एवं श्रीवास्तव पेज 170
109. ---------------- तदैव ------------पेज 171
110. ---------------- तदैव ------------पेज 172
111. कानपुर कलेक्ट्रेट प्री म्यूटिनी रिकार्ड्स
112. ओरछा गजेटियर पेज 83
113. बुन्देलखण्ड एजेन्सी रजिस्टर फार 1858 फाईल सं 41
114. ---------------- तदैव ------------पेज
115. बुन्देलखण्ड का इतिहास खरे व एजेन्सी पेज 174-174
116. बुन्देलखण्ड एजेन्सी रजिस्टर फार 1859 फाईल सं0 41
117. नैरेटिव इवेंट्स आफ हमीरपुर डिस्ट्रिक्ट पेज 10

## अध्याय - 4

## 1857 ई० के विद्रोह के पश्चात जिले की गतिविधियाँ -

स्वतंत्रता के लिये आम तौर पर सशस्त्र संघर्ष भारतीयों की परंपरा रही है। 1857 ई० की महान क्रांति इस परम्परा की एक कड़ी थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के इस प्रथम प्रयास को यद्यपि अंग्रेजों द्वारा दबा दिया गया था, परन्तु यह घटना भारत के ब्रिटिश इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना के रूप में याद की जाती रहेगी। विद्वानों और इतिहासकारों ने इस महासंग्राम को कहीं विद्रोह कहीं गदर और विप्लव कह कर पुकारा गया, परन्तु वास्तविकता यह है कि इस देश से विदेशी शासकों को बाहर निकालने का प्रथम प्रयास था। (1) इधर 17 जून 1858 ई० में झाँसी की रानी की मृत्यु के पश्चात क्रांतिकारी संगठन एकदम बिखर सा गया था। बुन्देलखंड में अनेक क्रांतिकारी नेताओं ने अपने आप को भूमिगत कर लिया था। सन् 1857 ई० के विप्लव के समाप्त हो जाने के पश्चात महारानी विक्टोरिया यानि ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन को समाप्त कर भारत का शासन प्रबंध अपने हाथों में ले लिया था। इसके साथ ही महारानी विक्टोरिया ने भारत के स्थानीय राजाओं के प्रति यह महत्वपूर्ण घोषणा करते हुए कहा " कि हम अपने संधियों इकरारों को स्वीकार करते हैं जो ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा अथवा उसकी ओर से किये गये हैं तथा

हम उन पर पूर्ण रूप से वचन बद्ध हैं। हम यह भी चाहते हैं कि वे भी उन पर चलें। हम अपने वर्तमान इलाकों में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं चाहते हैं। हम देशी राजाओं के अधिकार और गौरव तथा प्रतिष्ठा को अपने समान समझेंगे। (2) महारानी विक्टोरिया की 1 नवम्बर 1859 ई० की घोषणा से स्थानीय राजाओं को एक नया जीवन मिला वे ब्रिटिश सरकार की ओर से संतुष्ट हो गए कि अब उनका राज्य छीना नहीं जायेगा। स्थानीय राजा इस आदेश जिसे "पैरामाउंट पावर" कहा जाता था के आदेश के द्वारा अंग्रेजों को अपना मित्र और शुभेच्छु मानने लगे तथा उनके सहयोगी बन गये। सन् 1862 ई० के कानपुर दरबार में गोद निषेध (डेकट्राइन आफ लेप्स) को समाप्त कर दिया गया, जिसके तहत स्थानीय राजाओं को निसंतान होने पर उत्तराधिकारी गोद लेने का अधिकार प्राप्त हो गया। (3) इधर हमीरपुर जनपद में स्थिति इस प्रकार से थी :-

यह रियासतें ब्रिटिश सरकार की वफादार थी चरखारी (राजा रतन सिंह) कदौरा बावनी (नवाब मोहम्मद हुसैन खान) सरीला एवं बेरी अलीपुरा जैतपुर, जागीर ब्रिटिश सरकार ने अपने अधिकार में ले ली थी। (4) इस बीच 19 मार्च 1858 ई० में हमीरपुर जनपद को झाँसी सम्भाग में शामिल कर दिया गया तथा कदौरा बावनी रियासत को जालौन जनपद में

शामिल कर दिया गया। (5) परन्तु उपरोक्त प्रशासन में सुधार के बावजूद भी हमीरपुर जनपद में शांति व्यवस्था कायम न हो सकी जनपद का जैतपुर एवं इसके आसपास का क्षेत्र में बराबर सरकार प्रति अशान्त होती रही। (6)

## अध्याय -4 (क)

### स्वतंत्रता की भावना का जारी रहना:-

तत्कालीन सरकारी सूचनाओं से इसकी पुष्टि होती है :- नव नियुक्त हमीरपुर जनपद के जिलाधीश जी. ए. फ्रीलिंग जनपद से सम्बंधित आख्या (रिपोर्ट) शासन को भेजी थी उसमें लिखा था कि जनपद के महोबा इलाके के ताल्लुकेदारों तथा जमींदारों ने अपनी अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध विद्रोह कर दिया है। यही स्थिति जैतपुर की भी है।(7) उपरोक्त फ्रीलिंग ने 18 मार्च 1858 में भेजी थी एक अन्य आख्या उसने 28 नवम्बर 1858 ई0 को भेजी थी जिसमें लिखा था कि " इस जिले के अनेक क्षेत्र जैसे राठ, जैतपुर आदि में विद्रोहियों ने अपनी सरकार कायम कर ली है। तथा राठ, पनवाड़ी और जैतपुर में स्थायी रुप में हथियार बन्द पुलिस (आर्मस पुलिस) अथवा मिलीटिरी तैनात की जाए" यह गोपनीय आख्या उत्तरी पश्चिमी प्रांत के सुपरिन्टेन्डेन्ट कैप्टेन पिन्के को भेजी थी। (8) उपरोक्त सूचनाओं रकी पुष्टि तत्कालीन बाम्बे स्टैन्डर्ड समाचार पत्र के इस समाचार से भी होती है। जो श्रीमती हैनरी डबरले ने अपनी पुस्तक में लिखा है। - उन्होंने ने लिखा है कि महारानी विक्टोरिया की क्षमादान की घोषणा के बावजूद भी उत्तरी पश्चिमी प्रदेशों में क्रांतिकारी

गतिविधियों पर कोई असर नहीं हुआ क्योंकि इन प्रांतों में देशपत तथा बख्त सिंह और कुंवर उमराव गंगार ने अपने दल बना रखे हैं और सरकार के विरुद्ध बराबर विद्रोह कर रहे हैं। जबकि कुलपहाड़ कस्बे में भारी सैनिक जमाव है। (9) उपरोक्त तथ्यों के क्रम में 1872 ई0 में गवर्नर जनरल के एजेन्ट (प्रतिनिधि) की वह आख्या भी ध्यान देने योग्य जो उसने इस जनपद की जनता के बारे में लिखा था :-

" घाटियों जंगलों तथा पुरानी गढ़ियों में इस क्षेत्र में हजारों की संख्या में ऐसे लोग रहते हैं, जो कि कभी भी अवसर मिला या ब्रिटिश सरकार की सुरक्षा में तनिक कमी आयी तो वह इन पहाड़ियों पर पुनः छापामार युद्ध करना आरम्भ कर देंगे। (10) उपरोक्त प्रमाणित तथ्यों से तथा समकालीन ऐतिहासिक स्त्रोतों से यह बात उभर कर सामने आती है कि जब समस्त भारत में विद्रोह समाप्त हो चुका था तब बुन्देलखंड में विशेष रूप से हमीरपुर जनपद में विद्रोही सक्रिय थे तथा इस जनपद में सरकार विरोधी कार्यवाही जारी थी। तथा इनके प्रमुख नेता थे दीवान देशपत, बख्त सिंह, उमराव गंगार तथा काशी नाथ (सभी जनपद हमीरपुर के) बरजोर सिंह, दौलत सिंह, छत्तर सिंह, मनसाराम, रनमत सिंह आदि विद्रोह जालौन, झाँसी दतिया तथा ग्वालियर जिले में सक्रिय थे। (11) अन्य

विद्रोही जो जनपद के आसपास सक्रिय थे वे निम्न थे :- मारतंड राव (राठ में मुठभेड़ में मारा गया 3 जून 1858) सामन्त सिंह, धीर सिंह, पंजाब सिंह (रीवां) देवी सिंह, गंभीर सिंह, छत्तर सिंह (इनका क्षेत्र राठ के उत्तर पश्चिम में धसान नदी के किनारे मऊरानीपुर तक था कर्नल लेडिल ने से इनकी अनेक मुठभेड़ हुयी थी। (12) इस प्रकार 1857-58 ई0 विद्रोह के बाद विशेष रुप से हमीरपुर जनपद का जैतपुर कस्बा विद्रोह के आग में फिर से जलने लगा। देशपत, बख्त सिंह, अमराव खंगार ने जैतपुर के बघौरा कस्बे का डंगाई (जंगली) क्षेत्र को अपना केन्द्र बना कर सरकार के विरुद्ध छापामार युद्ध प्रारम्भ कर दिया उनके साथ लगभग 1500 से 2500 तक विद्रोही एकत्रित थे। (1)

5 जनवरी 1859 ई0 में कैप्टन सेवर्स ने मिलिटरी पुलिस के साथ बघौरा ग्राम जो क्रांतिकारियों का मुख्य केन्द्र था, छापा मारा। इस अचानक हमले से विद्रोही दल को काफी हानि हुयी तथा उनके अनेक साथी मारे गए कैप्टेन सेवर्स को वहाँ से काफी मात्रा में गोला बारूद प्राप्त हुआ।(14)

यह संघर्ष 1859 ई0 के अंत तक चलता रहा और इस संघर्ष को स्थानीय जनता का समर्थन भी प्राप्त था। बाद में ब्रिटिश सरकार का फौजी अमला इस जनपद में बढ़ता गया तथा मुठभेड़ों में अनेक क्रांतिकारी नेता मारे

गये। बाद में 1859 ई0 में यह संघर्ष तो समाप्त हो गया परन्तु यह विद्रोह किसी भी प्रकार हुआ हो और चाहे कितनी कम समय के लिये हुआ, पर यह आधुनिक भारत के इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। इस प्रथम स्वतंत्रता संग्राम ने अनेक प्रभाव छोड़े जिसमें पहला यह था कि ब्रिटिश शासकों और आम भारत वासियों के मध्य उनफरत की खाई गहरी होती चली गयी। काफी लम्बे समय तक 1857 ई0 के संघर्ष की घटनाओ की चर्चा जनपद हमीरपुर जनपद के गाँव, कस्बों एवं नगरों में होती रही थी, जिनमें प्रमुख थे कुलपहाड़, राठ, हमीरपुर, मौदहा जैतपुर आदि थे। अंग्रेजों की जुल्मों-सितम की दास्ताने समस्त जनपद में दोहराई जाने लगीं। कानपुर, दिल्ली एवं लखनऊ की घटनायें एवं झाँसी की रानी और तात्या टोपे की शहादत ने जनपद में एक नई चेतना नई विचारधारा को जन्म दिया। विद्रोह की विफलता से जनता को यह अहसास हुआ कि संगठन और उचित तैयारी के बिना ब्रिटिश सरकार से अथवा साम्राज्य से टक्कर नहीं लिया जा सकता। इस लक्ष्य को लेकर जनपद में शिक्षित वर्ग विशेष रूप से युवा वर्ग गुप्त रूप से पुनः संगठन में लग गया। इस बीच 28 दिसम्बर 1885 ई0 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना बम्बई में की गई(15) बुन्देलखंड डिवीजन के मुख्यालय झाँसी में शीघ्र ही 1886 ई0

में अविनाशपति घोष कांग्रेस के आन्दोलन में भाग लेने इलाहाबाद गये। (16) हमीरपुर जनपद में भी शीघ्र ही कांग्रेसी विचार धारा के लोग एक मंच पर एकत्रित होने लगे इसका मुख्य केन्द्र कुलपहाड़ बना। (17) सन् 1915-16 ई० गांधी जी के राजनीति में प्रवेश के साथ ही जनपद में गांधी वादी विचारधारा पनपने लगी। कुलपहाड़ में प्रथम कांग्रेस कमेटी की स्थापना हुयी जिसका संचालन पं० नन्द किशोर भरजोरिया और उनके पुत्र जगन्नाथ प्रसाद ने किया। कन्हैया लाल एवं लक्ष्मी प्रसाद आदि प्रमुख लोग भी इसमें शामिल हुए। (18) बाद में जनपद के राठ तहसील और मगरौठ ग्राम भी इसके केन्द्र बने। (19) इसके साथ ही स्वतंत्रता की भावना जो कि 1857 ई० से प्रारम्भ हुयी बराबर जारी रही।

में श्रीवासपति घोष कांग्रेस के आन्दोलन में भाग लेने इलाहाबाद गये । (16) हमीरपुर जनपद में भी शीघ्र ही कांग्रेसी विचार धारा के लोग एक मंच पर एकत्रित होने लगे इसका मुख्य केन्द्र कुलपहाड़ बना । (17) सन् 1915-16 ई० गांधी जी के राजनीति में प्रवेश के साथ ही जनपद में गांधी वादी विचारधारा पनपने लगी । कुलपहाड़ में प्रथम कांग्रेस कमेटी की स्थापना हुयी जिसका संचालन पं० नन्द किशोर अरजरिया और उनके पुत्र जगन्नाथ प्रसाद ने किया । कन्हैया लाल एवं लक्ष्मी प्रसाद आदि प्रमुख लोग भी इसमें शामिल हुए । (18) बाद में जनपद के राठ तहसील और मगरौठ ग्राम भी इसके केन्द्र बने । (19) इसके साथ ही स्वतंत्रता की भावना जो कि 1857 ई० से प्रारम्भ हुयी बराबर जारी रही ।

## अध्याय-4 (ख)

### ब्रिटिश सरकार की बदले की नीति :-

सन 1857 ई० की क्रांति के पश्चात अपना सड़ दमनचक्र चलाया कि जिससे चंगेज और हलाकू को भी मात कर दिया। बदले की भावना तथा नृशंसता की इस नीति का वर्णन पाश्चात्य विद्वान जी. टी. गैरट ने अपनी पुस्तक में इस प्रकार किया है :-

" अंग्रेजों ने गदर के बंदियों को बिना मुकदमा चलाये फाँसी पर लटका दिया। फाँसी से पहले मुसलमानों पर सुअर एवं हिन्दुओं पर गाय की चर्बी मली गयी दिल्ली और उसके आस-पास के गाँवों में हजारों लोगों का सामूहिक रूप से पेड़ों पर फाँसी पर लटका दिया गया। औरतों को बेइज्जत किया गया। गाँव के गाँव जला दिये गये। उद्योग धंधे नष्ट कर दिये गये खड़ी फसलें जला दी गयीं।(29) इधर बुन्देलखंड में भी ब्रिटिश सरकार ने जनता के साथ बदले की नीति अपनाना आरंभ कर दी। प्रत्येक गाँव नगर एवं कस्बों में बिना किसी वारंट के घर-घर की तलाशी ली गई अगर किसी घर में कोई अस्त्र शस्त्र निकलता तो उसे जब्त कर दिया जाता और गृह स्वामी से सख्ती से पूछताछ की जाती किसी-किसी को थाने बुला कर यातनायें दी जातीं थी कुछ सेंगर ठाकुर की गाढ़ियों फोड़ दी

अथवा जला दी गई एवं जागीर जब्त कर ली गई उन पर आरोप था कि उन्होंने क्रांतिकारियों को सहायता प्रदान की थी इन जागीरदारों में प्रमुख था बल्ला सिंह इसकी जागीर जब्त कर ली गई तथा तरसौल एवं जय सिंहपुरा (यह गढ़ियाँ अब जालौन जनपद में है) स्थित गढ़ियाँ जला दी गई (21) 18 मार्च 1858 ई० को हमीरपुर को झाँसी साम्राज्य में शामिल कर लिया गया तथा जी० एस० फ्रीलिंग को यहाँ का डिस्ट्रिक्ट कलैक्टर नियुक्त किया गया जिससे तुरन्त ही यह रिपोर्ट दी की हमीरपुर जिले के महोबा के तालुकदारों तथा जमींदारों ने अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध विद्रोह कर दिया एवं यही स्थिति जैतपुर की भी थी। 20 नवंबर 1858 ई० को हमीरपुर जिले के क्रांतिकारियों के बारे में झाँसी के सुपरिन्टेन्डेन्ट पिंकने ने सेक्रेटरी उत्तर पश्चिम प्रांत को एक पत्र के द्वारा सूचित किया (22) यद्यपि 1858 ई० का विद्रोह दबा दिया गया है लेकिन स्वतंत्रता आंदोलन की चिंगारी इस जनपद में बराबर सुलगती रही। 1859 ई० में शांति व्यवस्था स्थापित हो जाने के पश्चात अंग्रेजी शासन ने अपने इरादे स्पष्ट करने प्रारम्भ किया। परिणाम स्वरूप यह नीति बनाई गई कि इस जनपद का आर्थिक शोषण कर अधिक से अधिक सम्पदा इंग्लैण्ड भेजी जाये। इस नीति के अनुसरण के पीछे निम्न उद्देश्य थे आर्थिक उत्पीड़न से जालौन

सम्भाग में गरीबी एवं बेकारी और लोग अधिकांश समय अपने जीवन निर्वाह हेतु चिन्तित एवं प्रयत्नशील रहेंगे। फलतः उन्हें विद्रोह अथवा क्रान्तिकारी गतिविधियों में शामिल होने का अवसर नहीं मिल सकेगा। ऐसा करने से ब्रिटिश शासन का हित सुरक्षित रहेगा। आर्थिक शोषण की इस नीति से अधिक से अधिक धन विदेशी सरकार को प्राप्त हो सकेगा। आर्थिक मदद दे कर एवं मानवीय सेवाओं के बल पर ये योरोपीय मिश्नरी इस पिछड़े क्षेत्र में ईसाईयत को प्रसार कर सकेंगे और इस प्रकार एक ऐसी प्रजा का निर्माण भी करेंगे जो अंग्रेजों के प्रति वफादार हो सकेगी. इन संदेह से बुन्देलखंड के लोगों को अंग्रेजों को हमेशा संदेह की दृष्टि से देखते थे अतः आवश्यकता इस बात की थी कि इस सम्भाग में एक ऐसी प्रजा का निर्माण किया जाये जो धर्म की दृष्टि से अंग्रेजों के समीप हो यही कारण था कि 1859 ई0 के पश्चात अंग्रेज अधिकारियों ने जालौन जनपद का आर्थिक शोषण करते हुये यहां के किसानों से वसूल की जाने वाली राजस्व की दरों में भारी वृद्धि कर दी एवं यहां हस्तशिल्प एवं लघु उद्योगों को कर लगा कर एक सुनियोजित नीति के अन्तर्गत नष्ट कर दिया। (23) अंग्रेजी शासक एक विदेशी शासक था और अंग्रेजों का उद्देश्य बुन्देलखंड के जिलों से अधिक राजस्व वसूल करना था। प्रायः सैनिक अधिकारी भी

देश का राजस्व निर्धारण करते थे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन दरों कि निर्धारण में एक जैसी नीति नहीं अपनायी गयी। राजस्व की दरें अधिक कठोर थीं और ऐसे जान बूझकर किया गया। क्योंकि अंग्रेज अधिकारी अधिकारियों को प्रसन्न करना चाहते थे यह कार्य कैडेल ने कई गाँवों का अनेक भागों में विभाजन किया विभिन्न वर्ग बने थे और उनके राजस्व का निर्धारण उन वर्गों के आधार पर किया गया था वहीं दूसरी और कर्वी सब डिवीजन के बन्दोबस्त अधिकारी पैटरसन ने 1881 ई० में कर्वी के राजस्व देश का निर्धारण विभिन्न किस्म के भूमि के आधार पर किया। (24) राजस्व की दरें अत्यधिक कठोर थीं। 1883 ई० में बुन्देलखंड एजेंन्सी का कार्यभार ग्रहण करते ही जानडेली ने बांदा के लिये राजस्व की ऊंची दरें निर्धारित की थीं। उसकी पुष्टि इसी तथ्य से होती है कि एक ही वर्ष के बाद 1885 ई० में जानडेली को इन दरों कमी करनी पड़ी। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि डेली ने उच्च अधिकारियों को पत्र लिखकर उसके क्षेत्र के किसानों की आर्थिक कठिनाईयों की ओर सरकार का ध्यानाकर्षण किया और दरों में कमी करनी चाही थी किन्तु उसके सुझाव को अमान्य कर दिया और इसी कारण पद से हटा दिया गया था। इस दुखद घटना का अंत यहीं नहीं हुआ बल्कि बाद में आने वाले राजस्व

अधिकारी के पुनः वृद्धि कर दी(35) झाँसी और ललितपुर जिले की भी यही स्थिति रही ललितपुर में हुये बंदोबस्त भी असमान कठोर थे। बंदोबस्त अधिकारी पिंकने ने लिखा था कि विगत वर्षों से किये गये राजस्व प्रबन्ध की दरों के असमानताओं के कई उदाहरण दिये हैं। उसने लिखा है कि जिन गाँवों को बुन्देला ठाकुरों के प्रभाव से वहाँ राजस्व की दरें कम रखी गयीं हैं ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार ने बुन्देला ठाकुरों को प्रसन्न करने के लिये असमान दरें निर्धारित की थी ताकि वे सरकार का सहयोग कर सके। इस प्रणाली से परिश्रमी किसानों को अवश्य नुकसान पहुंचा उनका उत्साह वर्धन के स्थान पर राजस्व की दरें कठोर कर सरकार ने परिश्रमी किसानों को हतोत्साहित किया। जालौन जिले के राजस्व प्रबन्ध भी लगातार गाँवों के परिवर्तन तथा उनके क्षेत्रफल के परिवर्तन के साथ-साथ प्रभावित हो रहा। ग्वालियर रियासत से मिलने वाली सीमा पर बसे गाँव वालों को हमेशा यह चिन्ता बनी रहती थी। कि वे जालौन जिले में रहेंगे अथवा ग्वालियर जिले को दिये जायेंगे।(37) ठीक वही अनिश्चय की स्थिति जालौन तथा झाँसी की सीमापर बसे गाँवों की थी। किसी भी समय पूरे जिले का एक साथ बन्दोबस्त नहीं किया गया कच्छवागढ़ परगना जो बन्दोबस्त हुआ था उसकी

इतनी ऊँची थी कि (1848-49) में इसमें संशोधन करना पड़ा। ठीक यही स्थिति अन्य परगनों की थी। इसके साथ ही मार्च 1853 में परगना महोबा और जैतपुरा जो जालौन जिले के अन्तर्गत था उन्हें हमीरपुर को हस्तांतरित कर दिया गया। इसके बदले जालौन जिले को कालपी और पुंछ के परगने मिले 1851 में मोठ, चिरगाँव और मरौंडा तथा 1856 में भाण्डेर के परगने जालौनसे झाँसी जिले को दे दिये गये (27) 1858 में भी आरंभिक ने इसी प्रकार के परिवर्तन किये गये निःसंदेह इस परगनों में बसे हुये गाँवों का हमेशा अनिश्चय की स्थिति का सामना करना पड़ा हमेशा वे मनोवैज्ञानिकविवाद में बने रहे। जालौन के भी राजस्व प्रबंध अपना पूर्ण समय पूरा नही कर सके इनके प्रबन्ध भी बुन्देलखंड के अन्य जिलों की तरह असमान तथा कठोर थी। प्राकृतिक आपदाओं ने भी इसे ठीक प्रकार से नही चलने दिया। 1851 में वाल्क मैन ने यह अच्छी तरह स्पष्ट किया था। कि गाँव में भूमि की बिक्री तेजी से हो रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि खेती से लोगों को लाभ नहीं हो रहा था। फलतः सरकार को कुछ गाँवों को अपने नियंत्रण में लेना पड़ा अधिकांश जमींदार परेशान तथा भय से त्रस्त थे। यदि उनके दाता उनकी सहायता न करे तो वे अपनी भूमि के लिये बीज ही नहीं

खरीद सकते थे। केवल जानवरों के अलावा उनके पास अन्य कोई व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं है। ब्राउन ने 1855 में जालौन जिले की स्थिति का वर्णन करते हुये पुनः लिखा है। कि इस जिले का 1/6 भाग खेती की परिधि से बाहर हो गया है।(29) अकाल तथा प्राकृतिक आपदाओं से लोग खेती करना छोड़ रहे हैं राजस्व की दरों से भी लोगों पर बुरा प्रभाव पड़ा। मैडम स्कीने जो 1855 में जालौन सुपरिन्टेन्डेन्ट था। उसने भी उसी मत की पुष्टि की है। तथा लिखा है "इस समय इन जिलों में जो बन्दोबस्त चल रहा था। उनकी दरें इतनी ऊंची थी कि जिसका कुल परिणाम जमीदारों पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है" यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि कठोर राजस्व नीति के कारण बुन्देलखण्ड में 1857 के विद्रोह का प्रमुख कारण नहीं। निःसंदेह ब्रिटेन की आर्थिक सिद्धांत के लिये राजस्व का कठोर होना उत्तरदायी था। राजस्व की कठोर दरों के कारण लोगों को अपनी भूमि महाजनताओं के हाथ में गिरवी रखनी पड़ी धीरे--धीरे स्थिति इतनी विषम हो गई कि सरकार को बुन्देलखंड हस्तान्तरण द्वारा पास करना पड़ा जिसमें यह व्यवस्था की गयी कि यदि कोई किसान अपनी भूमि बेचना चाहता है तो उसकी खरीद वही व्यक्ति कर सकता था जो स्वयं कृषि कार्य कर रहा हो। निःसंदेह राजस्व की

कठोर करों ने जालौन जिले का संपूर्ण आर्थिक पिछड़ापन बनाये रखा और यहां के लोगों ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जो जन आंदोलन उभड़ा उसका कारण इस क्षेत्र का अंग्रेजों द्वारा शोषण था। इस प्रकार आर्थिक और सामाजिक शोषण, भूमि हस्तांतरण नीति, ईसाईयत को बढ़ावा, पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार सरकारी सेवाओं में भेदभाव, भारतीयों के लिये नये कानून पर अमल, देशी राजाओं की रियासत पर कब्जा, मालगुजारी की जबरन वसूली तथा देशी उद्योग धंधों का विनाश सरकार की बदले की कार्यवाही थी। (29)

## अध्याय - 4 / ग

### अन्य दमनात्मक तरीके :

1858 ई० से ले कर 1947 ई० अर्थात स्वतंत्रता प्राप्ति तक ब्रिटिश सरकार समस्त बुन्देलखंड के साथ-साथ हमीरपुर जनपद पर अपना दमनात्मक तरीके बराबर बनाये रखा। दमन के यह तरीके थे, आर्थिक शोषण, कुटीर उद्योगों का नाश, धार्मिक प्रतिबंध आदि थे।

### आर्थिक शोषण :

अंग्रेजी शासन काल में पूरे ही जिसमें बुन्देलखंड भी शामिल था। ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा इंगलैंड में हो रहे उत्पादन तथा व्यापारिक वस्तुओं को इस क्षेत्र में प्रवेश करवाया गया अतः शीघ्र ही विदेशी कपड़े, लोहे के सामान तथा अन्य जरूरत की लगभग सभी चीजें मैनचेस्टर, लिवरपूल, लंकाशायर, बरमिंघम आदि औद्योगिक नगरों से लेकर पूरे देश की ही भाँति बुन्देलखंड में भी भेजी गयीं, जब यह वस्तुयें स्थानीय बाजारों में आयीं तो इस बात की आवश्यकता महसूस हुयी की इन वस्तुओं की बिक्री के लिये स्थानीय उद्योग धंधों को समाप्त किया जाये, जिससे देशी वस्तुयें बाजार में न आ पायें और जनता बाजार से विदेशी वस्तुयें ही खरीदने पर मजबूर हो जाये। सरकार की इस नीति का परिणाम यह हुआ कि स्थानीय उद्योग बन्द होने लगे जिससे बेकारी, भुखमरी आदि बढ़ने लगी जनता की गाढ़ी

पसीने की कमाई विदेश जाने लगी। जनता भी विदेशी वस्तुएं खरीदने पर मजबूर थी।(30) इधर 1803 ई0 से सन् 1830 ई0 तक की बीच का समय अकालों, सूखों, अतिवर्षा और तूफान-बवन्डरों का क्रम सा चलता रहा था। काँस के असाधारण रूप से फैल जाने से उपजाऊ भूमि नष्ट होती गई और उसे जोता नहीं जा सका। महाजनियों अलग आफत- बरपा कर रही थी। फलस्वरूप पूरे बाँदा एवं हमीरपुर जनपद में आम "दिवालियापन" की स्थिति उत्पन्न हो गयी और गाँव वेहाल उजड़ने लगे थे।(31) इधर इन सालों में मालगुजारी की भी जबरन वसूली की गई। अगले दो तीन वर्षों में भी स्थिति वैसे ही खराब रही। सरकारी माल गुजारी का भुगतान करने में असमर्थ होने के कारण पुराने काश्तकारों और जमींदारों ने अपनी-अपनी खेतियां जमींदारियां छोड़ दी और इस प्रकार 588 जमादारियां और जायदादें सीधे सरकारी नियंत्रण में लेली गयीं। इन जमींदारियों का आय जनपद की कुल माल गुजारी की दो तिहाई से भी अधिक थी।(32) सन् 1833-34 ई0 के वर्षों में भी स्थिति सुधरी नहीं। इसलिए सन् 1837-38 ई0 में मालगुजारी की वसूली कम कर दी गयी। इस से कुछ हालत बेहतर हुयी और सन् 1842-43 ई0 तक की रकम में सरकार ने फिर बढ़ोत्तरी कर दी। परन्तु अचानक 1843-48 ई0 तक के पाँच

सालों में जिले की आर्थिक स्थिति फिर बद से बदत्तर हो गयी इस कारण माल गुजारी फिर कम कर दी गयी। फिर भी हालात ठीक होने की जगह बिगड़ते चले गये। मालगुजारी न दे पाने के कारण लोगों ने अपनी जमीने बेचना शुरू कर दी। (33) इधर बहुत से बिगड़ती और दिवालियापन की स्थिति में तथा मालगुजारी न देने पद तथा सरकार की जबरन वसूली के कारण अपनी जमींदारी छोड़ कर भाग गये बाद में सरकार ने उन्हें नीलामी पर चढ़ा कर ठेके पर दे दिया। इस प्रकार बांदा और हमीरपुर जनपद में 28 जमींदारियों को ठेके पर दे दिया गया। बांदा के सिहड़ा तथा हमीरपुर के सुमेरपुर परगनों में पिछले वर्षों में अत्याधिक मालगुजारी बढ़ा देने पर और जहरीली घास कांस की खेतों में उग आने से जनपद के समस्त खेतिहर लोग दुखी और परेशान थे। इधर अनेक छोटे-बड़े जमींदार मालगुजारी न देने के कारण सरकार का तथा साहूकारों का कर्जा न चुका पाने के कारण उनकी भी जमींदारियों की बिकने की नौबत आ गयी। अकेले सिहुड़ा बांदा और सुमेरपुर जिला हमीरपुर में 133 जमींदारियां थीं इन में से 183 जो आधे से भी अधिक थीं. इस प्रकार खानदानी जमींदारों के हाथों से निकल कर भूमि के सट्टेबाजों साहूकारों और ऐसे ही मुनाफाखोरों तथा सूदखोरों के पास पहुंच गई। (34) उदाहरणार्थ सन

1857 ई० के सिपाही विद्रोह के समय केवल बांदा जिले की आर्थिक व्यवस्था पर गुजराती सेठ श्यामकरण किशनचंद, स्थानीय खजांची का पुत्र सेठ उत्तम राम सेठ अवधकरण, फतेहपुर दोआब के रस्तोगी बनिये, स्थानीय नाजिर जादोराम कायस्थ और तिरोही वंशानुगत कायस्थ कानूनगो पतवारी आदि छा गये थे।(35) इन्हें खेती किसानी और भूमि विकास के एवं सुधारों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। किसानों और खेतिहर मजदूरों से उन के संबंध वहीं तक थे, जहां तक वे उन का शोषण कर अपनी तिजोरियां भर सकते थे। इधर हमीरपुर जनपद के इलाकों के किसान अनपढ़ होने के कारण लिखा-पढ़ी, मुकदमों और अदालती तथा तहसीलों कार्यवाही से भय खाते थे, जिससे पटवारियों, कानूनगो और तहसीलदारों की बन आती थी, वे साहूकारों से मिल कर मनमानी कागजाती कार्यवाही अपने पक्ष में करा लेते थे (36) यही कारण था कि सन् 1857 ई० के विद्रोह के समय हमीरपुर जनपद में ही नहीं अपितु बांदा, झांसी जनपद में भी विद्रोह के समय विद्रोहियों ने पहले तहसीलों और सरकारी खजानों से जेलों और सरकारी खजानों से जेलों और अदालतों से समस्त कागजात जलाकर नष्ट कर दिये थे जिससे सरकार कोई ऋण उन पर न रहे। हमीरपुर जनपद में विद्रोहियों ने खजाना लूटने (14 जून 1857 ई०) के

साथ समस्त कागजात भी जला दिये थे। (हमीरपुर जनपद भी म्यूटिनी रिकार्ड फायल सं० XIII -125) संक्षेप में ब्रिटिश सरकार की कुशासन व्यवस्था, तथा बदले की नीति के कारण जनपद में हमीरपुर जनपद की आर्थिक शोषण की गति बहुत तेज हो गई।

<u>कुटीर उद्योगों का नाश</u>:

जहाँ बुन्देलखंड के किसान तथा जनता आर्थिक रूप से दिवालिया हो रहे थे, वहीं छोटे और बड़े उत्पादक वर्ग भी सरकार की बदले और दमनात्मक नीति के कारण आर्थिक रूप से पिस रहे थे। इसका कारण स्पष्ट था कि ब्रिटिश अधिकारी बुन्देलखंड के विकास में कोई दिलचस्पी नहीं ले रहे थे। वह इस क्षेत्र को औद्योगिक रूप से भी पिछड़ा बनाये रखना चाहते थे, ताकि 1857 ई० के विद्रोह में भाग लेने की उचित सजा जनपद के निवासियों को मिल सके।

इधर हमीरपुर जिले की आर्थिक व्यवस्था मुख्य रूप से कृषि प्रधान थी। जब कृषि ही चौपट हो गयी तो उससे जुड़े व्यवसाय और उद्योगों की बरबादी तो होती ही है। हमीरपुर जनपद में भी ये ही हुआ। अतः बेकारी, असुरक्षा, गरीबी और अराजकतापूर्ण स्थिति ने सभी उद्योग धंधों को चौपट कर दिया, उस पर सरकार की दमनात्मक बदले की नीति।

उदाहरणार्थ : - जनपद हमीरपुर और शेष बुन्देलखंड में बढ़िया किस्म की कपास, तथा अल नाम का एक पौधा होता था जो रंगाई के काम में आता था। बुन्देलखंड की कपास किस्म बढ़िया और प्रसिद्ध थी। परन्तु 1829 - 39 ई० में अमेरिकन रुई अंतर्राष्ट्रीय बाजार में आ जाने से देशी कपास रुई की मांग एकदम समाप्त हो गई जिससे इस क्षेत्र में लोगों ने कपास की खेती करना ही बन्द कर दिया था भारत की कपास अथवा रुई की मांग एकदम कम हो गई तथा इसका भाव गिरना शुरु हो गये, अपनी पुस्तक " आज का भारत" (इंडिया टुडे) में रजनी पामदत्त ने इस घटना का वर्णन करते हुए लिखा है कि सन् 1800 ई० के बाद उत्तरी अमेरिका के दक्षिणी में कपास की खेती बढ़ने लगी और अमेरिका के इस भाग को काटन किंगडम कहा जाने लगा। सन् 1857 ई० के गदर के पूर्व के वर्षों में इन भावों का औसत केवल 4 पैसे रह गया था। इस प्रकार भारतीय रुई की खपत, इंग्लैंड में प्रायः समाप्त हो गयी जिससे स्थानीय जुलाहे और कृषकों की स्थिति शोचनीय हो गयी। (37) इधर बुंदेलखंड के कपास उत्पादन और रुई उद्योग पर इसका घातक प्रभाव पड़ा साथ ही इंगलैंड का कपड़ा भी बाजार में आ जाने से स्थानीय बुनकर बेकार हो गये। वह जो धोती 2.00 में बना कर बेचते थे, वह विदेशी कपड़े की बनी धोती अब

5 रू0 में पड़ती थी और जनता खरीदने पर मजबूर थी कारण स्थानीय बुनकारों के पास न धन था न विदेशी कपास खरीदने की हिम्मत, दूसरे विदेशी कपड़ा मिल का बना और अच्छा होता था जिसे लोग पहले खरीदते थे। (38) . ब्रिटिश शासनकाल में बुन्देलखंड की अच्छी किस्म की थार भूमि में अल नामक पौधे की खेती की जाती थी, उस पौधे की जड़ से कपड़ा रंगने का रंग बनाया जाता था। (39) यह रंगाई उद्योग उस समय मऊरानीपुर तथा ललितपुर क्षेत्र में विकसित था। अल नामक इस पौधे की खेती एक एकड़ से लगभग 10 मन जड़ प्राप्त होती थी 1873 ई0 में अनुमान लगाया गया था कि यह जड़ 8 रू0 प्रति मन के हिसाब से पैदा होती। (40) इस व्यवसाय से अनेक लोगों को रोजी रोटी प्राप्त होती थी परन्तु सरकार का इस उद्योग को उचित संरक्षण न मिलने के कारण यह उद्योग उस क्षेत्र में लगभग समाप्त हो गया। 1892 ई0 में ड्रपर ने लिखा था कि "इस पौधे की खेती इस क्षेत्र के किसानों के लिये एक फायदेमंद उद्योग था। लेकिन 1892 तक इसकी खेती कम होती चली गयी, परिणाम स्वरूप इस क्षेत्र का एक विकसित उद्योग नष्ट हो गये। (41)

अन्य उद्योग जो नष्ट हुए :-

खरूआ वस्त्र उद्योग बुन्देलखंड का मुख्य कुटीर उद्योग था, इसको

माँग भारत के अन्य नगरों जैसे अमरावती, मिर्जापुर, नागपुर, इंदौर, फर्रुखाबाद, हाथरस आदि में थी अंग्रेजी शासनकाल में इसका पतन हो गया। (42) ऊनी कालीनें भी इस क्षेत्र में बनायी जाती थीं, मार्टीमर ने उम्दा कालीनों का वर्णन किया था। बाद यह समाप्त हो गया। (43) बाँदा जनपद जो कि हमीरपुर जनपद का पड़ोसी जिला था वहाँ पर पत्थर काटकर उन पर पालिश कर के टाइल्स बनाये जाते थे। केन नदी में से यह पत्थर निकाले जाते थे। इन पर कलात्मक बेल-बूटे भी बनाये जाते थे। इनकी माँग समस्त भारत में थी, परन्तु दुर्भाग्यवश सरकार का संरक्षण न मिलने से यह उद्योग भी नष्ट हो गया। (44) हमीरपुर जनपद में भी बढ़िया किस्म का छपाई के वस्त्र का निर्माण होता था इस उद्योग के अतिरिक्त जिले में जुलाहों द्वारा लुंगी, रुमाल, साफी आदि भी बनाये जाते थे। कृषि यंत्र, पीतल के बर्तनों का निर्माण तथा सोने चाँदी के आभूषणों का निर्माण किया जाता था। एलन के अनुसार 1847 ई० में हमीरपुर जिले में कपड़ों की रंगाई तथा बेलबूटे छाप कर खल्वा नाम का कपड़ा बनाया जाता था। उपरोक्त सभी कुटीर उद्योग और उद्योगों से निर्मित वस्तुऐं की समस्त भारत में माँग थी। (45) परन्तु यह सभी उद्योग सरकार की निषेधात्मक कार्यवाही के कारण नष्ट हो गये। जिससे आर्थिक सामाजिक पिछड़ापन आया और बेरोजगारी भी बढ़ी यह ब्रिटिश सरकार की दमनात्क कार्यवाही का नतीजा था।

## Foot Note

1. स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, मसूद खान पेज सं0 30
2. मस्तानी बाजीराव और उनके वंशज बांदा के नवाब डा0 सी0 डी गुप्ता पेज 125
3. बुन्देलखण्ड एजेन्सी रिकार्डस फार 1858 फाईल सं0 2
4. बुन्देलखण्ड एजेन्सी रजिस्टर 1858 फाईल सं0 41
5. हमीरपुर गजेटियर - डी0 एल0 डी0 जोशी 1985
6. हमीरपुर जपद प्री म्यूटिनी रिकार्डस फाईल सं0 13 पेज 38
7. स्टेटिकल डिस्क्रीप्टिव एण्ड हिस्टोरिकल एकाउन्ट आफ नार्थ वेस्टर्न प्राविंस आफ इण्डिया भाग--1 बुन्देलखण्ड इलाहाबाद 1874
8. ------------------ तदैव ------------पेज
9. श्रीमती हैनरी डबरलै पेज 238-239
10. स्टेटिकल डिस्क्रीप्टिव एण्ड हिस्टोरिकल एकाउन्ट आफ नार्थ वेस्टर्न प्राविंस आफ इण्डिया भाग-1 बुन्देलखण्ड इलाहाबाद 1874
11. जालौन कलेक्टेट प्री म्यूटिनी रिकार्डस फाईल सं0 52
12. नरेटिव इवेन्ट्स झाँसी डिवीजन पेज 21
13. जालौन कलेक्टेट प्री म्यूटिनी रिकार्डस फाईल सं0 52
14. ------------------ तदैव ------------
15. भारतीय इतिहास कोश- सच्चिदानंद भट्टाचार्य पेज 329
16. कांग्रेस इनसाइक्लोपीडिया 1885-1920 भाग-1 के0 ईश्वर दत्त
17. अनासक्त मनस्वी पेज 7-8
18. ------------------ तदैव ------------
19. ------------------ तदैव ------------
20. एन इण्डियन स्टोरी - गैरो जी0 टी0
21. नाना साहेब एंड फाईट फार फ्रीडम- मिश्र ए0 एस0 पेज 341
22. ------------------ तदैव ------------
23. दि रिवोल्ट आफ 1857 इन बुन्देलखण्ड- श्याम नारायण सिन्हा पेज 38-64
24. ------------------ तदैव ------------
25. ------------------ तदैव ------------
26. ------------------ तदैव ------------
27. ------------------ तदैव ------------

28. ---------------- तदैव ----------------

29. ---------------- तदैव ----------------

30. दि इकोनोमिक हिस्ट्री आफ इंडिया – रोमेश दत्त भाग-1 पेज 9-11

31. बुन्देलखण्ड गजेटियर पेज 124

32. ---------------- तदैव ---------------- पेज 124

33. ---------------- तदैव ---------------- पेज 124

34. ---------------- तदैव ---------------- 124

35. बुन्देलखण्ड गजेटियर 114-115 एवं बांदा नैरेटिव पेज 529

36. हमीरपुर जनपद की म्यूटिनी रिकार्ड्स फाईल सं0 13 पेज 125

37. आज का भारत (इंडिया टुडे) रजनी पामदत्त पेज 77

38. भगवान दास अरजरिया से प्राप्त सूचना के आधार पर

39. झांसी ड्यूरिंग दि ब्रिटिश रूल – डा0 एस0 पी0 पाठक

40. बुन्देलखण्ड गजेटियर पेज 253

41. ---------------- तदैव ----------------

42. ---------------- तदैव ----------------

43. झांसी गजेटियर – डी0 एल0 ड्रेक ब्रोकमैन 1909 इलाहाबाद पेज 75

44. बांदा गजेटियर– डी0 एल0 ड्रेक ब्रोकमैन 1909 पेज 77

45. बुन्देलखण्ड गजेटियर– एटकिन्सन पेज 183

## अध्याय-5

### जनपद में राष्ट्रीय आन्दोलन :-

भारतीय राजनीति में राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रारम्भ 20वीं शताब्दी से आरम्भ होता है, परन्तु राष्ट्रीय आन्दोलन का वेग 1914 ई0 मद्रास अधिवेशन से शुरु होता है। इसके पश्चात एनीबिसेंट द्वारा होम रूल लीग आन्दोलन प्रारम्भ करना प्रमुख था। परन्तु गाँधी जी का राजनीति में प्रवेश के साथ इस आन्दोलन को एक नयी दिशा मिली। भारतीय राजनीति में 1920 ई0 से 1948 ई0 का युग गाँधी युग कहा जाता है बुन्देलखंड में सर्वप्रथम झाँसी में 1916 ई0 में एक संयुक्त प्रांत राजनैतिक कांग्रेस का आयोजन किया गया था। जसके स्वागताध्यक्ष सी. आई चिन्तामणि बनाये गये थे। इसके आयोजक हरनारायण गोरहार थे। इस कांग्रेस में अन्य जिलों के भी कांग्रेस विचारधारा के लोग एकत्रित हुए थे। इसमें झाँसी के आत्माराम गोविन्द खैर, रघुनाथ विनायक धुलेकर लक्ष्मणराव कदम, कामरेड अयोध्या प्रसाद शर्मा आदि ने भाग लिया था। बाद में सी0 आई चिन्तामणि एवं श्यामाचरण घोष ने 1919 ई0 में अमृतसर में कांग्रेस अधिवेशन में भी भाग लिया था। (1) इन समस्त कांग्रेसी विचारधारा के मिशन थियोसोफिकल सोसाइटी, ब्रह्मसमाज , आर्य समाज एवं बहवी आन्दोलन ने केवल भारतीय पुर्न जागरण तथा धार्मिक एवं सामाजिक सुधारों

का सूत्रपात ही नहीं किया बल्कि उपरोक्त रूप में राजनीतिक चेतना का भी बीजारोपण किया इसी सदी के अनेकों अन्य धर्म एवं समाज सुधार आन्दोलनों ने भी राष्ट्रीय चेतना की अति वृद्धि की। इन आन्दोलनों ने भारतीय सामाजिक व्यवस्था की रूढ़ियों को भी समाप्त किया बल्कि भारतीय प्राचीन गौरवशाली परम्पराओं की याद दिलाते हुये लोगों को सुनहरे भविष्य के लिये प्रेरित किया। (2) हमीरपुर जनपद के लोग इनसमाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलनों के प्रति मूक दर्शक नहीं बने रहे बल्कि इन सुधारकों के कार्यक्रमों से अनुप्राणित होकर स्वयं में एक नई राजनीतिक चेतना को विकसित किया। इसी राजनीतिक स्फूर्ति ने भारत के स्वतंत्रता की नींव डाली। (3) 19वीं सदी के उत्तरार्ध में प्राचीन भाषाओं के छपने वाले समाचार पत्रों का भी तेजी से विकास हुआ। ये समाचार पत्र ब्रिटिश शासक के क्रिया कलापों का आलोचनात्मक विश्लेषण लोगों के समक्ष प्रस्तुत करने में सफल रहे। इन पत्रों ने लोगों की समस्याओं के प्रति ब्रिटिश शासन के उदासीन रुख का भी प्रकाशन किया जिससे जनता में राष्ट्रीयता लहर फैलने लगी। भारतीय अंग्रेजी पत्रों में जो विचार छपते थे उन्हीं विचारों को प्रान्तीय भाषाओं में छपने वाले समाचार पत्र जनता तक पहुंचने लगे इससे जनता में शासन के प्रति घोर प्रतिक्रिया हुई 1857 ई० में बाद

छपने वाले ऐसे स्थानीय पत्रों का कुछ विवरण निम्नवत है।

1. झाँसी गजट 11 (अंग्रेजी साप्ताहिक)
2. बुन्देलखंड साप्ताहिक गजट 12 (जिसके सम्पादक डी० वेलिस थे)
3. साहस (हिन्दी साप्ताहिक) जिसके संपादक श्री रामेश्वर प्रसाद शर्मा कांग्रेस के कार्यकर्ता थे यह समाचार पत्र अंग्रेजी शासन का प्रधान विरोधी था जो 1919 ई० से प्रकाशित हुआ।
4. उत्साह (एक हिन्दी साप्ताहिक पत्र) जिसके संपादक कांग्रेस के एक कार्यकर्ता श्री कृष्ण गोपाल शर्मा थे यह पत्र भी अंग्रेजी शासन का घोर विरोधी था जिसका प्रकाशन भी 1919 ई० से ही प्रारम्भ हुआ इस आलोचना के कारण ही इस पत्र की जमानत जब्त कर ली गई थी और इस तुलना कानपुर से छपने वाले पत्र "प्रताप" की जा सकती है। बुन्देलखंड केसरी हिन्दी साप्ताहिक पत्र इसके संपादक श्री कृष्ण गोपाल शर्मा थे 1933 ई० से इसका प्रारम्भ हो गया था।

दिग्दर्शन हिन्दी साप्ताहिक इसका संपादन श्री बेनीप्रसाद ने 1923 ई० से प्रारम्भ किया किन्तु 1929 ई० में बंद हो गया।

अगस्त 1882 ई० में मुहर्रम अली ने कई ऐसे लेख लिखे जिसका आशय था कि "आओ हम सब मिलकर ब्रिटिश हुकूमत को मन से समाप्त कर दें" (4) 1857 ई० में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद से हमीरपुर जनपद ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह आरम्भ हो गया था परन्तु 20 वीं शताब्दी दूसरे दशक से जनपद ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध संघर्ष पूर्ण वेग से आरम्भ हो गया था। इस जनपद की राठ तहसील के एक छोटे से गाँव में जन्मे पं परमानन्द जी विश्व स्तर की हिन्दुस्तानी गदर पार्टी में भाग लिया था (5) परन्तु 1916 ई० मे बाद गाँधी युग में इस जनपद एक महत्वपूर्ण

भूमिका अदा की थी दीवान शत्रुघ्न सिंह भगवान दास बालेन्दु अरजरिया बैजनाथ तिवारी (महोबा) मोतीलाल तिवारी (मुस्करा) राम दुलारे द्विवेदी (गौरहरी) प्राण सिंह (कुलपहाड़) मानिक चन्द गुरुदेव स्वामी ब्रह्मानंद पं गंगा सागर बैद्य लखुचन्द नारायण सिंह (बैरी) अब्दुल रज्जाक, मूलचन्द टेलर मास्टर आदि प्रमुख थे। (6) इन कार्यकर्ताओं के साथ साथ इस जनपद में महिलाओं ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। हमीरपुर जनपद में जिन महिलाओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रमुख रूप से भाग लिया था उनमें रानी राजेंद्र कुमारी (मगरोठ) पत्नी दीवान शत्रुघ्न सिंह किशोरी देवी पत्नी भगवान दास अरजरिया, धर्मा देवी, विद्या देवी, मनोरमा बहन चम्पा देवी एवं सरजू देवी पटैरिया थीं। (7) 1920-21 ई0 के असहयोग आन्दोलन में इस जनपद ने विदेशी कपड़ों की होली जलायी गयी थी एवं जनपद में प्रथम कुलपहाड़ कस्बे में खादी भंडार की स्थापना की गई थी एवं आजन्म खादी वस्त्र धारण करने का प्रण किया गया था। राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रमुख केन्द्र जनपद में कुलपहाड़ कस्बा एवं राठ तहसील था कुलपहाड़ जैसे एक साधारण कस्बे में राष्ट्र के बड़े से बड़े नेताओं का आगमन हुआ था। राष्ट्र पिता महात्मा गांधी पं० जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, आचार्य कृपलानी, खान अब्दुल गफ्फार खान,

आचार्य नरेन्द्र देव, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन तथा सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के अध्यक्ष प्रसिद्ध क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद भी कुलपहाड़ में आये थे। (8) 1932 ई० स्थानीय पुलिस के विरुद्ध कुलपहाड़ की जनता ने एक अनोखा आन्दोलन चलाया था जिसमें स्थानीय पुलिस के विरुद्ध समस्त दुकानदार नाई, मेहतर, भिश्ती आदि ने अपने कार्य बन्द कर दिये थे इस आन्दोलन में हमीरपुर जनपद के अतिरिक्त अन्य जनपद के लोगों ने भी भाग लिया था इस आन्दोलन के लिये यह दोहा यहाँ पर आज भी प्रचलित है (9) "बहिष्कार कौ भयौ है, यहाँ शांत संग्राम,
ब्रिटिश पुलिस में दर्ज है, कुलपहाड़ का नाम।।

क. <u>परमानंद का जीवन परिचय</u>–

सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी एवं "गदर पार्टी" के प्रमुख कार्यकर्ता पं० परमानंद जी का जन्म हमीरपुर जनपद के राठ तहसील के सिकरौदा गाँव के कायस्थ परिवार में हुआ था। परिवार में कुछ छोटी जमींदारी थी। प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुयी, घर पर ही संस्कृत, हिंदी उर्दू की शिक्षा प्राप्त के बाद में संस्कृत की उच्च शिक्षा के लिये वाराणसी चले गये। (10) इधर बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक से ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध समस्त भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बंगाल था, बाद में धीरे–धीरे इसका मुख्य केन्द्र पंजाब हुआ और तदुपरांत समस्त भारत में फैल

गया। 1912 ई० में जिस समय पं० परमानंद जी बनारस में संस्कृत की शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, उन्हीं दिनों सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी सचीन्द्र सान्याल ने बनारस में एक क्रांतिकारी विचारों और आदेशों की प्रेरणा देने तथा कुश्ती, लाठी तथा बंदूक से निशाना लगाना सिखाया करते थे। इस समय परमानंद जी सचीन्द्र सान्याल के क्रांतिकारी दल के सम्पर्क में आये फिर वह हमेशा के लिये क्रांतिकारी दल से जुड़ गये। क्रांतिकारी दल में रहते हुए ही बनारस में उनका परिचय गदर पार्टी के संस्थापक अनेक कार्यकर्ताओं से हुआ जिनमें लाला हरदयाल, करतार सिंह, मास्टर अमीरचन्द, मौलवी बरकत उल्ला से हुआ। उनके द्वारा उनको विदेशों में भारतीयों की दुर्दशा के बारे में मालूमात हुयी।(11) बाद में पं० परमानंद जी ने "गदर पार्टी" की सदस्यता ले ली। 21 फरवरी 1915 ई० में परमानंद जी ने दल के एक प्रमुख सदस्य करतार सिंह के साथ लाहौर छावनी के बारुद डिपो को बम से उड़ाने का प्रयास किया। करतार सिंह बाद में पकड़े गये और उन्हे फाँसी पर चढ़ा दिया गया। परमानंद जी गदर पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ जहाज के मजदूर बन कर अमेरिका के आरगन प्रांत पहुंच गये।(12)

<u>गदर पार्टी</u>:-

गदर पार्टी एक सशस्त्र क्रांति में विश्वास रखने वाला दल था। इसकी स्थापना भारत में ही हुई थी परन्तु इसका मुख्य केन्द्र कैलीफोर्निया

(अमेरिका) में था। विदेशों में रोजी-रोटी की तलाश में गये भारतीयों ने देखा उनके सम्मान में ही नहीं रोजी रोटी में गुलामी बाधक है। उन्हें विदेशों में पग-पग पर अड़चनों का सामना करना पड़ता है, मजदूरी नहीं करने दी जाती तथा उन्हें गिरी नजरों से देखा जाता है। तब उन्होंने संगठित हो कर सामूहिक रूप से अपने अस्तित्व के बारे में सोचने लगे। अमेरिका के ओरेगान प्रान्त में पं० काशीराम बाबा केसर सिंह, बाबा ईश्वर सिंह, बाबा सोहन सिंह मास्टर ऊधम सिंह, हरनाम सिंह आदि लोगों ने अपनी स्थिति सुधारने के लिये एक आन्दोलन चलाया। उधर कैलीफोर्निया में संगठित भारतीयों ने ओरेगान के भारतीयों को अपने यहां बुलाया तथा दोनों स्थानों के संगठित भारतीयों का एक दल बनाया जिसका नाम "गदर पार्टी" रखा गया। (13) इसकी अध्यक्षता बाबा सोहन सिंह, उपाध्यक्ष बाबा केसर सिंह मंत्री लाला हरदयाल कोषाध्यक्ष पं० काशीराम को चुना गया। (14) तमाम भारतीय इस पार्टी के सदस्य हो गये बात ही बात में धन एवं कार्यकर्ता इकट्ठा हो गए। पार्टी की ओर से " गदर " नाम का अखबार निकाला गया। गदर पत्र के सम्पादन का भार लाला हरदयाल को सौंपा गया। इस पत्र का प्रथम अंक नवम्बर 1913 ई० में निकाला गया। फरवरी 1914 ई० में स्टाकटन नगर में पार्टी का पहला जलसा आयोजित

किया गया। इस जलसे के सभापति प्रसिद्ध पंजाबी क्रांतिकारी ज्वाला प्रसाद सिंह थे, इस जलसे में बाबा सोहन सिंह, करतार सिंह, पृथ्वी सिंह स्वरूप सिंह आदि अन्य वक्ता थे। (15) इस सभा में बहुत से प्रस्ताव पारित किये गये। प्रवासी भारतीयों का यह पहला क्रांतिकारी जलसा था। इस सभा के फैसले के मुताबिक अखबार और छापाखाने में काम करने वाले सैनफ्रांसिस्को चले गये। बाबा सोहन सिंह और बाबा केसर सिंह कैलीफोर्निया का संगठन देखने चले गये। (16) शीघ्र ही इस दल की शाखायें कैनाडा, पनामा, चीन तथा अन्य देशों में जहाँ भारतीय थे स्थापित की गई। (17)

ख. क्रांतिकारी आन्दोलन में प्रवेश :-

पं० परमानंद जब बाल अवस्था में थे, उस समय समस्त हमीरपुर जनपद में ब्रिटिश सरकार का दमन चक्र पूर्ण जोर-शोर चल रहा था। जागीदारों एवं जमीरदारों की जागीर जब्त की जा रही थी। छोटे कृषक एवं आम जनता भी सरकार की नीतियों से खुश नहीं थे। समस्त जनपद पुलिस के भी आतंक छाया हुआ था। बिना वारंट किसी भी घर की तलाशी ली जाती थी, मार पीट की जाती थी। ब्रिटिश सरकार की इस दमनपूर्ण नीति देखते पं० परमानंद जी ने युवा अवस्था में कदम रखा परन्तु

युवा अवस्था में आ कर उन्होंने सोचा की कब तक इस गुलामी जीवन जीते रहेंगे कब इस से छुटकारा मिलेगा। (18) प्रारम्भ में उनकी शिक्षा घर पर ही हुई परन्तु कुछ समय वह संस्कृत की उच्च शिक्षा प्राप्त करने काशी चले गये. वहाँ पर वह संस्कृत की उच्च शिक्षा प्राप्त करके एक विद्यालय में संस्कृत के शिक्षक नियुक्त हो गये। शिक्षक होने पर उनके नाम के आगे पंडित की उपाधि जुड़ गई जबकि वह श्रीवास्तव कायस्थ थे।(19) 1912 ई० के लगभग शचीन्द्र नाथ सान्याल ने एक क्रांतिकारी दल की स्थापना काशी में की। क्रांतिकारी दल के मुख्यालय पर युवकों को कुश्ती लड़ना, लाठी चलाना, निशाना लगाना सिखाया जाता था। पं० परमानंद काशी में शीघ्र ही इस क्रांतिकारी दल के सम्पर्क में आ गये। बाद में वह शचीन्द्र नाथ द्वारा बनाये गये इस क्रांतिकारी दल के मुख्य सदस्य बने धीरे-धीरे वह पूर्ण रूप से क्रांतिकारी गतिविधियों में संलग्न हो गये। (20)

बनारस में रहते हुये ही उनका परिचय गदर पार्टी के सदस्यों से हुआ। उन दिनों मास्टर अमीरचन्द का दिल्ली नगर स्थित आवास उत्तरी भारत के क्रांतिकारियों का प्रमुख गढ़ था यहीं पर वायस राय लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना बनायी गई थी। पं० परमानंद जी भी काफी दिनों तक दिल्ली में मास्टर अमीरचन्द के यहाँ पर रहे। इसके कुछ समय पश्चात पं० परमानंद जी लाहौर चले गए। वहाँ पर उस समय गदर पार्टी

के कुछ सदस्य कोमा गाटा मारू जहाज से भारत लौट रहे थे, वह जापान में रुका। जहाज में रसद कम हो जाने से इस जहाज से कुछ लोग उतर कर तोशामारू जहाज पर सवार हो गये। तोशामारू जहाज पेनांग पहुंचा तो जहाज रोक लिया गया वहाँ पर क्रांतिकारियों ने जहाज रोकने का विरोध किया एवं नारे लगाये जिससे वहाँ का गवर्नर घबरा गया। क्रांतिकारी हथियारों से लैस हो कर गवर्नर के कमरे में पहुंचे गवर्नर अपनी असहाय स्थिति देख कर बन्दरगाह के अधिकारी के नाम जहाज की रवानगी का हुक्म जारी किया। परन्तु जहाज भारत तक ही पहुंच पाया कलकत्ता से पहले ही इस जहाज को हिरासत में ले लिया गया। 29 अक्टूबर को कलकत्ता पहुंचने पर 120 क्रांतिकारियों को बन्दी बना कर मान्टगोमरी और मुलतान के जेलों में भेज दिया गया बाकी लोगों को अपने अपने गांव में नजर बंद कर दिया गया।(21) इसके बाद मुकदमों का सिलसिला प्रारम्भ हुआ। लाहौर षड्यंत्र केस के नाम से पहला मुकदमा चला इसका फैसला 13 सितम्बर 1917 ई० को सुनाया गया। इसमें निम्नलिखित सजा सुनाई गई:

बाबा सोहन सिंह, वी०जी०पिंगले, भगत सिंह, जगत सिंह, पं० परमानंद (झाँसी वाले), जगत राम, बाबा जौहर सिंह, हरनाम सिंह, बख्शी सिंह, सोहन लाल पथक, सोहन सिंह दोहम, निधान सिंह, भाई परमानंद

लाहौरी, हृदय राम, हरनाम सिंह आदि। (22) इस मुकदमें के अंत में सात सदस्यों को फाँसी, पाँच बरी हो गए कुछ को काला पानी तथा कुछ दस एवं दो साल की सजा हुई। (23)

ग. उनका योगदान :

भारत की स्वतंत्रता के लिये क्रांतिकारी संघर्ष अथवा आन्दोलन का इतिहास 1757 ई० में प्लासी के मैदान में राष्ट्रीय पराजय से प्रारंभ हो कर 15 अगस्त 1947 ई० को स्वतंत्रता प्राप्ति तक जा कर समाप्त होता है। इन वर्षों के दौरान संघर्ष की धारा कभी धीमी कभी तेज, कभी खुलकर और कभी भूमिगत रहकर, सतत बहती रही। प्लासी के युद्ध से जो असंतोष की धारा बही, वह 1946-47 ई० के नौसैनिक विद्रोह तक क्रांतिकारी आंदोलन के अनेक बदलते-बदलते पहलुओं को पार करती हुयी अग्रसर होती रही। क्रांतिकारी आंदोलन का क्षेत्र विचारों में चाहे जितना भी अस्पष्ट रहा हो, किन्तु इसका लक्ष्य शुरू से ही पूर्ण स्वतंत्रता था, चाहे 1763-64 ई० का सन्यासी विद्रोह हो या 1857 ई० का सिपाही विद्रोह या बीसवीं शताब्दी तीसरे और चौथे दशक का क्रांतिकारी आन्दोलन सबका मकसद मुल्क कौम की आजादी था।

वीर भूमि बुंदेलखंड का इतिहास तो वीरता के कारनामों से भरा पड़ा है। इसी के एक जनपद हमीरपुर का सौभाग्य ही समझिए की जनपद

की इस भूमि पर पं0 परमानंद जैसे क्रांतिकारी पैदा हुआ जिसने विश्व स्तर पर संगठित "गदर पार्टी" का प्रतिनिधित्व किया और फाँसी की सजा भी पाये बाद में सजा "काला पानी" में बदल गई। (24)

हमीरपुर जनपद में पं0 परमानंद जी का जन्म राठ तहसील के मभगवाँ ग्राम में एक कायस्थ परिवार में हुआ था पर पेशे से शिक्षक होने के कारण पं0 शब्द नाम के साथ जुड़ गया। बचपन में उन्होंने आल्हा "काव्य तथा छत्रसाल की रासो " जैसे वीर रस के काव्य गाथाएँ पढ़ीं और उनका बचपन से ही इनके मन में अंग्रेजों की प्रति विद्रोह की भावना पनपने लगी।(25) इस बीच जब यह युवा अवस्था में आये तब देश की स्थिति अच्छी नहीं थी। बीसवीं शताब्दी का प्रथम दशक चल रहा था। ब्रिटिश सरकार के प्रति समस्त भारत में विद्रोह की लहर चल रही विशेष रूप से बंगाल में 1905 ई0 में लार्ड कर्जन द्वारा बंगाल विभाजन या बंग-भंग होने पर लोगों में क्षोभ फैल गया। जिससे वहाँ पर सुरेन्द्र नाथ बनर्जी द्वारा बहुत ही प्रभावशाली आंदोलन चलाया गया। इसी समय प्रसिद्ध अलीपुर बमकांड में अरविंद घोष पर मुकदमा चलाया गया। (26) इधर 1907 ई0 में कैलिफोर्निया अमेरिका में भारतीय विद्यार्थियों ने स्वतंत्रता आंदोलन शुरू किया ही था कि कनाडा में बसे सिखों में अशांति की लहर

दौड़ गई क्यों कि वहां पर गदर पार्टी का प्रभाव पड़ा था। वे वहां पर स्वतंत्रता आंदोलन के लिये संगठित होने लगे। (27) इधर 1912 ई॰ में पं॰ परमानंद जी गाँव से अपनी शिक्षा समाप्त कर आगे संस्कृत की शिक्षा प्राप्त करने बनारस गये। इन्हीं दिनों प्रसिद्ध क्रांतिकारी सचीन्द्र सान्याल बनारस में थे, तथा वहां पर उन्होंने एक क्रांतिकारी दल गुप्त रूप से तैयार किया था। परमानंद जी भी अन्य युवाओं के साथ सचीन्द्र सान्याल के सम्पर्क में आये तथा क्रांतिकारी गतिविधियों में संलग्न हो गये। (28) सचीन्द्र सान्याल के पास इन्हीं दिनों "गदर पार्टी" के सदस्य आया करते थे तथा विदेशों में स्थित भारतीयों का क्रांतिकारी गतिविधियों की सूचनाएँ देते तथा युवाओं से विदेश में जा कर क्रांतिकारी कार्यों को करने का प्रोत्साहन देते थे। पं॰ परमानंद भी उनके साथ हो गये। शीघ्र ही उन्होंने विदेश जाने की योजना बनाई। (29) उन दिनों मास्टर अमीरचन्द का निवास राजधानी दिल्ली में था, तथा गुप्त रूप से वह क्रांतिकारियों का केन्द्र भी था। मास्टर अमीरचंद से परमानंद जी का परिचय बनारस में सचीन्द्र सान्याल के घर पर हुआ था। मास्टर अमीरचंद के अनुरोध पर पं॰ परमानंद जी दिल्ली चले गये। मास्टर अमीरचंद के घर पर ही वायसराय लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना बनाई गई। (30)

21 फरवरी 1915 ई० में पं० परमानंद जी और दल के एक अन्य सदस्य करतार सिंह के साथ लाहौर छावनी के बारुद डिपो पर बम से उड़ाने का प्रयत्न किया। बाद में करतार सिंह पकड़ गए, उन्हें फाँसी पर चढ़ा दिया गया परन्तु पं० परमानंद जी भूमिगत रहे। तथा पाँडेचेरी जो कि उस समय फ्रांसीसी उपनिवेश था, पं० वहाँ पर जा कर पानी के जहाज में काम करने लगे तथा कुली मजदूर के रुप में वह भारत से निकल कर विदेश चले गये। (6) इधर सैनफ्रांसिस्को में स्थापित गदर पार्टी ने भारत में अंग्रेजी राज्य समाप्त करने की योजना बनाई। इसके लिये पूरी तैयारी भी कर ली परन्तु अन्तिम समय पर एक विश्वासघाती द्वारा भेद खुल जाने पर यह योजना असफल हो गई। इसके प्रमुख संचालक रास बिहारी बोस तो पकड़े गये। जो पकड़ गये थे उनको 19 मार्च 1917 ई० में लाहौर सैंट्रल जेल में फाँसी दे दी गई। उनके नाम थे बलवंत सिंह, सफीज अब्दुल्ला, रुरसिंह और नैना।(31) गदर पार्टी के क्रांतिकारियों ने जहाँ भारत में आ कर क्रांति की ज्वाला धधकाई, वहाँ पर उन्होंने बर्मा पर आक्रमण करने की योजना भी बनायी थी। तथा चीन और जापान में अपनी शाखाएँ भी स्थापित की। पं० परमानंद भी इस समय जापान में थे तथा वहाँ यार्ड में काम करते थे तथा - गदर पार्टी - के सदस्य भी थे। (32) इस बीच गदर पार्टी के कुछ

सदस्य "कोमागोटा मारु" जहाज से अमेरिका से भारत आ रहे थे। जहाज में रसद की कमी के कारण यह लोग इस जहाज से उतर कर "तोशमारु" जहाज पर सवार हो गये। पं० परमानंद भी इस जहाज पर इन गदर पार्टी के सदस्यों के साथ हो गये। तभी जहाज पेनांग पहुंचा तो जहाज रोक लिया गया, जहाज पर सवार सदस्यों ने इसका विरोध किया पर कैप्टन नहीं माना इस पर सदस्यों ने सरकार विरोधी नारे लगाने शुरु कर दिये और सभी गदर पार्टी के सदस्य हथियारों से लैस हो कर जहाज के मुख्य अधिकारी के पास पहुंचे स्थिति को देखते हुये अधिकारी ने जहाज की रवानगी का आदेश दिया परन्तु उसने पेनांग बन्दरगाह पर इसकी सूचना भिजवा दी यह सूचना हवाई जहाज के द्वारा भारत भेज दी गई परिणाम स्वरुप जहाज कलकत्ता पहुंचने के पूर्व हिरासत में ले लिया गया और सभी 120 गदर पार्टी के सदस्यों को बंदी बना लिया गया और 13 सितंबर 1917 ई० को निम्न पार्टी के लोगों को फांसी की सजा सुनाई गई :- पृथ्वी सिंह, केसर सिंह, जगत सिंह, पं० परमानंद, सोहन सिंह दोसम आदि बाद में सात सदस्यों को फांसी कुछ को काला पानी तथा पांच सदस्यों को बरी कर दिया गया। पं० परमानंद जी को भी फांसी के बदले काला पानी की सजा हुई। (33)

## Foot Note

1. झाँसी गजेटियर - 1965 ई0 डी0 जोशी
2. स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास- खान मसूद अहमद- पेज 30
3. ------------------ तदैव ------------------
4. कान्फिडेन्शियल रिपोर्ट आन वर्नाक्यूलर न्यूज पेपर 1878
5. पं0 परमानंद अभिनन्दन ग्रन्थ पेज नं0 44
6. अनासक्त मनस्वी पेज नं0 16
7. ------------------ तदैव ------------------पेज 66‑67
8. ------------------ तदैव ----------------पेज 75
9. दैनिक जागरण 26 जनवरी 1978 ई0 का अंक
10. पं0 परमानंद अभिनंदन ग्रन्थ पेज 30
11. "उत्तर प्रदेश" मासिक पत्रिका क्रान्तिकारी अंक 15 अगस्त 1975
12. भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास मन्मथनाथ गुप्त पेज 71
13. ------------------ तदैव ----------------पेज 74
14. ------------------ तदैव ----------------पेज 75
15. ------------------ तदैव ----------------पेज 75
16. ------------------ तदैव ----------------पेज 75
17. ------------------ तदैव ----------------पेज 76
18. "उत्तर प्रदेश" मासिक पत्रिका का क्रांतिकारी अंक 15 अगस्त 1975
19. ------------------ तदैव ----------------पेज
20. भूले बिसरे क्रांतिकारी- श्री रामशरण विद्यार्थी प्रकाशन विभाग भारत सरकार पेज 65
21. भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास मन्मथ नाथ गुप्त पेज 80
22. ------------------ तदैव ----------------पेज 81
23. ------------------ तदैव ----------------पेज 81
24. पं0 परमानंद अभिनंदन ग्रन्थ पेज 20
25. ------------------ तदैव ------------पेज 20-21
26. भारतीय इतिहास कोष पेज 262 - 265
27. पं0 परमानंद अभिनन्दन ग्रन्थ पेज 20
28. ------------------ तदैव ------------पेज 20
29. ------------------ तदैव ------------पेज 21
30. ------------------ तदैव ------------

31. भूले बिसरे क्रांतिकारी – श्री रामशरण विद्यार्थी प्रकाशन विभाग भारत सरकार पेज 142
32. भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास मन्मथ नाथ गुप्त–पेज 39
33. ------------------ तदैव ------------ पेज 81

## अध्याय - 6

### विभिन्न राजनीतिक दलों का योगदान :

सन् 1857 ई0 के स्वतंत्रता आन्दोलन के पश्चात् हमीरपुर जनपद में ब्रिटिश सरकार द्वारा निर्दयतापूर्वक जो दमनचक्र चलाया गया इसी के विरोध में भारत में अनेक राजनीतिक दल तथा आन्दोलनों का जन्म हुआ। सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक जागें में इन आन्दोलनों का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना का था। जनपद में राजनीतिक एवं राष्ट्रवाद के विभिन्न राजनीतिक दलों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। जिनमें क्रांतिकारी दल कांग्रेस दल तथा बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में कुछ समाजवादी दल भी सक्रिय हुए थे। परन्तु इस जनपद में सर्वप्रथम राष्ट्रीय चेतना का उदय आर्य समाज ने किया था। जनपद में विभिन्न राजनीतिक दलों का यहां के समाज के विकास एवं चेतना जाग्रत करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा -

### ब्रह्म समाज -

इस संस्था के जन्मदाता राजा राममोहन राय जिन्हे भारत में नवीन युग का जन्मदाता कहा जा सकता है। राजा राममोहन राय में एक अद्भुत शक्ति लगन और दृढ़ता थी। उन्होंने साहसपूर्वक हिन्दू कट्टरपन्थी सीमा तोड़ने का प्रयत्न किया और स्वतंत्रता का बीज बोया जिससे पुष्पित

पल्लवित और सुरक्षित हो कर राष्ट्र के नवजीवन को नयी चेतना से अनुप्राणित किया। (1) उन्होंने वेदों और उपनिषदों का अध्ययन करके यह बताया कि हिन्दू धर्म ग्रन्थों वेदों और उपनिषदों में छुआछूत, मूर्तिपूजा, बहुविवाह, भ्रूणहत्या और सती प्रथा और कुप्रथाओं का कहीं भी उल्लेख नहीं है। उन्होंने ईसाई धर्म और अंग्रेजी शिक्षा के लाभदायक अंश अपनाये। उन्होंने अपने देशवासियों के राजनीतिक अधिकारों के लिये संघर्ष किया। सन् 1823 ई0 में प्रेस अध्यादेश का प्रबल विरोध किया और उसे रद्द करवाने के सभी संवैधानिक साधन अपनाये। तत्पश्चात् उन्होंने ज्यूरी एक्ट के विरुद्ध आवाज उठाई और देश में एक आन्दोलन सा प्रारम्भ कर दिया।

राजा राममोहन राय पहले भारतीय थे जिन्होंने अपने देशवासियों की कठिनाईयों तथा शिकायतों को ब्रिटिश सरकार के सम्मुख प्रस्तुत किया और भारतीयों को संगठित कर राजनीतिक आन्दोलन चलाने का मार्ग दिखलाया। उन्हें आधुनिक वैध आन्दोलन का अग्रदूत होने का श्रेय भी दिया जा सकता है। ब्रह्म समाज द्वारा किये गये सामाजिक धार्मिक सुधारों ने जनपद की जनता पर प्रभाव डाला और उन्हें भारतीय धर्म समाज व राजनीतिक अधिकारों का समुचित ज्ञान कराया।

आर्य समाज :

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती थे जिन्होंने सर्वप्रथम वेदों की ओर लौटो का नारा दिया था। उन्होंने भारत और हिन्दू धर्म को नवजीवन दिया। वैदिक धर्म एवं संस्कृति को जीवित करने का एकमात्र ध्येय था उन्होंने भारत की खोयी हुयी आत्मा को ढूंढना और उसे राष्ट्रीय चेतना की प्रमुख शक्ति बनाना था। उन्होंने यूरोपियन विचारों से पागल बनी भारतीय जनता को अतीत का गौरव दिखाकर हिन्दू धर्म को सर्वोत्तम बताकर उनमें अपूर्व आत्मविश्वास भर दिया। रामरोला ने कहा- स्वामी दयानन्द सरस्वती इलियड अथवा गीता के प्रमुख नायक के समान थे। उनमें हार्कुलीज जैसी शक्ति थी। वस्तुतः शंकराचार्य के बाद इतनी महान बुद्धि का दूसरा संत नहीं जन्मा। (2)

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने (सन् 1824-83 ई0) आर्य समाज नामक आन्दोलन 10 अप्रैल सन् 1875 ई0 से आरम्भ किया। इन्होंने प्रथम मूर्ति पूजा का विरोध किया और एकेश्वरवाद का प्रचार किया कर्मवाद को मान्यता दी, शुभ कार्यों को मोक्ष प्राप्ती का साधन बताया। जाति पाँति भेद भाव मिटा कर सबके साथ प्रेम न्याय और दया से परिपूर्ण व्यवहार

किया जाना चाहिये। आर्य समाज का मुख्य ध्येय भौतिक सामाजिक व आध्यात्मिक उन्नति करके मानवता की सेवा करना है। उन्होंने भारत के लोगों में आत्मसम्मान देश प्रेम स्वतंत्रता और अपने पूर्वजों पर गौरव का भाव दिया दयानन्द ने अपने अनुयायियों पर भारी राष्ट्रीय प्रभाव डाला।(3)

आर्य समाज ने स्वतंत्रता प्रेम देशप्रेम और स्वदेशी के प्रति प्रेम का संचार किया और नारा लगाया कि भारत भारतीयों के लिये है। उन्होंने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में निर्भीकतापूर्वक लिखा है कि विदेशी राज्य से चाहे वह कितना ही अच्छा क्यों न हो स्वदेशी राजा चाहे उसमें कितनी ही त्रुटियाँ क्यों न हों अच्छा है। (4) आर्य समाज एक साथ ही धार्मिक सामाजिक और राष्ट्रीय नवचेतन जागरण का आन्दोलन था। इसमें भारत और हिन्दू जनता को नवजीवन प्रदान किया। (5)

आर्य समाज एक जीवन्त संस्था थी इसकी शाखायें शीघ्र ही भारत के कोने-कोने में विद्यमान होने लगीं। दयानन्द सरस्वती के भाषणों से जनपद के लोगों में राष्ट्रवाद एवं अपने स्वतंत्र राज्य की भावना जाग्रत हुई। इसी समय आर्य समाज की स्थापना बुन्देलखण्ड सम्भाग में हुई। आर्य समाज

में काफी जनसंख्या इसमें सम्मिलित हो गयी। ब्रिटिश हितों के विरुद्ध कार्य करने वाले एक प्रमुख संगठन के रूप में उल्लेख किया है। जिसमें राष्ट्रीय तत्वों का एकीकरण कर ब्रिटिश विरोधी नीति का समर्थन किया। (6) भारतीय अपनी स्वतंत्रता के लिये संगठित होने लगे। शीघ्र ही जनपद में राठ, महोबा, कुलपहाड़, चरखारी में आर्यसमाज की शाखायें बनायीं और लोगों ने उसके कार्यक्रमों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। बुन्देलखण्ड में आर्यसमाज की स्थापना का उद्देश्य ईसाई मिशनरियों के धर्म परिवर्तन के प्रयास का प्रतिरोध करना था तथा उसकी आलोचना का मुंहतोड़ उत्तर देना था साथ ही ब्रिटिश सरकार और ईसाई मिशनरियों द्वारा भारतीय संस्कृति के गौरवमय अतीत की आलोचना का समुचित उत्तर देना था आर्य समाज के इन तरीकों ने जनता में राष्ट्रवाद की मनोवृत्ति को और अधिक दृढ़ता प्रदान की।

## थियोसोफिकल सोसायटी :-

थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना न्यूयार्क में एक रूसी महिला मैडम ब्लेवेट्स्की तथा अमरीकी कर्नल अल्काट द्वारा सन् 1851 ई० में की गयी थी। यद्यपि आर्य समाज ब्रह्म समाज ने हिन्दू धर्म और आर्य संस्कृति

की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया था किन्तु अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगों को इस पर इतना विश्वास न होता था। जब से विदेशी लोगों ने हिन्दू धर्म का गुणगान किया तो पढ़े लिखे लोग पादरियों के बहकावे में आने से बचे और हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान प्रारम्भ हुआ। मिसेज एनी बेसेन्ट इस संस्था की प्रमुख कार्यकर्ता बन गयीं उन्होंने भारत के सामाजिक और राष्ट्रीय जागरण में महत्वपूर्ण भूमि अदा की। रुढ़िवाद की समाप्ति और रुढ़िवाद पर आधारित बाल-विवाह व विधवा विवाह का विरोध जैसी प्रथाओं को छोड़ दिया जाना चाहिये ब्लेवेटस्की व कर्नेल अल्कट और श्रीमती एनी बेसेंट ने अपने जोर पर लेखों से एवं कार्यों से भारतीय राष्ट्रीयता का प्रचार प्रसार किया।

स्वामी विवेकानन्द एवं रामकृष्ण मिशन :

रामकृष्ण के सारे अपूर्व त्याग वैराग्य और भक्ति के जीवन से भारत के अनेक नर नारी प्रभावित हुए थे इन्हीं में नरेन्द्र दत्त जैसे क्रांतिकारी और तर्कशील युवक भी था जो बाद में स्वामी विवेकानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए। सन् 1893 ई0 में शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में उन्होंने हिन्दू धर्म की और भारत के प्रतिनिधि के रुप में भाग लिया।

उनके द्वारा की गयी हिन्दू धर्म की विवेचना से उपस्थित विविध धर्मों के आचार्य और दर्शक अत्यंत प्रभावित हुए। अमेरिका में उनके शिष्यों में भगिनी निवेदिता प्रमुख थीं। सर्व धर्म सम्मेलन में विवेकानन्द की दिव्यमूर्ति ही समस्त सभा मण्डल पर छायी हुई है। उनके प्रवचन सुनने के बाद हमें यह अनुभव होता है कि उन सरीखे विद्वान के देश में ईसाई पादरी भेजना कितनी बड़ी मूर्खता है। (7) उन्होंने गर्वपूर्वक घोषणा की कि "यदि सम्पूर्ण वसुधा पर किसी भू क्षेत्र को पुण्य भूमि कहा जा सकता है तो वह भारतवर्ष ही है। (8) भारत के धार्मिक सामाजिक औरराष्ट्रीय जागरण में स्वामी विवेकानन्द का निश्चित रूप से बहुत योगदान रहा है। स्वामी विवेकानन्द ने देश को आत्मविश्वास, आत्मशक्ति और स्वाभिमान की शिक्षा दी उन्होंने नवयुवकों को विदेशी सत्ता का विरोध करने के लिये नवीन उत्साह प्रदान किया। (9)

सामाजिक क्षेत्र में जाति प्रथा के सुधार और उसके उन्मूलन, स्त्रियों के लिये समान अधिकार, बालविवाह के विरुद्ध आन्दोलन, सामाजिक और वैधानिक असमानताओं के विरुद्ध जेहाद किया गया। धार्मिक क्षेत्र में धार्मिक अन्धविश्वासों, मूर्ति पूजा और पाखण्डों का खण्डन किया गया और

सामाजिक समानता के लिये संघर्षरत थे और इनका चरम लक्ष्य राष्ट्रवाद था। (19)

क्रांतिकारी दल :

सन् 1857 ई० में तो भारतीय जनता के द्वारा अंग्रेजी शासन के विरुद्ध एक क्रान्ति की गयी थी। इसके बाद सन् 1872 ई० में नामधारी सिक्खों या कूका का स्वतंत्रता आन्दोलन हुआ और सन् 22 जून 1847 ई० को पूना में प्लेग कमिश्नर रैण्ड और लेफ्टिनेंट आयर्स्ट की जो इस समय तक बहुत बदनाम हो चुके थे दामोदर चापेकर के द्वारा गोली मारकर हत्या कर दी गयी थी। सन् 1872 ई० और सन् 1897 ई० की ये घटनायें क्रांतिकारी आन्दोलन की ही कड़ियां थीं। इसके बाद सन् 1905 ई० में जब लार्ड कर्जन के द्वारा बंगाल का विभाजन किया गया तो इसके परिणाम स्वरूप उग्रराष्ट्रवाद का उदय हुआ। जिसकी एक धारा क्रांतिकारी आंदोलन थी। इस काल में क्रांतिकारी आन्दोलन का सबसे प्रबल रूप बंगाल में बंगाल में देखा जा सकता था। इसके साथ ही महाराष्ट्र, पंजाब और मद्रास में भी क्रांतिकारी कार्य हुए और भारतीय स्वतंत्रता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये विदेशों में भी क्रांतिकारी कार्य किये गये। इस काल के प्रमुख क्रांतिकारियों में बारीन्द्र कुमार घोष, भूपेन्द्र दत्त, श्याम जी कृष्ण वर्मा

सावरकर बन्धु, (विनायक दामोदर, सावरकर तथा गणेश सावरकर) लाला हरदयाल श्याम कृष्ण और मदन लाल धींगड़ा आदि के नाम उल्लेखनीय है।(11)

इस युग में राष्ट्रवादी आन्दोलन का नेतृत्व उग्रवादी और क्रांतिकारी विचारधारा के समर्थक नेताओं के हाथ में था दोनों के उद्देश्य तो समान थे किन्तु साधन की दृष्टि से दोनों में अंतर था। उग्रवादी प्रभावपूर्ण राष्ट्रीय आन्दोलन के पक्ष में थे जबकि क्रांतिकारी हिंसा और आतंक के मार्ग का अवलम्बन करना चाहते थे। (12) इन दोनों विचार धाराओं वाले नेताओं ने अपने कार्यक्रम का संचालन एक दूसरे से पृथक स्वतंत्र रूप से कार्य करना प्रारम्भ किया। बुन्देलखंड क्रांतिकारियों का प्रमुख केन्द्र था। मार्च सन् 1916 ई० में उल्लेख किया गया कि झाँसी जिले में कुछ उत्तेजना पैदा हुई है, इसका कारण यह है कि इसी समय ग्वालियर रियासत में आतंकवादी गतिविधियाँ बढ़ गयी। ऐसी सूचना मिली कि लगभग 200 लोगों ने झाँसी से कुछ मील दूरजिगना नामक स्थान पर अपना केन्द्र स्थापित कर लिया है। इन लोगों को तितर बितर करने के लिये सशस्त्र पुलिस नियुक्त कर दी गयी और उन्हें यह निर्देश जारी किया गया कि आतंकवादी ब्रिटिश इंडिया के क्षेत्रों में प्रवेश न कर पायें। (13) इसी समय झाँसी में एक

छपा हुआ पत्र प्राप्त हुआ जिससे क्रांतिकारी गतिविधियों के संकेत मिलते हैं। (14)

हमीरपुर जनपद के लिये यह अत्यंत गौरव की बात थी विश्वप्रसिद्ध गदर पार्टी का प्रतिनिधित्व इस जनपद के पं० परमानन्द जी ने किया परन्तु उनका कार्यक्षेत्र यह जनपद नहीं रहा। बाद में 20वीं शताब्दी के जो महत्वपूर्ण क्रांतिकारी आन्दोलन चला जिसकी संस्था का नाम "सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी था। जिसका प्रधान कार्यालय जनपद का पड़ोसी जिला झाँसी में था। इस दल की एक शाखा हमीरपुर में भी थी इस दल का मुख्य केन्द्र कुलपहाड़ था। कुलपहाड़ उनदिनों क्रांतिकारियों का आश्रय स्थल था। बिहार के सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी जोगेन्दर शुक्ल काफी समय यहां पर भूमिगत रहे। दीवान शत्रुघ्न सिंह का क्रांतिकारियों से काफी अच्छे सम्बंध थे। (15)

सन् 1929 ई० में चन्द्रशेखर आजाद भी कुलपहाड़ में आये थे। कुलपहाड़ आकर वह काफी समय तक खादी आश्रम में गुप्त रूप से रहे जहाँ पर बिहार के क्रांतिकारी जोगेन्द्र शुक्ल पहले से ही रह रहे थे। बाद में

वह यहाँ से कांग्रेस दल के लोगों के साथ लाहौर चले गये। वहाँ के लोगों ने उनको उस समय 500 रु० के चाँदी के सिक्के भेंट किये थे। उनके आने से जनपद के युवकों में क्रांतिकारी दल में प्रवेश करने की होड़ सी लग गयी थी। (16)

<u>कांग्रेस दल</u> :

सन् 1885 ई० में कांग्रेस की स्थापना के पूर्व भी भारत में ब्रिटिश इण्डियन एसोसियेशन और पूना की सार्वजनिक सभा आदि संस्था द्वारा राजनैतिक क्षेत्र में कार्य किया जा रहा था लेकिन इनमें से कोई संस्था अपने कार्य और स्वरूप की दृष्टि से राष्ट्रीय नहीं थी। कांग्रेस ही ऐसी प्रथम संस्था थी जिसके सम्बन्ध में पं० मदन मोहन मालवीय के शब्दों में कहा जा सकता है कि "भारत ने अपनी आवाज इस महान संस्था में पायी अतः इस समय से ही बहुत अंशों में कांग्रेस का इतिहास ही भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास बन गया।"

सन् 1885 ई० स्थापित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अखिल भारतीय स्वरूप का संगठन था। इसका उद्देश्य जाति धर्म या वर्ण के किसी भेदभाव के बिना सभी भारतवासियों का प्रतिनिधित्व करना था। कांग्रेस का

राष्ट्रीय स्वरूप इसी से स्पष्ट हो जाता है। इसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेशचंद्र बनर्जी भारतीय ईसाई थे। दूसरे दादा भाई नौरोजी पारसी थे तीसरे बदरुद्दीन तैयब मुसलमान थे और चौथे और तथा पांचवे अध्यक्ष जार्ज यूल तथा सर विलियम वेडरबर्न अंग्रेज थे। दूसरे गोलमेज सम्मेलन में महात्मा गांधी ने कांग्रेस के राष्ट्रीय स्वरूप पर इन शब्दों में जोर दिया था कांग्रेस सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय है यह किसी विशेष जाति वर्ग या हित की प्रतिनिधि नहीं है यह समस्त भारतीय हितों और सब वर्गों की प्रतिनिधि होने का दावा करती है। मेरे लिये सबसे अधिक प्रसन्नता की बात है कि उसकी उपज प्रारम्भ में एक अंग्रेज के मस्तिष्क में हुई। एलेन आक्टेवियन ह्यूम को कांग्रेस के पिता के रूप में ही जाना जाता है। दो महान पारसियों दादाभाई नौरोजी और फिरोजशाह मेहता ने इसका पोषण किया। प्रारम्भ में कांग्रेस में मुसलमान ईसाई एंग्लो इंडियन आदि शामिल थे, लेकिन मुझे यह कहना चाहिये कि इसमें सब धर्मों और हितों का पूर्णता के साथ प्रतिनिधित्व होता था।(17)

कांग्रेस का उद्देश्य प्रारम्भिक दिनों के प्रस्तावों में हम अत्यंत उदार पाते हैं। कांग्रेस के संस्थापक आकाश में उड़ने वाले आदर्शवादी नहीं थे,

बौद्धिक के व्यवहारिक सुधारक थे तथा उदारवाद की भावनाओं और सिद्धांतों से ओत प्रोत थे वे स्वतंत्रता की ओर धीरे-धीरे कदम बढ़ाना चाहते थे इसलिये उनकी प्रगति बहुत धीमी रही थी। (18)

सन् 1886 ई० में बुन्देलखंड के झाँसी संभाग के लोगों ने भी कांग्रेस के प्रति उत्साह प्रदर्शित किया फलतः यहाँ भी कांग्रेस आन्दोलन की नींव पड़ी। (19) सन् 1888 ई० में ही झाँसी के डी श्री बासपति घोष के झाँसी जिले के प्रतिनिधि के रूप में अखिल भारतीय कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने के लिये चुना गया जो इलाहाबाद में आयोजित की गयी थी। (20) सन् 1887 ई० से 1908 के मध्य भारतवर्ष के लोग अंग्रेज सरकार की दमनात्मक नीतियों के कारण काफी असन्तुष्ट रहे। प्रारम्भ में बुन्देलखंड संभाग का राष्ट्रीय आन्दोलन देश के अन्य भागों की ही तरह सन् 1885 ई० से सन् 1892 ई के सुधार सहयोग की भावना पर था। इन दिनों कांग्रेस मध्यमवर्गीय एक ऐसी संस्था थी जो भारत के शिक्षित लोगों की छोटी-मोटी मांगों के लिये सरकार का ध्यान आकृष्ट करती रही, किन्तु इसके पश्चात् यह संस्था प्रतिवर्ष मजबूत होती गयी। इस जनपद में कांग्रेस दल का सक्रिय योगदान रहा। कांग्रेस दल द्वारा चलाये गये सभी आन्दोलन इस जनपद में पूर्ण वेग से चलाये गये।

गाँधी जी द्वारा ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध चलाया गया आन्दोलन जो सहयोग आन्दोलन के ना से जाना जाता है जनपद की जनता ने उत्साहपूर्वक चलाया। विदेशी वस्त्रों की होली जलायी गयी सन् 1923 ई० में जिले के प्रथम खादी आश्रम की स्थापना कुलपहाड़ में की गयी। बाद के सविनय अवज्ञा एवं भारत छोड़ो आन्दोलन भी जनता द्वारा चलाये गये।(21)

(क) कांग्रेस की स्थापना तथा उसकी जनता में प्रतिक्रियायें

सुधारों की मांग हेतु एक मंच राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड डफरिन के आशीर्वाद से तथा ए० ओ० ह्यूम एवं विलियम वेडरबर्न जैसे राज नेताओ और उनके प्रयास से हुई थी। कांग्रेस की प्रथम बैठक सन् 29 अगस्त सन् 1885 में गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कालेज बम्बई के विशाल कक्ष में हुई थी। यहीं पर कांग्रेस के 72 प्रतिनिधियों ने पहला सम्मेलन किया। इस बैठक में यह परिलक्षित हो गया कि यह संस्था अखिल भारतीय स्तर की है और इन प्रतिनिधियों के दिमाग में भारत एक राष्ट्र की कल्पना थी।(22) शीघ्र ही इस संस्था ने एक राजनैतिक संगठन का रुप धारण कर लिया तथा भारतीयों को प्रशासन में अधिक से अधिक और स्थान दिलाने के साथ साथ विभिन्न प्रशासनिक

समस्याओं की ओर शासन का ध्यान आकृष्ट किया। भारत के पढ़े लिखे लोगों में शीघ्र ही इस संस्था ने अपना विश्वास बढ़ाते हुए प्रसिद्धि प्राप्त कर ली।(23)

सन् 1886 में बुन्देलखण्ड के झाँसी सम्भाग के लोगों ने भी कांग्रेस के प्रति उत्साह प्रदर्शित किया फलतः यहाँ भी कांग्रेस की नींव पड़ी। (24) सन् 1888 ई० में झाँसी के श्री श्रीवासपति घोष के झाँसी जिले के प्रतिनिधि के रूप में अखिल भारतीय कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने के लिये चुना गया जो इलाहाबाद में आयोजित की गयी थी। (25) प्रारंभ में कांग्रेस की स्थापना करने वालों में शिक्षित मध्यम वर्ग व्यापारी वकील, शिक्षक एवं बुद्धिजीवी लोग ही शामिल थे तब इस संस्था का स्वरूप अराजनैतिक संस्था जैसा था जो अंग्रेज अधिकारियों को ज्ञापन, प्रतिवेदन एवं प्रतिनिधि मंडल भेजकर उन्हें समझा बुझाकर कुछ सुविधायें प्राप्त करना चाहते थे इन राजनेताओं के कार्यों ने जनता में राजनीतिक चेतना पैदा करने में सहायता की। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी शासन के समय भारत का प्रशासनिक एकीकरण हुआ। फलतः व्यापारिक प्रतिष्ठानों बैंको एवं उद्योगों में अनेक मजदूर संगठन स्थापित हो गये। इन संगठनों ने भी राष्ट्रीय

सद्भावना की अभिवृद्धि करते हुए उसे और अधिक सशक्त बना दिया। सन् 1899 ई० के पश्चात् लगभग सन् 1909 ई० तक झाँसी बार एसोसिएशन के अध्यक्ष शंकर सहाय और रामदास भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की वार्षिक बैठक में नियमित रूप से भाग लेते रहे। (26) सन् 1897 ई० से सन् 1908 ई० के मध्य भारत वर्ष के लोग अंग्रेज सरकार की दमनात्मक नीतियों से काफी असन्तुष्ट रहे। प्रारम्भ में बुन्देलखण्ड सम्भाग का राष्ट्रीय आन्दोलन देश के अन्य भागों की भाँति सन् 1885 ई० से सन् 1892 ई० के मध्य सहयोग की भावना पर आधारित था। इन दिनों कांग्रेस मध्यम वर्गीय एक ऐसी संस्था थी जो भारत के शिक्षित लोगों की छोटी मोटी माँगों के लिए सरकार का ध्यान आकृष्ट करती रही। किन्तु इसके पश्चात् यह संस्था प्रतिवर्ष मजबूत होती गयी।

वास्तव में सन् 1857 ई० के विद्रोह की समाप्ति के बाद कुछ वर्षों तक जनपद में राष्ट्रवादी आन्दोलन की गतिविधियों की गति धीमी रही। इसका कारण यह था कि लोग तूफान के बाद की शान्ति की मनोदशा से गुजर रहे थे तथा आगामी आन्दोलन हेतु शक्ति संचय कर रहे थे। भविष्य के कार्यक्रमों को निर्धारित करने हेतु योजनाबद्ध तरीके कार्य

करने हेतु विचार विमर्श कर रहे थे। राष्ट्रीय क्षितिज पर जैसे ही अखिल भारतीय कांग्रेस की स्थापना हुई उसका जनपद के लोगों ने स्वागत किया। कांग्रेस के जन आन्दोलन का रूप धारण करते ही हमीरपुर जनपद में इसमें अपनी भागीदारी विस्तृत आधार पर सुनिश्चित की।

## ख - जनपद के लोगों का कांग्रेस में प्रवेश

भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु चारों ओर अनेकों संस्थायें संगठित हो चुकी थीं। किन्तु कांग्रेस की स्थापना से एक अखिल भारतीय संस्था का स्वरूप इस संस्था ने धारण कर लिया था और प्रारम्भ से ही कांग्रेस भारत की राजनीतिक प्रगति हेतु कार्य करने लगी थी। (27) सन् 1919 ई० के पश्चात् कांग्रेस में कृषक मजदूर आदि वर्गों के प्रवेश से यह संस्था जन आन्दोलन के रूप में कार्य कर रही थी। सन् 1919 ई० से राष्ट्रीय आन्दोलन में गाँधी युग का प्रारम्भ होता है और इस युग ने राष्ट्रीय आन्दोलन में अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। (28) इस युग का उद्घाटन वास्तव में सन् 1919 ई० में रौलेट बिल के विरुद्ध प्रारम्भ किए गये गाँधी जी के सत्याग्रह से होता है। यह बिल अंग्रेजी सरकार का ऐसा प्रयास था कि भारतीयों की स्वतंत्रता की माँग का दमन किया जा सके। कांग्रेस ने सन् 1919 ई० में सम्मेलन में जो प्रस्ताव पारित किया था उसे भारतीयों ने ब्रिटिश शासन के प्रति उभरे असन्तोष के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया। (29)

गाँधी जी के राजनीति में प्रवेश के साथ ही कांग्रेस का विस्तार

होने लगा। नगर-नगर कस्बों गाँवों में कांग्रेस कार्यालय की स्थापना होने लगी थी। हमीरपुर जनपद में सर्वप्रथम कांग्रेस दल का कार्यालय कुलपहाड़ में सन् 1929 ई० में खोला गया राष्ट्रीय आन्दोलन में जन साधारण के भाग लेने का एक प्रमुख कारण गाँधी जी का नेतृत्व तो था ही साथ ही इसके कई अन्य कारण भी थे। ब्रिटिश सरकार ने युद्ध में धन व्यय किया था। इससे भारतीयों की दशा पहले से भी अधिक खराब हो गयी थी। सन् 1921 ई० में कांग्रेस ने विदेशी कपड़ों का पूरा बहिष्कार किया इस प्रसंग में स्वयं सेवकों ने घर-घर से विदेशी कपड़ा इकट्ठा करके उसकी होली जलायी। (30) जनपद के कुलपहाड़ कस्बे में ही विदेशी कपड़ों की होली जलाकर खादी पहनने का प्रण किया गया। इस घटना के बाद समस्त जनपद कुलपहाड़ कस्बा कांग्रेसी आन्दोलनों का मुख्य केन्द्र बन गया।

तत्पश्चात् जनपद में कांग्रेस दल के अनेक नेता जैसे लाल बहादुर शास्त्री, श्री प्रकाश, खान अब्दुल गफ्फार खान आदि भी हमीरपुर जनपद में आये। 31 जनपद में इन नेताओं का अपार स्वागत हुआ लोगों ने खादी पहनना एवं कांग्रेसी टोपी लगाना शुरु कर दिया। गाँधी जी तथा अन्य राष्ट्रीय नेताओं का चित्र लगाना शुरु कर दिया। जनपद में

स्थान-स्थान में लोगों ने चरखा कातना शुरू कर दिया। तिरंगा लेकर झंडा गान गाया करते थे तथा नारा लगाया करते थे -

" झंडा ऊंचा रहे हमारा "

तथा

" चार चवन्नी चाँदी की,
जय बोलो महात्मा गाँधी की " । (32)

सन् 1934 ई० महरौनी (मौदहा) में एक विशाल कांग्रेस सम्मेलन आयोजित किया गया था। जिसे पं० जवाहर लाल नेहरू ने सम्बोधित किया था। इस सम्मेलन में जिला जनपद के अनेक लोगों ने कांग्रेस दल की सदस्यता ग्रहण की। (33)

इससे पूर्व सन् 1931 ई० में कुलपहाड़ में भी एक कांग्रेस सम्मेलन हुआ था। जिसकी अध्यक्षता पुरुषोत्तम दास टण्डन ने की थी। इस सम्मेलन में भी जनपद के अनेक जन कांग्रेस में शामिल हुये। (34)

## जनपद हमीरपुर के सर्वप्रथम कांग्रेस कार्यकर्ताओं की सूची

1. दीवान शत्रुघ्न सिंह (ममरौठ)
2. पं० भगवानदास अरजरिया अखेन्दु (कुलपहाड़)
3. सुखभाई हरिजन (दरगवाँ)
4. रामगोपाल गुप्ता (मौदहा इस्लामपुर)
5. ईश्वर दास गुप्ता (महोबा)
6. रामसेवक खरे (महुपेला)
7. रामसेवक चौबे (इस्लामपुर)
8. किशोर गुरुदेव (महोबा)
9. चेतराम नम्बरदार (गहरौली)
10. मानिक चन्द गुरुदेव
11. स्वामी ब्रह्मानंद (राठ)
12. मन्नी लाल गुरुदेव
13. शारदा दीन (भरतरा)
14. कालूराम लोधी
15. अब्दुल रज्जाक
16. मूलचन्द टेलर
17. तेज प्रताप सिंह
18. केदारनाथ गुरुदेव
19. बैजनाथ पाण्डेय
20. लाल दीवान
21. गंगाधर वैद्य
22. माधव बाबा
23. शिव नारायण दुबे
24. नारायण सिंह (बेंदों)
25. हर प्रसाद विद्यार्थी (35)

## महिलायें

1. श्रीमती रानी राजेन्द्र कुमारी पत्नी श्री दीवान शत्रुघ्न सिंह (मगरौठ)
2. श्रीमती किशोरी देवी पत्नी श्री भगवान दास अरजरिया (कुलपहाड़)
3. श्रीमती रुक्मणि तिवारी पत्नी श्री मोती लाल तिवारी (सुगीरा)
4. श्रीमती सरस्वती देवी पत्नी श्री मंटो लाल (जैतपुर)
5. श्रीमती सरजू देवी पत्नी श्री विश्वेश्वर दयाल सर्राफ (महोबा)
6. श्रीमती जमुना देवी पत्नी श्री छोटे भाई (राठ)
7. श्रीमती उर्मिला बहन पत्नी श्री लक्ष्मी (राठ)
8. श्रीमती राजा बेटी बहिन श्रीपत सहाय (जराखर)
9. श्रीमती भगवती देवी पत्नी श्री शम्भू दयाल (मैदपुर)
10. श्रीमती देवी पत्नी पुन्ना देव (अध्यापक राठ)
11. श्रीमती रानी देवी बहिन पुन्ना देव (राठ) (35)

## ग – कॉंग्रेस आन्दोलनों में जनता का प्रवेश

जनपद में कॉंग्रेस दल की स्थापना के होते ही जनता ने आन्दोलनों में भाग लेना शुरु कर दिया। सन् 1917 ई० में होम रूल लीग की स्थापना लोकमान्य तिलक ने की जिसमें बुन्देलखंड संभाग के कांग्रेस के लोगों ने बड़ी संख्या में प्रवेश किया। (37) इस आन्दोलन का सूत्रपात कांग्रेस के अन्दर ही लोकमान्य तिलक और एनी बेसेण्ट ने किया था। उसी वर्ष तिलक झाँसी आये (38) उनके आगमन का पूरे बुन्देलखण्ड में स्वागत हुआ। तिलक के अनुसार हिन्दुत्व का पुर्नजागरण भारत के पुर्ननिर्माण के लिये आवश्यक था। (39) तिलक की इस अपील का जनपद में जोर-शोर से स्वागत हुआ।

जनपद के लोगों ने राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण भागीदारी निभायी। लोगों ने स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय और प्रान्तीय स्तर के प्रत्येक आन्दोलनों में उत्सुकता पूर्वक हिस्सा लिया और बुन्देलखण्ड की स्वतंत्रता की परम्परा को यथावत् बनाये रखा। जनपद में महोबा कुलपहाड़, हमीरपुर के लोगों ने ब्रिटिश शासन का हर स्तर पर विरोध किया।

जनपद के लोगों ने कांग्रेस द्वारा चलाये गये समस्त आन्दोलन जैसे

असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, साइमन कमीशन बैक टू गो आन्दोलन, नमक आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन को सफलता पूर्वक चलाया। गाँधी जी द्वारा चलाये गये आन्दोलन पूर्णरूपेण अहिंसक था। कदाचित् भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की मनोवृत्ति हिंसात्मक हुई होती तो भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का संवैधानिक और शान्तिपूर्ण मार्ग अवरुद्ध हो जाता तथा एक प्रजातांत्रिक धर्म निरपेक्ष एवं स्वतंत्र भारत के विकास में भी अवरोध उत्पन्न हो सकता था। (40) वास्तव में कांग्रेस ने अपने प्रारम्भ से ही स्वराज्य भारत के सभी लोगों के लिये प्राप्त करने का प्रयास किया। (41) सन् 1920 ई० में कांग्रेस ने अपने कार्यक्रम में क्रांतिकारी परिवर्तन किया था तथा ब्रिटिश शासन के प्रति उत्तरोत्तर असहयोग की नीति अपनायी। इस असहयोग में सविनय अवज्ञा भी शामिल था जो किसी व्यक्ति समुदाय तथा क्षेत्र विशेष की समस्याओं के निवारण हेतु अपनाया जाना था। इस आन्दोलनों में भाग लेते हुए जनपद की जनता के बीच एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें जनता से सरकार के विरुद्ध असहयोग नीति अपनाने तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने तथा आम हड़ताल करने को कहा गया। इस शान्तिपूर्ण सभा को तितर बितर करने के लिये पुलिस ने हल्का लाठी चार्ज किया। बाद में भगवानदास

अरजरिया, दीवान शत्रुघ्न सिंह तथा मन्नीलाल गुरुदेव को गिरफ्तार किया गया। (42) बाद में यह आन्दोलन राठ, महोबा आदि तहसीलों में फैल गया। (43)

सन् 1919 ई0 गाँधी जी के नेतृत्व में शक्तिशाली परन्तु अहिंसात्मक आन्दोलन समस्त भारत वर्ष के साथ बुन्देलखण्ड में भी चलाया गया। इस आन्दोलन में शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किया गया। न्यायालयों का बहिष्कार, हड़ताल एवं सत्याग्रह चलाये गये शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार किया गया। शराब एवं विदेशी वस्तुएं बेचने वाली दुकानों पर धरना दिया गया। विदेशी वस्तुओं की होली जलायी गयी। यह आन्दोलन बुन्देलखण्ड के गाँव-गाँव में फैल गया। मऊरानीपुर (झाँसी) में कालका अग्रवाल, आत्माराम, गोविंद खेर, रघुनाथ विनायक, धुलेकर कुन्जबिहारी लाल शिवानी कामरेड अयोध्या प्रसाद, कामरेड पन्ना लाल शर्मा (बरुआ सागर) राम सहाय शर्मा, चन्द्र मुखी देवी। (44) दीवान शत्रुघ्न सिंह, बालेन्दु अरजरिया किशोरी देवी, राजेन्द्र कुमारी राठ- कुलपहाड़ में तथा ललितपुर में किलेदार तथा बांदा में कुंवर हरप्रसाद ने सत्याग्रह एवं आन्दोलन का नेतृत्व किया। (45)

जिला हमीरपुर में स्वदेशी आन्दोलन के तहत कुलपहाड़, महोबा, राठ आदि कस्बों में विदेशी कपड़ों की होली जलायी गयी थी तथा खादी आश्रम खादी उत्पादन केन्द्र की स्थापना की गयी। प्रदर्शन हड़ताल जुलूस आदि बुन्देलखण्ड में निकाले जा रहे थे। अदालतों, शिक्षा संस्थाओं तथा सरकारी सेवाओं का बहिष्कार जारी था। विदेशी कपड़ों एवं जलायी जा रही थी। इन सबको दबाने के लिये सरकार ने गिरफ्तारियाँ एवं दमन चक्र चालू कर दिया। समस्त बुन्देलखण्ड में लगभग 1599 व्यक्ति गिरफ्तार किये गये तथा पुलिस ने अनेक स्थानों पर जुलूस एवं प्रदर्शनों पर लाठी चार्ज किया। जिसमें अनेक व्यक्ति घायल हुए। (46) किन्तु चौरी चौरा काण्ड के पश्चात् असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया गया।

साइमन कमीशन के विरोध में झाँसी मऊरानीपुर, हमीरपुर नगर एवं बाँदा नगर में प्रमुख रूप से प्रदर्शन एवं गिरफ्तारियाँ हुई। झाँसी रेलवे स्टेशन पर अनेक कांग्रेसी एवं गैर कांग्रेसी सदस्यों ने साइमन कमीशन वापस जाओ के नारे लगाये। पुलिस ने प्रदर्शन कारियों पर लाठी चार्ज किया तथा अनेक बन्दी बना लिये गये।(47)

बुन्देलखण्ड में स्वराज्य पार्टी का गठन किया गया। झाँसी नगर में सिंहैया खिड़की के बाहर एवं झाँसी से आठ मील दूर बड़ा गाँव में स्वराज्य

दल का कैम्प लगाया गया। इस आश्रम से बाद में 28 कार्यकर्ता बन्दी बनाये गये। (48)

26 जनवरी सन् 1938 ई० को पूर्ण स्वाधीनता दिवस के रूप में सम्पूर्ण देश में मनाया गया। इस अधिवेशन में बुन्देलखण्ड की ओर से झाँसी एवं हमीरपुर के प्रतिनिधियों ने प्रतिनिधित्व किया। हमीरपुर जिले सत्याग्रह संचालन की बागडोर श्री भगवान दास अरजरिया बालेन्दु के हाथ सौंप दी। (49) नमक का सत्याग्रह तोड़ा गया लेकिन पुलिस ने किसी को भी गिरफ्तार नहीं किया। भारत छोड़ो आन्दोलन में भी जनपद के लोगों ने भाग लिया। परिणामस्वरूप अन्त में सन् 1947 ई० में भारत स्वतंत्र हो गया।

## Foot Notes

1. एनी बेसेन्ट – हाऊ इंडिया फाट फार फ्रीडम पेज– 51
2. सी परमेश्वरम – दयानन्द एण्ड इण्डियन प्राब्लम पेज– 228–229
3. ए० सी० मजूमदार – इण्डियन नेशनल इवोल्यूशन पेज 23
4. इन्द्र विद्यावाचस्पति – भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास पेज– 23
5. हंस रोहेन (Rohen) – हिस्ट्री आफ नेशनलिज्म इन द ईस्ट पेज– 62
6. होम डिपार्ट प्रोसीडिंग पोलिटिकल 1912 राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली।
7. स्वामी विवेकानन्द – कोटेड फ्राम कन्टीन्यूटी एण्ड चेन्ज इन इण्डियन पोलिटिक्स से० वी० कल्नाकरन पेज 2–27
8. स्वामी विवेकानन्द – दि न्यूयार्क हेरल्ड
9. हंस रोहेन – हिस्ट्री आफ नेशनलिज्म इन ईस्ट पेज 71–72
10. ए० आर देसाई – सोशल बैकग्राउण्ड आफ इण्डियन नेशनलिज्म पेज 210
11. पुखराज जैन – भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन पेज 88–91
12. रघुवंशी वी० पी० एस० – इण्डियन नेशनलिस्ट मूवमेंट एण्ड थाट – 67
13. गवर्नमेंट आफ इण्डिया – होम डिपार्टमेण्ट पालिटिकल ब्रांच प्रोसीडिंग मार्च सन् 1916 नं० 50 पेज 6 सीक्रेट नं० 383–C दिनांक 8 मार्च सन् 1916 राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली।
14. ——— वही ——— प्रोसीडिंग मई सन् 1916.
15. अनासक्त मनस्वी – अभिनन्दन ग्रन्थ पेज 191
16. ——— वही ——— पेज 192– 193
17. पट्टाभि सीतारमैय्या – दि हिस्ट्री आफ दि इण्डियन नेशनल कांग्रेस वाल्यूम I पेज 20
18. जी० आर० प्रधान – इण्डियन स्ट्रगल फार फ्रीडम पेज 24

41. इनसाइक्लोपीडिया आफ इंडियन नेशनल कांग्रेस भाग-12 सन् 1939-1946 ए फाईट टू फिनिश सम्पादक जैदी, इंडियन इन्स्टीट्यूट आफ अप्लाइड पोलिटिकल रिसर्च पेज 499.

42. अनासक्त मनस्वी पेज 56-57

43. ------ तदैव -------

44. राष्ट्र कवि घासीराम व्यास - रामचरण हयारण पेज 28-36

45. अनासक्त मनस्वी पेज 56

46. झाँसी गजेटियर सन् 1965 जोशी ई०वी० पेज 72

47. चिरौंजी की आत्म कथा लेखक चतुर्भुज शर्मा पेज 48

48. झाँसी गजेटियर सन् 1965 जोशी ई० वी० पेज 73

49. अनासक्त मनस्वी पेज 195

## अध्याय - 7

## जनपद में राष्ट्रीय आन्दोलन की महत्वपूर्ण घटनायें :

भारतीय जनता के तीव्र विरोध के बावजूद "चेम्सफर्ड सरकार द्वारा "रौलेट एक्ट" पास कर दिया गया। इससे देशवासियों का ब्रिटिश सरकार की न्यायप्रियता से विश्वास उठ गया। विशेषकर गाँधी जी को यह विश्वास हो गया कि भारतीय के लिये अपनी स्थिति सुधारना तथा स्वतंत्र एवं सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत करना तभी संभव है, जब कि वह स्वयं अपने देश के स्वामी हों और इसके लिये उन्होंने सत्याग्रह और असहयोग के हथियार का उपयोग किया। (1)

मार्च सन् 1919 ई० में जब मोहनदास करमचंद गाँधी ने "रौलेट एक्ट" के खिलाफ सत्याग्रह का नारा दिया तो यह भारत का देश व्यापी संघर्ष छेड़ने का उनका पहला प्रयत्न था। उस समय उनकी उम्र पचास वर्ष हो चुकी थी। वह व्यक्ति जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की बागडोर संभालने ही वाला था और जिसके नेतृत्व में इस संग्राम को सबसे महत्वपूर्ण दौर से गुजरना था। (2)

अनुभव और लोकप्रियता ने गाँधीजी को अदम्य साहसी बना दिया था। इसी साहस और विश्वास के कारण उन्होंने फरवरी सन्

1919 ई० में प्रस्तावित "रौलेक्ट एक्ट" के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन का आह्वान किया। अंग्रेज आतंकवादी गतिविधियों को दबाने के नाम पर भारतीयों के मौलिक अधिकारों का हनन करना चाहते थे। रौलट की अध्यक्षता में एक कमेटी ने दो विधेयक तैयार किये, जिसे "रौलेट बिल" का नाम दिया गया। दोनों विधेयक लेजिस्लेटिव कौंसिल में पेश किये गये थे और इसमें से एक विधेयक तो निर्वाचित भारतीय सदस्यों के तमाम विरोध के बावजूद तुरंत पारित कर दिया गया। अंग्रेजी हुकूमत के इस कानून को भारतीय जनता अपने लिये अपमानजनक समझती थी। यह कानून ऐसे समय पर लाया गया था (विश्व युद्ध की समाप्ति पर) जब भारतीय जनता संवैधानिक सुधारों का इंतजार कर रही थी। (3)

संवैधानिक प्रतिरोध का जब कोई असर नहीं हुआ, तो गाँधी जी ने सत्याग्रह करने का सुझाव दिया। एक "सत्याग्रह सभा" गठित हुयी। इसमें अधिकतर "होमरूल लीग" के सदस्य थे, जो अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ संघर्ष करने के लिये बेताब थे। इसके बाद प्रचार कार्य शुरु हो गया। देशव्यापी हड़ताल, उपवास, और प्रार्थना सभायें आयोजित करने का फैसला किया गया। साथ ही कुछ प्रमुख कानूनों की अवज्ञा करने का

निर्णय लिया गया। इसके लिये अप्रैल की तारीख तय की गई। (4) आंदोलन को जो स्वरूप धारण किया गया था वह अप्रत्याशित था। तारीख के बारे में कुछ गलत फहमी के कारण दिल्ली में 30 मार्च को हड़ताल आयोजित की गई जिसके दौरान काफी हिंसा भड़की। बाकी स्थानों पर भी जब हड़ताल की गई तो हिंसा भड़की। 30 मार्च को दिल्ली की घटनाओं का वर्णन करते हुए डा० पट्टाभिसीतारमैया ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि- " यहाँ 30 मार्च को एक विशाल जुलूस निकाला गया और हड़ताल की गई। उस दिन जुलूस के नेतृत्व स्वामी श्रद्धानंद कर रहे थे। उन्हें कुछ गोरे सैनिकों ने गोली से मारने की धमकी दी परन्तु उसका कोई असर नहीं हुआ। दिल्ली रेलवे स्टेशन पर प्रदर्शनकारियों पर गोली चलायी गई (5) जिसमें 5 व्यक्ति मारे गये तथा 20 व्यक्ति घायल हो गये। इधर समस्त देश में इस विधेयक विरोध में व्यापक हड़तालें की गई। समस्त देश का वातावरण उग्र हो गया अमृतसर और लाहौर में तो स्थिति पर नियंत्रण पाना मुश्किल हो गया।

## अध्याय -- 7-- (अ)

### असहयोग आन्दोलन में जनता का योगदान :

बीसवीं सदी के दूसरे दशक के अंतिम वर्षों में यानी सन् 1920 का वर्ष भारतीय जनता के लिये निराशा और क्षोभ का वर्ष था। जनता उम्मीद लगाये बैठी थी कि प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् ब्रिटिश सरकार उनके लिये कुछ करेगी, लेकिन " रोलेक्ट एक्ट", जलियांवाला बाग कांड और पंजाब में मार्शल ला ने उनकी सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। जनता समझ कि ब्रिटिश सरकार केवल दमन के उन्हें कुछ नहीं देगी। मांटफ्यू चेम्स फोर्ड सुधारों सन् 1919 ई0 का अर्थ दोहरी शासन प्रणाली लागू करना था, न कि जनता को राहत देना था। इससे भी असंतोष और उभरा। मुसलमानों को महसूस होने लगा कि अंग्रेजी हुकूमत ने उन्हें भी धोखा दिया है प्रथम विश्वयुद्ध में मुसलमानें का सहयोग लेने के लिये अंग्रेजों ने तुर्की के प्रति उदार रवैया अपनाने का वादा किया था। पर बाद में वे मुकर गये। भारत में मुसलमान तुर्की के खलीफा का अपना धर्मगुरु मानते थे। उन्हें लगा कि अब तुर्की के धर्मस्थलों पर खलीफा का नियन्त्रण नहीं रह जायेगा। भारतीय मुसलमान इससे बहुत क्षुब्ध हुये।(6) गांधी जी और उन जैसे

तमाम लोग जो यह उम्मीद लगाए बैठे थे कि जलियांवाला बाग कांड और पंजाब में उपद्रवों की निष्पक्ष जांच होगी और ब्रिटिश सरकार तथा जनता इसकी एक स्वर से निंदा करेगी। अब निराश हो चले थे। हंटर कमेटी द्वारा इन घटनाओं की जांच जिस तरह की जा रही थी। उससे लोग काफी क्षुब्ध थे उधर ब्रिटिश संसद विशेष कर 'हाउस आफ लार्ड्स' में जनरल डायर के कारनामों को उचित करार दिया था और 'मार्निंग पोस्ट' ने डायर के लिये 30 हजार पौंड का कोष इकट्ठा किया था। (7) ये सारी कारगुजारियाँ अंग्रेजी हुकूमत का पर्दाफाश करने के लिए काफी थीं। अप्रैलसन् 1920 ई0 में एक ब्रिटिश सरकार के पास अपने गलत कदमों को सही ठहराने के सारे तर्क चुक गये थे। खिलाफत नेताओं से साफ-साफ कह दिया गया था। कि वे अब और अधिक उम्मीद न रखें। तुर्की के साथ सन् 1920 ई0 में हुई संधि इस बात का सबूत थी कि तुर्की के विभाजन का फैसला अंतिम है। गाँधी जी को इससे भी गहरा दुख पहुंचा। वह खिलाफत सम्मेलन में उन्हें विशेष अतिथि के रूप में बुलाया गया था। गाँधी जी को भी अहसास हुआ कि अंग्रेजों ने धोखा दिया है। सन् 1920 ई0 में गाँधी जी ने खिलाफत कमेटी को अंग्रेजों के खिलाफ अहिंसक

असहयोग आंदोलन छेड़ने की सलाह दी। 9 जून सन् 1920 ई0 को इलाहाबाद में खिलाफत कमेटी ने इस सलाह को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया और गांधी जी को इस आंदोलन की अगुआई करने का अधिकार सौंपा। (8) इसी बीच कांग्रेस को भी महसूस होने लगा था कि संवैधानिक और तरीकों से कुछ हासिल होने वाला नहीं है। पंजाब उपद्रवों की जाँच करने वाली कमेटी की रिपोर्ट से भी कांग्रेस को निराशा ही हाथ लगी। कांग्रेस ने खुद इन घटनाओं की जाँच कराई और सच का पता लगाया। इस तरह ब्रिटिश हुकूमत के रवैये से क्षुब्ध कांग्रेस भी असहयोग आंदोलन का रास्ता अख्तियार करने को तैयार थी। मई सन् 1920 ई0 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई और सितंबर में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन आयोजित करने का फैसला किया गया उद्देश्य था – आगे की रणनीति तय करना। (9) देश की जनता भी अंग्रेजी हुकूमत से खार खाए बैठी थी इससे पहले के चार दशकों के राष्ट्रीय आंदोलन ने जनता के एक बहुत बड़े तबके को राजनीतिक रूप से सक्रिय बनाया था। अंग्रेजी हुकूमत की धोखेबाजी और दमन से जनता कसमसा उठी थी। उसे लग रहा था कि अब चुप होना कायरता होगी। (10) इसके अलावा आर्थिक

कठिनाइयों ने भी जनता का संघर्ष के लिये उकसाया था प्रथम विश्व युद्ध के कारण मंगाई बहुत बढ़ गई थी। नगरों और कस्बों में रहने वाले मजदूर दस्तकार, मध्यमवर्ग और निम्न मध्यमवर्ग सभी परेशान थे। खाद्यान्नों की कमी तो थी ही कीमतें भी आसमान को छू रही थीं। मुद्रास्फीति लगातार बढ़ती जा रही थी। विश्वयुद्ध समाप्त होने के बाद भी यह क्रम समाप्त नहीं हुआ। गांवों में किसान और खेतिहर मजदूर प्लेग महामारी फ्लेग से जूझ रहे थे। इन महामारियों की चपेट में आकर हजारों लोग मर गये। इस तरह शहरों- गांवों और कस्बों में सभी जगह अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लोग कसमसा रहे थे। विशेष कर इस ऊर्जा को सही दिशा देने मात्र की जरूरत थी। (11)

पहली अगस्त सन 1920 ई० को आंदोलन छिड़ गया। गांधी जी ने 22 जून को वाइसराय को एक नोटिस दिया था। जिसमें लिखा था; कुशासन करने वाले शासक को सहयोग देने से इन्कार करने का अधिकार हर आदमी को है। पहली अगस्त को ही प्रातः तिलक का निधन हो गया। तिलक के निधन पर शोक और आंदोलन की शुरूआत दोनों चीजें एक साथ मिल गई। पूरे देश में हड़ताल मनाई गई, प्रदर्शन हुए। सभायें आयोजित की गई और कुछ लोगों ने उपवास रखा। (12)

सितंबर में कलकत्ता में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ. कई वरिष्ठ नेताओं के विरोध के बावजूद असहयोग आंदोलन को कांग्रेस ने मंजूरी देदी। इसे अपना आंदोलन मान लिया। विरोधियों में प्रमुख सी. आर. दास उनका विरोध विधान परिषदों ( लेजिस्लेटिव एसेंबली ) के बहिष्कार को लेकर था। कुछ ही दिन बाद इनके चुनाव होने वाले थे। लेकिन बहिष्कार के विचार से असहमति रखनेवालों ने भी कांग्रेस के अनुशासन का पालन किया और चुनावों में भाग नहीं लिया। ज्यादातर मतदाताओं ने भी इनका बहिष्कार किया। (13) अंत में चौरी-चौरा कांड आदि घटनायें होने पर 12 फरवरी सन 1922 ई० को गाँधी जी के अनुरोध पर कांग्रेस कार्यकारिणी ने आंदोलन स्थगित कर दिया और सभी कांग्रेसजनों को तदर्थ कार्यवाही रोक देने का आदेश दिया। (14) बुन्देलखंड में सर्वप्रथम झाँसी में सन 1916 ई० में एक संयुक्त प्रांत राजनैतिक कांग्रेस का आयोजन किया था जिसके स्वागताध्यक्ष सी. वाई. चिन्तामणि बनाये गये थे इसके आयोजक हरनारायण गौरहार थे। इस कांग्रेस में अन्य जिलों के भी कांग्रेस विचारधारा के लोग एकत्रित हुये थे। इसमें झाँसी के आत्माराम गोविंद खेर रघुनाथ विनायक धुलेकर लक्ष्मणराव, कामरेड अयोध्या प्रसाद आदि ने भाग

लिया था। बाद में सी. वाइ. चिन्तामणि एवं श्यामाचरण घोष ने सन् 1919 ई0 में अमृतसर में काँग्रेस अधिवेशन में जाकर बुन्देलखंड का प्रतिनिधित्व किया था (15) इन समस्त काँग्रेसी विचारधारा के लोग ने सन् 1917-16 ई0 के काँग्रेस द्वारा चलाये गये होम रूल आन्दोलन में भी भाग लिया तथा उसकी एक शाखा की स्थापना की गयी थी। (16)

<u>गाँधी जी बुन्देलखंड में</u> :

सन् 1919 ई0 में गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन के आह्वान पर समस्त बुन्देलखंड में इसकी प्रतिक्रिया आरम्भ हो गई, इस से बुन्देलखंड के चारों जिले प्रभावित हुए। झाँसी और हमीरपुर जिलों की इसमें प्रमुख भूमिका रही। इस बीच गाँधी जी ने संयुक्त प्रांत का तूफानी दौरा आरम्भ किया फलस्वरूप सन् 1919 ई0 में उन्होंने मुरादाबाद, अलीगढ़, कानपुर, लखनऊ और बरेली में असहयोग सभाओं को सम्बोधित करते हुए 20 नवम्बर सन् 1920 में झाँसी आये। इस अवसर पर झाँसी नगर का हाईगंज (सुभाष गंज) जहाँ पर गाँधी जी का भाषण होना था बहुत सजाया गया था और रौशनी का प्रबन्ध किया गया था। गाँधी जी के साथ मौलाना शौकत अली भी आये थे। (17)

गांधी जी ने रोशनी और सजावट की आलोचना करते हुए अपने भाषण में कहा "जब तक खिलाफत का सवाल हल नहीं होता, पंजाब में किये गये अत्याचारों का इन्साफ नहीं किया जाता और स्वराज्य हासिल नहीं हो जाता तब तक किसी भी खुशियों में शामिल नहीं होना चाहिये। हमारा उद्देश्य केवल हिन्दू-मुस्लिम एकता और हिंसा-रहित असहयोग से ही पूरे हो सकते हैं। (18)

इसके बाद उन्होंने असहयोग कार्यक्रम के विविध अंगों पर बल दिया और कहा कि किसी को भी सेना में भरती नहीं होना चाहिये। अन्त में उन्होंने सरस्वती पाठशाला के लिये चन्दे की अपील की। (19) झांसी नगर में नगर आगमन पर समस्त बुन्देलखंड में तीव्र प्रतिक्रिया हुई इस आन्दोलन में समस्त जनपद के अनेक लोगों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया इनमें से आत्मा गोविन्द खेर, रघुनाथ विनायक धुलेकर, लक्ष्मण राव कदम, कुंज बिहारी लाल सिवानी, कृष्ण गोपाल शर्मा तथा स्त्रियों में पिस्तादेवी तथा चन्द्रमुखी और पिस्ता देवी (सभी झांसी से) तथा भगवान दास अरजरिया, दीवान शत्रुघ्न सिंह, मन्नी लाल जी गुरुदेव, बैजनाथ तथा दीवान जी की पत्नी प्रमुख थीं यह सभी लोग झांसी में गांधी जी की सभा में शामिल हुये थे। (20)

झाँसी में गांधी जी के आह्वान पर तथा उनसे प्रभाव पा कर शीघ्र ही हमीरपुर जनपद में कांग्रेस विचार धारा को लोग एकत्रित होने लगे तथा जनपद में असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया गया।

सर्वप्रथम कुलपहाड़ कस्बे में सन् 1929 ई० के प्रारम्भ के महीनों में विदेशी कपड़ों की एक विशाल होली जलायी गयी तथा आजन्म खादी धारण करने का प्रण किया गया। इसी बीच जनपद में प्रथम खादी भंडार की स्थापना की गई। (21) बाद में कुलपहाड़ कस्बे में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें जनता से सरकार के विरुद्ध असहयोग की नीति अपनाने तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने तथा आम हड़ताल करने को कहा गया। इस शान्तिपूर्ण सभा को तितर बितर करने के लिये पुलिस ने लाठी चार्ज किया। बाद में भगवान दास अरजरिया, दीवान शत्रुघ्न सिंह तथा मन्नीलाल गुरुदेव को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस की इस कायरतापूर्ण कार्यवाही के विरुद्ध में समस्त कुलपहाड़ बंद का आयोजन किया गया। इसी दिन शाम को एक सभा का पुनः आयोजन किया गया। इस सभा की अध्यक्षता बांदा के प्रमुख वकील एवं कांग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ता कुंवर हरप्रसाद ने की इस सभा के प्रमुख वक्ता एवं बैजनाथ

तिवारी ने कस्बे में पुलिस कार्यवाही की घोर निंदा की तथा समस्त गिरफ्तार लोगों को बंदी बनाये जाने पर सरकार परराष्ट्र प्रस्ताव पास किया गया। (22)

सन् 1928 ई० में कलकत्ता में कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित किया गया। उस समय कलेन्दु अरजरिया को कांग्रेस कमेटी हमीरपुर जनपद का महामंत्री तथा जिले से कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में दीवान शत्रुघ्न सिंह को चुना गया।

बाद में दीवान शत्रुघ्न सिंह कलकत्ता में कांग्रेस अधिवेशन में जनपद के प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुये। वहाँ पर दीवान शत्रुघ्न सिंह ने गांधी जी को हमीरपुर जनपद में आने का निमंत्रण दिया। (23)

सन् 1929 ई० में गांधी जी हमीरपुर जनपद में आये तथा राठ, महोबा गये थे। रात्रि को कुलपहाड़ कस्बे में विश्राम किया था। स्वागत समिति कस्बा कुलपहाड़ के अध्यक्ष कलेन्दु अरजरिया थे। दूसरे दिन जहाँ गांधी जी का पड़ाव था ( अब वहाँ जनतंत्र इन्टर कालेज है ) एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। समस्त कुलपहाड़ की जनता ने गांधी जी का गर्मजोशी से स्वागत किया तथा 1500/- रु० की थैली

अर्पित की गई। गांधी जी कुलपहाड़ रेलवे स्टेशन से मऊरानीपुर गये थे। कुलपहाड़ कस्बे से रेलवे स्टेशन ( लगभग 5 मील ) दूर तक एक बड़ा जन समूह पैदल गांधी जी के साथ गया। मार्ग में ईसाई मिशन के सदस्यों ने गांधी जी का स्वागत किया तथा 101)- रु0 की थैली भेंट की। इन समस्त कार्यक्रमों की व्यवस्था दीवान शत्रुघ्न सिंह ने की थी। (24)

## (ख) सविनय अवज्ञा आन्दोलन में हमीरपुर जिले की भूमिका :

महात्मा गाँधी जी ने द्वितीय गोलमेज कान्फ्रेंस में से दिसम्बर सन् 1931 ई० को ब्रिटेन से खाली हाथ वापस भारत लौट आये। बम्बई पहुंच कर उन्होंने देखा और सुना, उससे उन्हें लगा कि उनकी अनुपस्थिति में सरकार ने अपना दमन चक्र तेजी से जारी रखा था। कांग्रेस के कार्यकारी महासचिव जवाहर लाल नेहरू, खान अब्दुल गफ्फार खाँ एवं संयुक्त प्रांत कमेटी के अध्यक्ष तथा ऐसे ही अनेक नेताओं को गिरफ्तार कर लिया था।

बंगाल, उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत और संयुक्त प्रांत में अनेक अध्यादेश लागू कर दिये थे। बम्बई आने पर दूसरे दिन 29 दिसम्बर सन् 1931 ई० को गाँधी जी ने वायस राय को एक तार भेज कर ब्रिटिश सरकार द्वारा की गई कार्यवाही के प्रति खेद प्रकट किया गया, इसके जवाब में वायसराय के सचिव ने सरकार द्वारा की जा रही कार्यवाही को उचित ठहराया। अतः गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ कर दिया। 4 जनवरी सन् 1932 ई० में ब्रिटिश सरकार ने जनता पर चारों ओर से आक्रमण शुरु कर दिये। कांग्रेस के सभी छोटे-बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। कांग्रेस के जितने भी छोटे बड़े संगठन थे गैर

कानूनी करार दिये गये। अनेक समाचार पत्रों पर पाबन्दी लगा दी गयी उनकी इमारतें, जायदाद आदि जब्त कर लिया गया। (25)

दमन के उपर्युक्त उपायों के बावजूद सविनय अवज्ञा आंदोलन को दबाया नहीं जा सका। सरकार ने आन्दोलन को कुचलने के लिये कितने नग्न बर्बता का परिचय दिया, इसका पता इस एक बात से ही लग जाता है कि नेताओं और कार्यकर्ताओं के अलावा सारे देश में सवा लाख से अधिक लोगों को जेलों में ठूंस दिया गया था। (26)

8 मई सन् 1933 ई० को गांधी जी ने 21 दिन का अनशन आरम्भ किया, जो कि देशवासियों के ह्रदय परिवर्तन के लिए किया गया था। इस संबंध में गांधी जी ने स्वयं कहा "यह अनशन उसके साथियों के ह्रदय पवित्र बनाने के लिए कर रहा हूं, ताकि हरिजनों के सवाल पर अधिक ध्यान दिया जा सके।"

सरकार ने उसी दिन गांधी जी को रिहा कर दिया और रिहा होते ही उन्होंने आंदोलन स्थगित करने का ऐलान कर दिया। गांधी जी ने वायसराय से फिर मुलाकात करने का प्रयास किया, लेकिन वायसराय ने

स्पष्ट रूप से कह दिया कि जब तक आंदोलन विधिवत समाप्त नहीं कर दिया जाता, तब तक कोई मुलाकात नहीं हो सकती।

यह आंदोलन लगभग ढाई साल 19 मई सन् 1933 ई० तक चला रहा। " कांग्रेस ने जुलाई, सन् 1933 ई० में ' सविनय अवज्ञा आंदोलन ' के स्थान पर ' व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा आंदोलन ' चलाने का निर्णय किया। साथ ही कांग्रेस की सारी संगठन और संग्राम समितियाँ भंग कर दी गईं। " (27)

जनता के घटते उत्साह को देखते हुए गाँधी जी ने अप्रैल सन् 1934 ई० को एक बयान देकर आंदोलन की असफलता पर कहा-- "जनता ने उनके सत्याग्रह के संदेश को ही ठीक से समझा ही नहीं।" इसी बीच कई कांग्रेसी नेता रिहा कर दिये गये। (28) 18-19 मई सन् 1934 ई० को पटना में ए० आई० सी० सी० की बैठक में "सविनय अवज्ञा आंदोलन" एकदम समाप्त करने का निर्णय लिया साथ में चुनाव की तैयारी व्यस्त हो जाने निर्णय लिया गया। (29)

"सविनय अवज्ञा आंदोलन" समाप्त तो कर दिया गया, लेकिन

इसने यह दिखा दिया कि भारत की स्वतंत्रता के लिये सब भारतीय जनता में कोई मतभेद बाकी नहीं रही। इस आंदोलन ने भारत वासियों की इस आवाज को बुलन्द कर दिखाया कि अंग्रेजों को भारत से अब चले जाना चाहिये। मई सन् 1933 ई० सर्वप्रथम बालेन्दु अरजारिया को गिरफ्तार किया गया। उनके स्थान पर रामदुलारे गौतहरी को आन्दोलन का नेता घोषित किया गया। आठ दिन पश्चात रामदुलारे सहित कांग्रेस के मुख्य लोगों को जेल भेज दिया गया। उनके स्थान पर आन्दोलन का लीडर रानी राजेन्द्र कुमारी (ममरौठ) को बनाया गया। समस्त कुलपहाड़ कस्बे में धारा 144 लागू कर दी गयी। अनेक लोगों को गिरफ्तार किया गया। इस आन्दोलन में हमीरपुर, चरखारी, सरीला, जिगनी आदि जनपद के अनेक ग्राम एवं कस्बों ने भाग लिया। बाद में जिला मजिस्ट्रेट पी० वी० भटनकर ने स्वराज्य पार्टी के विधायक कुंवर हरप्रसाद सिंह के माध्यम से पुलिस बहिष्कार आंदोलन समाप्त हुआ परन्तु 'सविनय अवज्ञा आंदोलन जारी रहा' । (31)

'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' का नेतृत्व भूमिगत नेताओं ने अपने हाथों में लिया, इन नेताओं में दीवान शत्रुघ्न सिंह एवं बालेन्दु अरजारिया

प्रमुख थे। सरकार ने बालेन्दु अरजरिया को गिरफ्तार करने वाले को 500/- रु० इनाम की घोषणा की, बाद में उनकी सम्पत्ति कुर्क कर ली गई तथा बहन और पत्नी को गिरफ्तार कर लिया गया। इन सब के बावजूद नेताओं ने महोबा में एक जन सभा करने का निर्णय लिया तथा इसका नोटिस जिलाधीश मि० गार्डन को दे दिया। इस नोटिस का फौरन असर हुआ और महोबा नगर के चारों ओर पुलिस तैनात कर दी गई। बिना परिचय पत्र के कोई महोबा नगर में नही कर सकता था। परन्तु आन्दोलनकारी गुप्त रूप से महोबा नगर में पहुंचना आरम्भ कर दिया। प्रोग्राम के अनुसार 2 जुलाई को जहां प्रथम बम विस्फोट होगा वहां पर झण्डा अभिवादन होगा तथा दूसरे बम विस्फोट पर सभा आरम्भ होगी।(33)

2 जुलाई को प्रातः 6 बजे बम का विस्फोट बांध के पास हुआ तुरंत स्वयं सेवकों ने बांध पर चढ़ कर झण्डा फहरा दिया तथा गाना आरम्भ कर दिया " झण्डा ऊंचा रहे हमारा " इस कार्य पर 70 कार्यकर्ता बन्दी बना लिये गये। इधर पुलिस इन कार्यकर्ताओं को बन्दी बनाने मे लगी रहे उधर उचित अवसर देख कर बाकी कार्यकर्ताओं ने ज्वाइंट मजिस्ट्रेट के बंगले के लान में सभा की कार्यवाही आरम्भ कर दी। इस पर

पुलिस ने लाठी चार्ज और मारपीट आरम्भ कर दी एवं सैकड़ों व्यक्ति बन्दी बनाये गये। परन्तु दीवान शत्रुघ्न सिंह तथा बालेन्दु अरजरिया पुलिस को चकमा देकर निकल गये। बाद में इन दोनों नेताओं को झाँसी नगर में बासुदेव मोहल्ले के एक घर में पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। (34)

## (ग) भारत छोड़ो आन्दोलन में भागीदारी ।

11 अप्रैल सन् 1942 ई० को ब्रिटिश सरकार ने अचानक "क्रिप्स प्रस्ताव" वापस ले लिया और क्रिप्स एकाएक भारत छोड़ कर चला गया। क्रिप्स मिशन की असफलता के बाद राष्ट्रीय सरकार बनाने की योजना मौलाना अबुल कलाम आजाद ने पेश की। वे उस समय कांग्रेस के अध्यक्ष भी थे। वे ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को जापान की मदद लेकर हटाने के खिलाफ थे उनका विश्वास था कि " नये जापानी साम्राज्यवाद को भारत से हटाना कहीं मुश्किल होगा। अगर जापान ने भारत की जमीन पर पैर रखा तो हर तरीके से उसका विरोध करना हमारा कर्तव्य होगा। (35)

जुलाई सन् 1942 ई० में कांग्रेस का एक विशेष अधिवेशन वर्धा में हुआ। यह 5 जुलाई से 16 जुलाई तक चला था। इस अधिवेशन के समय गांधी जी ने जोर देकर कहा – " अब समय आ गया है, जब कांग्रेस को देश की स्वतंत्रता और गुलामी की पुरानी बेड़ियों को तोड़ डालने के लिये अपनी आह बुलंद करनी होगी कि " अंग्रेजों भारत छोड़ो "(36)

14 जुलाई सन 1942 ई० को कांग्रेस की कार्य समिति ने वर्धा

में इस अधिवेशन में एक प्रस्ताव पास किया, जिसमें कहा गया था – " क्योंकि अंग्रेज भारत पर अपनी पकड़ किसी तरह भी ढीली नहीं करना चाहते हैं और इन्होंने कांग्रेस की मामूली राष्ट्रीय मांगें भी कबूल नहीं की हैं। कार्यकारिणी इससे बहुत चिंतित है, अगर इसे रोका नहीं गया तो इसका नतीजा जापानी आक्रमण को स्वीकार करने के अलावा और कुछ नहीं होगा। " प्रस्ताव में आगे कहा गया – " भारत की आजादी न केवल हमारे लिये, बल्कि विश्व सुरक्षा तथा नाजीवाद, साम्यवाद, तानाशाही तथा अन्य प्रकार के साम्राज्यवाद का तथा एक देश द्वारा दूसरे देश पर आक्रमण का अंत करने के लिये जरूरी है। कांग्रेस को विश्वास था कि ब्रिटिश शासक जल्दी ही वास्तविक शक्ति भारतीयों के हाथों में सौंप देंगे या सरकार ऐसा कोई कदम नहीं उठायेगी, जिससे देश पर ब्रिटिश शासन की गिरफ्त और मजबूत हो, मगर सब आशाएँ और विश्वास सपने की तरह टूट कर रह जायेगा।

इस प्रस्ताव को सरकार और जनता दोनों ने " भारत छोड़ो " का नाम दिया इसमें मांग की गई थी कि ब्रिटिश हुकूमत भारत को भारतीयों के हाथ में छोड़ कर चली जाये। (37)

14 जुलाई का प्रस्ताव पास कर कांग्रेस के नेताओं ने मीरा बेन (मिस स्लेड) को वायसराय से मिलने और प्रस्ताव का उद्देश्य समझाने के लिये दिल्ली भेजा, लेकिन वायस राय ने मिलने से इन्कार कर दिया साथ में यह भी कहा कि गांधी जी तथा दूसरे कांग्रेसी विद्रोह की बातें कर रहे हैं युद्ध के दौरान किसी हिंसक या अहिंसक बगावत की बातों को बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। (38)

इस संदर्भ में कांग्रेस महासमिति का बम्बई में 7 अगस्त सन् 1942 ई० को अधिवेशन हुआ, जिसमें आंदोलन की रूपरेखा का प्रस्ताव पेश किया गया, जो 8 अगस्त को सर्व सम्मति से पास कर दिया गया।(39)

8 अगस्त सन् 1942 को यह प्रस्ताव पारित हुआ एवं 9 अगस्त की सुबह दिन का उजाला फैलने से पहले ही पुलिस हरकत में आगई। गांधी जी, पं० नेहरू, मौलाना आजाद, सरदार पटेल, डा० राजेन्द्र प्रसाद, सरोजनी नायडू, आसफ अली, कृपलानी तथा अनेक कांग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। (40)

राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी से समस्त देश में जन आक्रोश भड़क उठा। जनता ने अंग्रेजों की इस चुनौती को चुपचाप रह कर बर्दाश्त नहीं किया। उसने रेलवे स्टेशनों पर हमले किये, रेल की पटरियां उखाड़ीं, थानों पर हमले कर आग लगा दी गई, टेलीफोन और बिजली के तार काट दिये गये तथा सरकारी सम्पत्ति नष्ट करने की कोशिश की गई। इधर सरकार भी दमन पर उतर आयी, उसने आंदोलन कुचलने के लिये और गैस के गोले फेंके, गोलियां चलायीं गईं जिससे जनता की भावनाऐं और भड़क उठीं, जनता, फौज तथा पुलिस का सड़कों पर खुला संघर्ष हुआ। (41)

आंदोलन को कुचलने के लिये सरकार ने पूरी ताकत के साथ दमन चक्र चलाया। सरकारी रिपोर्ट में कहा गया कि इस दौरान 538 गोलियां चलाईं गईं, हजारों आदमी इस गोलाबारी के शिकार हुए या घायल हुऐ, हजारों को जेल में ठूसा दिया गया। समस्त देश के गाँव, कस्बों एवं नगरों में सरकारी दमन चक्र चला। कुछ गाँव में तो कांग्रेस कार्यकर्ताओं के घर तक जला दिये गये एवं सरेआम कोड़े ला मारे गये। स्कूल, कालिजों के विद्यार्थियों तथा युवकों को बुरी तरह मारा पीटा गया। इसके साथ ही "हाउस आफ कामन" में प्रधान मंत्री चर्चिल ने घोषणा की " भारत छोड़ो

आंदोलन" का दमन करने के लिये सरकार को अपनी पूरी शक्ति से काम लेना पड़ा है। (42)

सन् 1857 ई० की तरह ही सन् 1942 ई० में एक बार फिर अंग्रेज सरकार ने राष्ट्रीय आंदोलन को भारतीयों की ही सहायता से कुचल दिया, क्योंकि इस बार भी भारतीय सैनिक, पुलिस और अधिकारियों को ही काम के लिये लगाया गया था। (43)

इस प्रकार भयंकर दमन और आतंक का शासन फैलाकर सरकार ने समस्त आंदोलन तीन चार महीने में दबा दिया। कांग्रेस नेताओं की गिरफ्तारी से पैदा हुयी रिक्तता को जय प्रकाश नारायण, अरुणा आसिफ अली, राम मनोहर लोहिया जैसे समाजवादी नेताओं ने नेतृत्व प्रदान कर पूरा किया।

सन् 1942 ई० के "भारत छोड़ो" आंदोलन को असफल कहना न्याय संगत नहीं होगा। इसमें कोई शक नहीं कि आंदोलन कुचल दिया गया, परन्तु सन् 1947 ई० में जो स्वाधीनता प्राप्त हुयी, उसमें इस आन्दोलन का ही योगदान था। सन् 1942 ई० का "भारत छोड़ो

आन्दोलन" सन् 1857 ई० के स्वतंत्रता संग्राम के बाद भारत में अंग्रेज सरकार की समाप्ति के लिये सबसे बड़ा प्रयास था। अगस्त सन् 1942 ई० को राष्ट्रीय नेताओं एवं गांधी जी की गिरफ्तारी से समस्त देश में जन आक्रोश भड़क उठा। समस्त देश के साथही हमीरपुर जनपद जनता में भी अपने राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी पर रोष की लहर दौड़ गयी तथा आंदोलन एवं प्रदर्शन आरंभ हो गये। राठ, हमीरपुर, पनवाड़ी, कुलपहाड़ एवं महोबा आदि कस्बों में व्यापक प्रदर्शन हुए। पुलिस ने अनेक जगह लाठी चार्ज किया बाद में गिरफ्तारियां प्रारम्भ कर दी। गिरफ्तार होने वाले लोगों में चेतराम नम्बरदार (गहरौली) मानिक चन्द गुरु देव, स्वामी ब्रह्मानंद, मन्नी लाल गुरुदेव, शारदा दीन (अतरार), पं० गंगा सागर वैद्य, बैजनाथ पान्डे, काशी राम लोधी, तेज प्रताप सिंह एवं माधव दास प्रमुख थे।(44)

एक बार फिर बालेन्दु अरजरिया एवं दीवान शत्रुघ्न सिंह पुलिस को चकमा दे कर फिर फरार हो गये। समस्त जनपद में कांग्रेस को गैर कानूनी जमात घोषित कर दिया। (45) परन्तु समस्त कांग्रेसी नेताओं के गिरफ्तार होने पर आंदोलन के नेतृत्व महिलाओं ने सम्हाल लिया। बालेन्दु जी की धर्मपत्नी किशोरी देवी तथा दीवान जी की पत्नी रानी राजेन्द्र

कुमारी मगरौठ ने राठ में महिलाओं के साथ तिरंगा झंडा ले कर जुलूस निकाला परन्तु पुलिस ने तहसील चौराहे के पास उन सब को रोक लिया एवं बंदी बना लिया गया। बंदी बनायी गयी महिलाओं में किशोरी देवी, रानी राजेन्द्र कुमारी, रुक्मणि तिवारी, सरस्वती देवी, सरयू देवी, जमुना देवी, उर्मिला बहन, राजा बेटी, भगवती देवी, शान्ति देवी, मनोरमा देवी (राठ), जानो देवी एवं रानी देवी थीं। (46)

उधर जिला कांग्रेस कमेटी कुलपहाड़ तथा अन्य ग्राम कस्बों जैसे राठ, पनवाड़ी, हमीरपुर, मौदहा आदि के कांग्रेस कार्यालय को पुलिस ने सील कर दिया।(47)

## Foot Note

1. स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास – खान अब्दुल अहमद पेज – 140
2. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष – विपिन चन्द्र व अन्य पेज – 122
3. ---------------- तदैव ----------------
4. ---------------- तदैव ----------------
5. द हिस्ट्री आफ इंण्डियन नेशनल कांग्रेस
   पट्टाभि सीता रमैया 1935 पेज – 274
6. भारतीय इतिहास कोश – पेज– 113
7. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष – विपिन चन्द्र व अन्य पेज – 134
8. ---------------- तदैव ----------------
9. ---------------- तदैव ---------------- पेज 134–135
10. ---------------- तदैव ---------------- पेज – 135
11. ---------------- तदैव ---------------- पेज – 135
12. ---------------- तदैव ---------------- पेज – 135
13. ---------------- तदैव ---------------- पेज – 135
14. उत्तर प्रदेश में गांधी – रामनाथ सुमन पेज – 184
15. सरस्वती पाठशाला इन्टर कालेज पत्रिका अंक– 1991–92
    पेज – 5
16. झाँसी गजेटियर 1965 – जोशी पेज – 72
17. उत्तर प्रदेश में गांधी जी – रामनाथ सुमन पेज – 74
18. ---------------- तदैव ----------------
19. ---------------- तदैव ----------------
20. अनासक्त मनस्वी –– पेज – 180
21. ---------------- तदैव ----------------
22. अनासक्त मनस्वी – पेज – 181–182
23. ---------------- तदैव ----------------
24. ---------------- तदैव ---------------- पेज – 57
25. दि हिस्ट्री आफ इंण्डियन नेशनल कांग्रेस पट्टाभि सीता रमैया
    1935 पेज – 937
26. ---------------- तदैव ----------------
27. ---------------- तदैव ---------------- पेज – 937
28. ---------------- तदैव ---------------- पेज – 937
29. ---------------- तदैव ---------------- पेज – 937

29. स्वाधीनता संघर्ष और संवैधानिक विकास – सुभाष कश्यप
पेज – 133

30. अनासक्त मनस्वी – पेज – 197

31. ---------------- तदैव ----------------

32. दैनिक जागरण झांसी 26 जनवरी 1978 के अंक से।

33. कंचन प्रभा मासिक पत्रिका कानपुर अप्रैल 1975 ई0 के अंक से

34. अनासक्त मनस्वी – पेज –

35. इण्डिया विन्स फ्रीडम – अबुल कलाम आजाद पेज – 73

36. ---------------- तदैव ----------------

37. ---------------- तदैव ----------------पेज –238–239

38. ---------------- तदैव ----------------

39. ---------------- तदैव ----------------पेज – 247

40. दि हिस्ट्री आफ इण्डियन नेशनल कांग्रेस पट्टाभि सीता रमैया
भाग– 2 पेज – 376

41. ---------------- तदैव ----------------

42. स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास – खान मसूद अहमद
पेज – 139 – 40

43. ---------------- तदैव ----------------

44. अनासक्त मनस्वी पेज – 80

45. ---------------- तदैव ---------------- पेज – 67

46. ---------------- तदैव ---------------- पेज – 89–90

47. ---------------- तदैव ---------------- पेज – 204

## अध्याय प्रथम

## निष्कर्ष

हमीरपुर जनपद का स्वतंत्रता संग्राम भारत के हृदय में स्थित बुन्देलखंड संभाग के स्वतंत्रता संग्राम से सम्बद्ध था। औपनिवेशिक शासन के समय देश में चारों ओर कृषकों, जनजातियों, कारीगरों उत्पादन इकाइयों आदि में असन्तोष जो निरन्तर बढ़ता जा रहा था उसकी परिणति 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के रूप में हुई बुन्देलखण्ड में किसानों का उत्पीड़न उद्योग धन्धों का विनाश रक्षा उद्योग का पतन आदि के अतिरिक्त जमींदारों तथा रियासतों में प्राय: हस्तक्षेप की नीति सह यहां का जनमानस अपने स्वतंत्रता प्रिय स्वभाव के अनुरूप विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने हेतु कटिबद्ध था। हम यह जानते हैं कि विद्रोह की चिंगारी का प्रारम्भ इस क्षेत्र में झांसी से हुआ लेकिन हमीरपुर जनपद इससे शीघ्र ही प्रभावित होगया और वहां के निवासियों ने नेतृत्व अपने हाथों में लेकर संघर्ष का सूत्रपात किया। रमेड़ी के ठाकुरों ने तथा आस-पास गांव के निवासियों ने इस विद्रोह में सर्वाधिक योगदान दिया भले ही इसका प्रारम्भ सैनिकों द्वारा किया गया हो लेकिन अतिशीघ्र नेतृत्व जनपद के किसानों जमींदारों तथा सभी वर्गों के लोगों ने अपने हाथ में ले लिया।

## हमीरपुर में हिन्दू मुस्लिम एकता का अदभुत प्रदर्शन

1857 के विद्रोह में नेतृत्व दोनो सम्प्रदाय के हाथों में था यद्यपि जैसे ही विद्रोह का सूत्रपात हुआ उससे कुछ दिन पूर्व वहां के कलैक्टर लायड ने 500 नये सिपाहियों की भर्ती करके एवं तहसील में चपरासियों की नियुक्ति करके व्यवस्था बनाने का प्रयास किया था। (1) किन्तु यह प्रयास यहां के निवासियों का विश्वास जीतने में असफल रहे। कलक्टर लायड ने जनपद के पड़ोस में स्थित चरखारी के राजा से जो सहायता मंगी थी उसके अन्तर्गत 100 बन्दूकची 10 सवार तथा सब्दल सिंह दौआ के नेतृत्व में एक तोप चरखारी से हमीरपुर के अंग्रेज अधिकारियों को प्राप्त हुई थी। (2) इसके अतिरिक्त बाबनी के नवाब ने 50 सैनिक एक तोप सहायता हेतु भेजी थी समीप में स्थित बेरी के जागीरदार ने 80 व्यक्ति सहायता के लिये भेजे थे। (3) किन्तु यह सभी सहायता बेकार साबित हुई क्योंकि राष्ट्रीयता से ओतप्रात देशी रियासतों के यह सैनिक अन्तरात्मा की आवाज पर सोचने को मजबूर हुए और 14 जून 1857 को चरखारी रियासत की ओर से हमीरपुर आये सैनिको के नेता सब्दल सिंह दौआ ने विद्रोह में स्वयं को शामिल होने की घोषणा की। देश भक्ति से ओत-प्रोत यह सैनिक जो अंग्रेजों की सहायता के लिये भेजे थे उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध ही हथियार उठा लिये। उल्लेखनीय यह है कि इस कार्य में मुस्लिम अपने सहयोगी हिन्दू

भाइयों से किसी भी प्रकार पीछे नहीं रहे। बावीना रियासत से भेजी गयी तोप जिसका संचालन रहीमुद्दीन कर रहा था उसने तोप का मुंह लायड के बंगले की ओर मोड़ दिया। (4) सूबेदार अली बख्श ने एक कदम और आगे बढ़कर इस जनपद में दिल्ली के बादशाह के प्रतिनिधि के रूप में स्वयं को यहां का शासक घोषित कर दिया। (5)

इससे पूर्व झाँसी में भी विद्रोह के संचालन में हिन्दू मुसलमानों ने डटकर अद्भुत सहयोग का प्रदर्शन किया था। हमीरपुर में रमेढ़ी के जमींदार के अतिरिक्त सरीला कुलुआं तथा सरीला खुर्द के जमींदारों ने विद्रोहियों का खुलकर साथ दिया। (6) जैसे ही सूबेदार अलीबख्श ने जिले में दिल्ली के बादशाह की हुकूमत की घोषणा की वैसे ही परिस्थिति बदलने लगी। वे लोग जिनका विश्वास डिलडुल रहा था वे सभी राष्ट्रीय हित के इस कार्य में सूबेदार अलीबख्श के साथ आ रहे थे। हमीरपुर की घटनाओं ने राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया।

<u>विद्रोही सरकारों की स्थापना</u> - 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही जनपद में ब्रिटिश सरकार का विरोध प्रारम्भ हो गया था। इस बीच जनपद की एक जागीर जैतपुर को बेदखल कर के अपने अधिकार में ले लिया था एवं वहां

के राजा परीक्षत की विधवा रानी को बारह सौ रुपये मासिक पेंशन के रूप में दिया जाने लगा था। यहाँ पर ब्रिटिश कार्यवाही का खुलकर विरोध हुआ और शीघ्र ही एक बड़ा समूह बगावत पर उतर आया। इसके बाद शीघ्र ही खवई, राठ, परवाड़ी कस्बों पर ब्रिटिश शिकंजा कसने लगा। उधर सन् 1857 ई. के जून माह में हमीरपुर मुख्यालय पर तैनात 56वीं इन्फैन्ट्री ने विद्रोह कर दिया। विद्रोही सैनिकों ने लूटपाट किया तथा व्यापक तोड़ फोड़ का प्रदर्शन किया। वहाँ पर नाना साहब तथा मुगल बादशाह बहादुरशाह का शासन घोषित कर दिया। बागी सिपाहियों ने वहाँ पर ऐलान करवाया "खलक खुदा का मुल्क बादशाह का अमल नाना साहब का"। बाद में सम्मिलित विद्रोहियों ने अंग्रेजों के मित्र रियासत चरखारी के चारो ओर से घेर लिया। इस बीच गुरसराय के मराठा शासक ने जनपद के कस्बा जलालपुर तथा उसके सैनिकों ने महोबा पर (साथ में बांदा के विद्रोही सैनिक भी थे) पेशवा का ध्वज लहरा दिया। इधर जनपद के कस्बे मौदहा पर नवाब ने बांदा पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार जनपद के अधिकांश भाग पर विद्रोही सरकारें स्थापित हो गयी। अक्टूबर सन् 1858 ई. तक देश के अधिकांश भाग में विद्रोह शांत हो गया था परन्तु इस

जनपद में विद्रोह बराबर जारी रहा। सन् 1859 ई. में देशभक्त उमराव खंगार तथा अमृत सिंह ब्रिटिश सरकार को परेशान करके रख दिया तथा जैतपुर के आस पास विद्रोही सरकारें स्थापित कर ली। तदुपरांत सरकार ने एक क्षेत्र में सेनायें भेजकर जैतपुर आसपास स्थायी छावनी बना दिया जिससे क्रांतिकारी भूमिगत हो गये।

विद्रोह की समाप्ति के बाद राष्ट्रीय भावना का स्वरूप -

यद्यपि विद्रोह अपने उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर पाया और इस जनपद के लोगों को कुछ ही महीनों पश्चात पुनः दमन तथा ब्रिटिश शोषण की नीति का शिकार होना पड़ा लेकिन फिर भी यहां के स्वतन्त्र प्रिय निवासी राष्ट्रीय भावना के विचार को अपने मस्तिष्क में निरन्तर संजोए रहे। यह भावना ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं पुरुषों तथा बच्चों के दिमाग में निरन्तर पल्लवित होती रही। दमन के इस युग में राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप कुछ धुंधला दिखाई पड़ रहा था लेकिन कांग्रेस की स्थापना तथा राष्ट्रीय मंच पर गांधी के आगमन से इस क्षेत्र के लोगों ने राष्ट्रीय आन्दोलन के संचालन के लिये नयी स्फूर्ति पैदा हुई।

गांधी जी के प्रेरक नेतृत्व से जनपद में नयी स्फूर्ति : गांधी जी के नेतृत्व में भारतीय कांग्रेस में एक नयी चेतना का प्रसार हुआ। गांधी जी ने अपने दर्शन के दो महत्वपूर्ण अंग - सत्य एवं अहिंसा को अपने आन्दोलनों का प्रमुख प्रयोग बनाया। इन दो शास्त्रों सत्य एवं अहिंसा का प्रयोग गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में सरकार के खिलाफ कर चुके थे। इंग्लैण्ड से कानून की शिक्षा प्राप्त करके वह वकालत करने के लिये दक्षिणी अफ्रीका चले गये। दक्षिणी अफ्रीका की सरकार वहां जातिभेद की नीति का अनुसरण करती थी। वहां की सरकार के विरुद्ध संघर्ष करके गांधी जी ने अपने सत्याग्रह के सिद्धान्त का सफल प्रयोग राष्ट्रीय आन्दोलन में किया। उन्होंने भारतीय जनता से ब्रिटिश सरकार के अत्याचार के विरुद्ध अहिंसात्मक प्रतिरोध करने का आग्रह किया उसके फलस्वरूप लाखों व्यक्ति इस संघर्ष में सम्मिलित हो गये। गांधी जी के नेतृत्व में शक्तिशाली जनान्दोलनों की शुरुआत हुई। इन आन्दोलनों में कानून भंग किये शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किये, न्यायालयों का बायकाट किया, शराब और विदेशी वस्तुऐं बेचने वाली दुकानों पर धरना दिया गया सरकार को कर (टैक्स) नहीं दिया गया और समस्त व्यापार ठप्प कर दिया। यह सभी कार्य अहिंसात्मक थे। इन कार्यों का गहरा

प्रभाव समाज[1] के सभी वर्गों पर पड़ा। इन आन्दोलनों के कारण वीरता तथा लोगों में आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न हुई। जब सरकार ने जनता का दमन किया तो लाखों व्यक्तियों ने सहर्ष इस अत्याचार को सहन किया और निर्भीक होकर अपने को गिरफ्तारियों के लिये प्रस्तुत किया। गांधी जी के आदेश पर उन्होंने लाठी प्रहार तथा गोलियों की बौछार सहर्ष सहीं। गांधी जी एक तपस्वी की भांति सादा जीवन बिताते थे और जनसाधारण से ऐसी भाषा में बात करते थे जिसे प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता था। इन कारणों से जनता उन्हें महात्मा गांधी कहने लगी। उनकी अन्य सफलता घरेलू उद्योग धन्धों का विकास था। उन्होंने अनुभव किया कि ग्रामीण जनता के कष्टों की मुक्ति चरखे द्वारा हो सकती है अतः कांग्रेस के चरखे के प्रचार को अपने कार्यक्रम में प्रमुख स्थान दिया। अन्त में चरखे का महत्व इतना बढ़ गया कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने झण्डे में प्रमुख स्थान दिया। गांधी जी ने हिन्दू मुस्लिम एकता के लिये भी बहुत प्रयास किये उनका विचार था कि साम्प्रदायिकता अमानुषिक और राष्ट्रीयता में बाधक है। उनके नेतृत्व में भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन पूर्णतया असाम्प्रदायिक रहा और भारत की जनता ने स्वतन्त्रता संघर्ष में बहुत प्रगति की। राष्ट्रीय आन्दोलन में जन साधारण के भाग लेने का एक प्रमुख कारण गांधी जी का नेतृत्व था।

हमीरपुर जनपद के लोग इस प्रेरणा से प्रेरित होकर अंग्रेजी शासन काल में राष्ट्रीय आन्दोलन में काफी सक्रिय होकर भाग लेने लगे।

<u>अहिंसात्मक आन्दोलन का प्रारम्भ:</u> बुन्देलखण्ड में अहिंसात्मक आन्दोलन का प्रारम्भ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने किया इस आन्दोलन के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में दो प्रमुख क्षेत्र थे प्रथम झांसी एवं द्वितीय जिला हमीरपुर। झांसी नगर में बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक से कुछ राष्ट्रवादी विचारधारा के लोगो का दल बनना प्रारम्भ हो गया था। इन राष्ट्रवादी बाद में गांधी वादी विचारधारा के लोगो के दल में सर्वप्रथम नाम हरनारायण गौरहर का आता है। राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत व मास्टर हरनारायण गौरहर उन दिनों स्थानीय मैकडाल हाईस्कूल (वर्तमान विपिन बिहारी इण्टर कालेज) से अलग होकर अपने परम मित्र मास्टर रुद्र प्रताप के साथ मिलकर एक राष्ट्रीय विद्यालय बनाने का प्रयास कर रहे थे। (7) इस बीच 1916 ई. में झांसी में संयुक्त प्रान्त राजनैतिक कान्फ्रेंस का आयोजन हुआ जिसके अध्यक्षी सी. वाई. चिन्तामणि बनाये गये। किन्तु वास्तविक रुप से इस कान्फ्रेन्स के प्रमुख आयोजक मास्टर हरनारायण गौरहर थे। यह कान्फ्रेन्स उस मैदान में हुई जहां वर्तमान में सरस्वती पाठशाला इण्टरमीडियेट कालेज बना है। (8) इस कान्फ्रेन्स में स्वराज्य प्राप्ति के लिये अहिंसात्मक

आंदोलन चलाने के लिए आगे के कार्यक्रमों पर विचार किया गया। साथ ही इसी भूखण्ड पर राष्ट्रीय विद्यालय बनाने का संकल्प लिया गया। प्रारम्भ में 1917 में मास्टर गौरहर साहब ने कच्चे भवन में अपने सहयोगी मास्टर रुद्रनारायण के साथ विद्यालय प्रारम्भ किया बाद में यह विद्यालय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम कार्यालय बना। (9)

1920-21 में गांधी जी द्वारा चलाया गया असहयोग आन्दोलन के तहत विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के समय मास्टर गौरहर साहब के भतीजे स्वरुप नाथ गौरहर के नेतृत्व में विदेशी वस्तुओं एवं वस्त्रों की होली इसी विद्यालय के प्रांगण में जलायी गयी थी। (10) मास्टर गौरहर एवं सरस्वती पाठशाला राष्ट्रीय आन्दोलन के महत्वपूर्ण कीर्ति स्तम्भ रहे। झांसी जिले के अन्य कस्बों एवं तहसीलों में भी गांधी जी द्वारा चलाये गये अहिंसात्मक आन्दोलन एवं स्वराज्य के लिये ब्रिटिश सरकार के विरोध में बढ़ चढ़कर कई नगरों के लोगों ने भाग लिया। जनपद हमीरपुर बांदा राठ फुलपहाड़ आदि में यह आन्दोलन जनता द्वारा चलाये गये।

<u>हमीरपुर जनपद में अहिंसात्मक आन्दोलन:</u> जनपद के लोगों ने कांग्रेस द्वारा चलाये गये समस्त अहिंसात्मक आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन,

साइमन कमीशन बैक टू गो आन्दोलन, नमक आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन सफलता पूर्वक चलाये।

जिला हमीरपुर में स्वदेशी आन्दोलन के तहत कुलपहाड़ महोबा राठ आदि में विदेशी कपड़ों की होली जलायी गयी थी तथा खादी आश्रम खादी उत्पादन केन्द्र की स्थापना की गयी। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बालेन्दु जी को जिले का उत्तरदायित्व गणेश शंकर विद्यार्थी जी जो युक्त प्रान्त के अधिनायक थे सौंपा। (11) नमक कानून भंग करने के उद्देश्य से गांधी जी ने 12 मार्च 1930 को अपनी ऐतिहासिक डाण्डी यात्रा प्रारम्भ की। इसके पश्चात ही कुलपहाड़ राठ महोबा में कानून भंग किया गया। किन्तु कोई गिरफ्तारी नहीं हुई नमक कानून तोड़ने के बाद भी बालेन्दु जी ने जब्त संहिता को कुलपहाड़ पुलिस स्टेशन के सामने बेचा तब भी गिरफ्तारी नहीं हुई।

<u>समानान्तर सरकार की स्थापना:</u> बालेन्दु जी ने हमीरपुर में ब्रिटिश सरकार द्वारा आन्दोलन का सामना करने में उदासीनता तथा शिथिलता बरतते तथा जनता की जागृति देखकर समानान्तर सरकार बनाने का निश्चय किया। हर मोहल्ले तथा आस पास ग्राम में संगठन किया तथा कुलपहाड़ में

एक शिविर कायम किया गया जिसमें कई शाखायें बनायी गयी। जिनमें जनता की सुरक्षा, आपसी विवादों का निपटारा, लगान बन्दी, शराब बंदी, खादी प्रचार और सत्याग्रहियों की भर्ती का काम होता था। (12) 4 मई 1930 को गांधी जी गिरफ्तार कर लिये गये उसके विरोध में कुलपहाड़ में पूर्ण हड़ताल की गयी तथा सार्वजनिक सभा में प्रत्यक्ष नागरिक तथा पुलिस जन से सरकार का असहयोग करने का प्रस्ताव रखा गया और यह धमकी दी गयी कि ऐसा न करने पर पुलिस वालों का भी सरकारी बहिष्कार किया जायेगा। (13)

<u>पुलिस का सामाजिक बहिष्कार:</u> इस निर्णय पर ग्राम के मुखिया नम्बरदारों ने अपने अपने इस्तीफे दे दिये। कई अध्यापकों ने स्कूल त्याग कर अपने को राष्ट्रीय आंदोलन में समर्पित कर दिया। कुलपहाड़ के सभी जातियों के मुखियों ने यह निर्णय लिया कि हमारे जाति के लोग पुलिस वालों का बहिष्कार करेंगे। दूसरे दिन से दुकानदारों ने पुलिस के हाथों सामान बेचना बंद कर दिया। ब्रिटिश अधिकारियों के साम दाम दण्ड-भेद सभी साधन व्यर्थ गये। 14 मई 1930 को सबसे पहले बालेन्दु जी गिरफ्तार किये गये। उसके पश्चात श्री रामदुलारे गौरहरी अधिनायक घोषित किये गये। 9 दिन बाद उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया। तीसरी

अधिनायिका रानी राजेन्द्र कुमारी समथौर बनायी गयी। गिरफ्तारियाँ जारी रहीं। अन्य तहसीलों से भी लोग आ आकर गिरफ्तार होते रहे। किन्तु लोगों का आना रुका नहीं।

वाणी बहिष्कार : यह आन्दोलन कुलपहाड़ के आन्दोलन की विशेषता थी। जब पुलिस वालों ने जनता दुकानदारों में मध्य बातचीत बन्द कर दी तब जनता ने इस आन्दोलन को अपनाया। दुकानदार से कोई सामान आदि पुलिस वाले माँगते तो वह मौन रहता। यदि बन्दी स्वयं सेवकों से कुछ पूछा जाता तो वह मौन रहता। इस प्रकार एक माह तक पुलिस बहिष्कार का यह आन्दोलन चलता रहा। इस आन्दोलन में हमीरपुर झाँसी जिलों के अतिरिक्त चरखारी, सरीला, छतरपुर एवं टीकमगढ़ की देशी रियासतों के कार्यकर्ताओं ने भी भाग लिया। (14)

एक माह पश्चात तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट श्री बी. पी. भटनागर ने स्वराज्य पार्टी के विधायक कुंवर हर प्रसाद सिंह के माध्यम से रानी राजेन्द्र कुमारी से पुलिस बहिष्कार आन्दोलन बन्द करने की अपील की (15) साथ ही यह वचन दिया कि पुलिस जोर जबरदस्ती नहीं करेगी। इस शर्त पर यह आन्दोलन बंद हुआ।

सन् 1932 में गांधी इरविन समझौता भंग हो चुका था गांधी जी गिरफ्तार किये जा चुके थे। कुलपहाड़ में बालेन्दु जी तथा दीवान शत्रुघ्न सिंह ने भूमिगत रहकर आन्दोलन प्रारम्भ रखा। रिछलाहा में रहकर लगान बंदी का कार्यक्रम जारी रखा। (16) दिन में जनता को उत्साहित करके रात में जंगलों में छिप जाते। सरकार ने कुलपहाड़ स्थित बालेन्दु जी की ज्यादाद जब्ती के आदेश दे दिये जिसके कारण श्रीमती किशोरी देवी आजोरिया आन्दोलन में शामिल होकर गिरफ्तार हुईं। पुलिस दमन चक्र के कारण महोबा में 2 जुलाई को एक जिला कान्फ्रेन्स का आयोजन किया गया। जिसमें प्रातः 6 बजे बम के धमाके के साथ ही स्वयंसेवकों ने खंभे पर चढ़ कर झण्डा ऊंचा रहे हमारा गान प्रारम्भ किया और झण्डा फहराया। लगभग 79 कार्यकर्ता गिरफ्तार किये गये। दूसरी ओर लगभग 100 प्रतिनिधियों ने उचित अवसर पाकर ज्वाइंट मजिस्ट्रेट के बंगले में जाकर बरामदे से कुर्सी मेज निकालकर मैदान में सम्मेलन प्रारम्भ कर दिया। (17) परन्तु पुलिस बालेन्दु जी तथा दीवान शत्रुघ्न सिंह को न पकड़ सकी। चार माह पश्चात प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का काम करते हुए झांसी में यह लोग पकड़े गये।

राष्ट्रीय सप्ताह की परम्परा: राष्ट्रीय सप्ताह ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रथम विश्वयुद्ध में सहायता के बदले रोलैट-एक्ट जलियां वाला बाग कांड के विरोध में मनाना प्रारम्भ किया गया। राष्ट्रीय सप्ताह 7 अप्रैल से 13 अप्रैल सन् 1929 से ही मनाया जाने लगा। इसमें शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती थी। प्रत्येक दिवस खादी दिवस, हरिजन दिवस, हिन्दू मुस्लिम एकता दिवस, मादक द्रव्य निषेध, किसान दिवस के रूप में मनाया जाता था।

1932 में बुन्देलखण्ड सम्भाग के दीवान शत्रुघ्न सिंह तथा बालेन्दु जी भूमिगत रहकर आन्दोलन का संचालन कर रहे थे। प्रायः सभी पुरुष कार्यकर्ता गिरफ्तार हो चुके थे। कांग्रेस कार्यालय कुलपहाड़ को पुलिस ने जब्त कर लिया था उस पर ताला डाल दिया था परन्तु वीर महिलाओं-- सियारी देवी सरजारिया, रानी देवी द्विवेदी ने झण्डा फहराकर महात्मा गांधी का सन्देश सुनाकर राष्ट्रीय सप्ताह मनाया उनके साथ बहुत से स्वयं सेवक जिसमें मनोरमा देवी उनकी बहिन कान्ती देवी भी गिरफ्तार हुई। सबको एक एक वर्ष का कारागार तथा अर्थदण्ड दिया गया। (18)

**क्रान्तिकारी दल और प. परमानन्द जी का प्रेरक व्यक्तित्व:**

सन् 1857 ई. में तो भारतीय जनता के द्वारा अंग्रेजी शासन के विरुद्ध एक क्रान्ति की गयी थी। इसके बाद सन 1872 ई. में नामधारी सिक्खों या कूका का स्वतन्त्रता आन्दोलन हुआ। पूना में प्लेग कमिश्नर रैण्ड और लेफ्टिनेन्ट आयर्स्ट को जो इस समय तक बहुत बदनाम हो चुके था 22 जून 1897 ई. में दामोदर चापेकर द्वारा गोली मार दी गयी थी। ये घटनायें क्रान्तिकारी दल से सम्बन्धित घटनायें थी। क्रान्तिकारी आन्दोलन का सबसे प्रबल रूप बंगाल विभाजन के समय बंगाल में देखा जा सकता है। महाराष्ट्र पंजाब और मद्रास में भी क्रान्तिकारी कार्य किये गये। भारतीय स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिये विदेशों में भी क्रान्तिकारी कार्य हुए। इस काल के प्रमुख क्रान्तिकारियों में बरीन्द्र घोष, भूपेन्द्र दत्त, श्याम जी कृष्ण वर्मा सावरकर बन्धु विनायक दामोदर सावरकर तथा गणेश सावरकर लाला हरदयाल सैयद काम और मदन लाल धींगड़ा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

झांसी क्रान्तिकारियों का प्रमुख केन्द्र था। झांसी के पास जिगना नामक स्थान पर इकट्ठे लगभग 200 लोगों को तितर बितर करने के लिये सशस्त्र पुलिस नियुक्त कर दी गयी और यह निर्देश दिया गया कि आतंकवादी ब्रिटिश इण्डिया के क्षेत्रों में प्रवेश न कर सके। (19) उसी

समय झाँसी में एक छापा हुआ पत्र भी प्राप्त हुआ जिससे क्रान्तिकारी गतिविधियों के संकेत मिलते हैं। (20)

हमीरपुर जनपद के लिये यह अत्यन्त गौरव की बात थी विश्वप्रसिद्ध गदर पार्टी का प्रतिनिधित्व पं. परमानन्द जी ने किया। परन्तु कार्यक्षेत्र उनका यहाँ नहीं रहा। 20वीं शताब्दी में जो क्रान्तिकारी आन्दोलन चला जिसकी संस्था का नाम सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी था। जिसका प्रधान कार्यालय जनपद का पड़ोसी जिला झाँसी में था। इस दल की एक शाखा हमीरपुर में भी थी। इस दल का मुख्य केन्द्र कुलपहाड़ था। कुल पहाड़ उन दिनों क्रान्तिकारियों का आश्रय स्थल था। सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी जोगेन्द्र शुक्ल काफी समय यहाँ पर भूमिगत रहे। दीवान शत्रुघ्न सिंह का क्रान्तिकारियों से काफी अच्छे सम्बन्ध थे। (21)

सन् 1929 ई. में चन्द्रशेखर आजाद भी कुलपहाड़ में आये थे। कुल पहाड़ आकर वह काफी समय खादी आश्रम में गुप्त रूप से रहे जहाँ पर बिहार के क्रान्तिकारी शुक्ल जो पहले से ही रह रहे थे। (22)

सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी एवं गदर पार्टी के प्रमुख कार्यकर्ता पं. परमानन्द जी का जन्म हमीरपुर जनपद के राठ तहसील में मझगवां गांव के कायस्थ परिवार में हुआ था। उच्च शिक्षा के लिये वह बनारस गये जहां उनका परिचय सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी स्थानीय सचीन्द्र सान्याल से हुआ। फिर वह हमेशा के लिये क्रान्तिकारी दल में आ गये थे। क्रान्तिकारी दल में रहते हुए भी उनका परिचय गदर पार्टी के संस्थापक अनेक कार्यकर्ताओं से हुआ। जिनमें लाला हरदयाल, करतार सिंह, मास्टर अमीर चन्द, मौलवी बरकतुल्ला से हुआ। उनके द्वारा उनको विदेशों में भारतीयों की दुर्दशा के बारे में मालूमात हुई। (23) बाद में पं. परमानन्द ने गदर पार्टी की सदस्यता ले ली। 21 फरवरी 1915ई. में परमानन्द जी ने दल के एक प्रमुख सदस्य करतार सिंह के साथ लाहौर छावनी के बारूद डिपो को बम से उड़ाने का प्रयास किया। करतार सिंह बाद में पकड़े गये और उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया गया। परमानन्द जी पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ जहाज पर मजदूर बन कर अमेरिका के आरगन प्रान्त पहुंचे। (24)

पं. परमानन्द जी जापान चले गये वहां पर उस समय गदर पार्टी के कुछ सदस्य कोमा मोटामारु जहाज से भारत लौट रहे थे। वह जापान

में रुका। जहाज में रसद कम हो जाने से इस जहाज को कुछ लोग तो तोशामारु जहाज पर सवार हो गये। जहाज को पेनांग पहुंचने पर रोक लिया गया। वहाँ पर क्रान्तिकारियों ने जहाज रोकने का विरोध किया तथा नारे लगाये जिसका गवर्नर ने बन्दरगाह अधिकारी के नाम जहाज की रवानगी का हुक्म जारी किया परन्तु जहाज भारत तक ही पहुंच पाया कलकत्ता से पहले ही जहाज हिरासत में ले लिया गया। 120 क्रान्तिकारी बन्दी बनाकर मान्टगोमरी और मुलतान के जेलों में भेज दिया गया बांकी लोगों को अपने गांव में नजर बंद किया गया। लाहौर षडयन्त्र केस के नाम से इसका पहला मुकदमा चला इसका पहला फैसला 13 सितम्बर 1917 ई. को सुनाया गया। पं. परमानन्द जी को फांसी के बदले काले पानी की सजा हुई। (25)

**1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन में जनपद के लोगों की सक्रिय भागीदारी**

4 अप्रैल सन 1942 ई. को ब्रिटिश सरकार ने अचानक क्रिप्स प्रस्ताव वापस ले लिया। इसकी असफलता पर मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने राष्ट्रीय सरकार बनाने की योजना पेश की। वे उस समय कांग्रेस के अध्यक्ष थे। परन्तु जापानी मदद के खिलाफ 14 जुलाई सन 1942 को कांग्रेस

की कार्यसमिति ने वर्धा में भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव पारित किया। इसमें मांग की गयी कि ब्रिटिश हुकूमत भारत को भारतीयों के हाथों में छोड़कर चले जायें। 8 अगस्त सन 1942 को भारत छोड़ो आन्दोलन की रूपरेखा का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हो गया। 9 अगस्त को पुलिस हरकत में आ गयी। गांधी जी, नेहरु जी, मौलाना आजाद, सरदार पटेल, डा. राजेन्द्र प्रसाद, सरोजनी नायडू, आसफ अली, कृपलानी तथा अनेक नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। इससे समस्त देशों में जनाक्रोश भड़क उठा। उन्होंने खुला विद्रोह प्रारम्भ कर दिया। रेलवे स्टेशनों पर हमले, रेल की पटरियां उखाड़ी, थानों पर हमले कर आग लगा दी गयी। टेलीफोन और बिजली के तार काट दिये, सरकारी सम्पत्ति नष्ट करने की कोशिश की गयी। पुलिस ने दमनचक्र शुरु किया फलतः जनता, पुलिस और फौज का सड़कों पर खुला संघर्ष हुआ। सरकारी रिपोर्ट में कहा गया कि इस दौरान 538 गोलियां चलायी गयी हजारो लोग गोलाबारी के शिकार हुए। कुछ गांवो में कांग्रेस कार्यकर्ताओं के घर तक जला दिये। स्कूल कालेजो के विद्यार्थियों तथा युवकों को बुरी तरह मारा पीटा गया। प्रधान मंत्री चर्चिल ने घोषणा की कि भारत छोड़ो आन्दोलन का दमन

करने के लिये सरकार को अपनी पूरी शक्ति लगानी पड़ी। इस बार भी 1857 ई. की तरह अंग्रेज सरकार ने राष्ट्रीय आन्दोलन को भारतीयों की ही सहायता से कुचल दिया। मात्र चार महीनों में सरकार ने समस्त आन्दोलन को दबा दिया। गिरफ्तारियों के बाद जयप्रकाश नारायण, अरुणा आसिफ अली, राम मनोहर लोहिया जैसे समाजवादी नेताओं ने नेतृत्व प्रदान कर दिया।

यद्यपि सन् 1942 ई. का भारत छोड़ो आन्दोलन कुचल दिया गया किन्तु उसे असफल नहीं कहा जा सकता। 1947 में जो स्वाधीनता प्राप्त हुई उसमें इस आन्दोलन का महत्वपूर्ण योगदान था। राठ, महोबा, पनवाड़ी, कुलपहाड़ आदि कस्बों में व्यापक प्रदर्शन हुए पुलिस ने लाठी चार्ज और गिरफ्तारियां प्रारम्भ की। गिरफ्तार लोगो में चेतराम नम्बरदार (गहरौली) मानिकचन्द गुरुदेव, स्वामी ब्रह्मानन्द, मन्नी लाल गुरुदेव, शारदा दीन, पं. गंगा सागर वैद्य, बैजनाथ पाण्डे, कालूराम लोधी, तेज प्रताप एवं माधवदास प्रमुख थे। समस्त जनपदो में कांग्रेस को कानूनी जमात घोषित कर दिया। इधर जिला कांग्रेस कमेटी कुलपहाड़ तथा अन्य ग्राम कस्बों जैसे राठ पनवाड़ी हमीरपुर मौदहा आदि के कांग्रेस कार्यालय को पुलिस ने सील कर दिया।

परन्तु यहाँ की जनता ने अपना धैर्य नहीं छोड़ा एवं स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये लगातार संघर्ष करते रहे और अंत में सन् 1947 ई. में देश को आजाद कराने में सहयोगी रहे।

## सत्याग्रहियों की सूची

सन् 1929-31

1. श्री गरीबदास, राठ
2. श्रीमती मूलचन्द शर्मा, राठ
3. श्री लक्ष्मण राव, महोबा
4. श्री दीवान शत्रुघ्न सिंह, मंगरौठ

सन् 1930-31

5. श्री अद्वैतानंद, पुरैनी, हमीरपुर
6. श्री अम्बिका प्रसाद, मझौला
7. श्री अमीर बख्श, मझौला
8. श्री आजाद उर्फ उल्फत अली, मझौला
9. श्री ओंकार स्वरूप, हमीरपुर
10. श्री उदय भान, पुरैनी
11. श्री कमण्डले सिंह, कुलपहाड़
12. श्री कालू राम, मझौला
13. श्रीमती कान्ती देवी, पनवाड़ी
14. श्री कामता प्रसाद, जरिया
15. श्री कामता प्रसाद, मगरौठ
16. श्री कामता प्रसाद, मझौला
17. श्री कामता प्रसाद, पुरैनी
18. श्री कुंवर कुशध्वज सिंह
19. श्री गंगा, हमीरपुर
20. श्री गजाधर सिंह, खन्ना
21. श्री गनेशी लाल, घनघोरा, हमीरपुर
22. श्री गंगादीन, मझगवां
23. श्री गरडू, पुरैनी
24. श्री गिरधर लाल, पन्हिया
25. श्री गोकुल प्रसाद, सुमेरपुर
26. श्री गोपाल सिंह, सजना
27. श्री घासीराम, कुलपहाड़
28. श्री चिन्ता, राठ
29. श्री चिरन्जीलाल, हमीरपुर
30. श्री चुन्नी लाल, हमीरपुर
31. श्री चुन्नी लाल गुरिया
32. श्री छोटे सिंह, सुमेरपुर
33. श्री जगन्नाथ, हमीरपुर
34. श्री जगरूप सिंह, सुमेरपुर
35. श्री जगसी जरिया

36 . श्री ठाकुर प्रसाद, मोदी चरखारी
37. श्री तुलसी दास, गहरौली
38. श्री दिल्लीपत, ममरौंदा
39. श्री दीनदयाल, श्रीनगर
40. श्री दुर्गा, गहरौली
41. श्री देवदत्त राठ
42. श्री नन्द किशोर महुआ बन्ध
43. श्री पंचम दत्त राठ
44. श्री प्रभुदयाल हमीरपुर
45. श्री भाग सिंह कुलपहाड़
46. श्री बदलू राम सुमेरपुर
47. श्री बद्री मौदहा
48. श्री बदलू राम बिदोखर
49. श्री बद्री प्रसाद हमीरपुर
50. श्री बन्टेलाल पुरैनी
51. श्री बंशीधर, गौहना
52. श्री बंशीधर उर्फ बाशीया, . . . .
53. श्री बरानी लाल बीरा
54. श्री ब्रजगोपाल सक्सेना, महोबा
55. श्री ब्रह्मदत्त महोबा
56. श्री बल्देव, महुआ बन्ध
57. श्री जलालदीन पुरैनी
58. श्री बिन्दा हमीरपुर
59. श्री बुलाकी, सुमेरपुर
60. श्री बेनी प्रसाद इटौलिया
61. श्री बैजनाथ दीरा
62. श्री बैजनाथ तिवारी, हमीरपुर
63. श्री बैजनाथ सक्सेना, झाँडया
64. श्री बैजनाथ, मुस्करा
65. श्री बैजनाथप्र मुस्करा
66. श्री बैजनाथ, हमीरपुर
67. श्री बैजनाथ, महोबा
68. श्री बैजनाथ, दीरा
69. श्री भगवानदास, पनवाड़ी

70. श्री भगवानदास, गौरहरी
71. श्री भगवानदास, मुस्करा
72. श्री भगवानदास, बालेन्दु, बुन्देलखंड
73. श्री भगवानदीन, पौथिया
74. श्री भावं जू, कुरई
75. श्री भुवानीदीन, गौरहरी
76. श्री मकबूल अहमद, राठ
77. श्रीमती मकबूल अहमद, राठ
78. श्री मथुरा, मंभगवां
79. श्री मन्नूलाल द्विवेदी, चरखारी
80. श्रीमती मनोरमा देवी, महोबा
81. श्री मसादीन, राठ
82. श्री मातादीन, सन्दवा
83. श्री मानबहादुर, हमीरपुर
84. श्री महेश्वरीदीन, हमीरपुर
85. श्री मुकुन्द लाल, मकरपौहा
86. श्री मुन्नीलाल गुरुदेव, मुस्करा
87. श्री मुहम्मद अहिया, चरखारी
88. श्री मेनी लाल, हमीरपुर
89. श्रीमती राजेन्द्र कुमारी, हमीरपुर
90. श्री रामकाधीर, हमीरपुर
91. श्री रामदीन, हमीरपुर
92. श्री रामदीन वैद्य, गौरहरी
93. श्री रामदुलारे, पहारी
94. श्री राम नरायण, मुस्करा
95. श्री रामनरायण, शिलापुरवा
96. श्री रामप्रसाद, गौरहरी
97. श्री रामलाल मंभगवां
98. श्री राम सनेही, पुरैनी
99. श्री राम सहाय, जरिया
100. श्री राम सहाय चौबे, सैदपुर
101. श्री राम सेवक खरे, महोबा
102. श्री रामहरि, घनौरी
103. श्री रामाधार कुधौलिया, राठ

104. श्री रामेश्वर, खन्ना
105. श्री रूपराम, हमीरपुर
106. श्री लल्लू, खन्ना
107. श्री लक्ष्मी नरायन, महोबा
108. श्री लक्ष्मी प्रसाद, राठ
109. श्री लालमन, मौदहा
110. श्री शंकर दयाल, महोबा
111. श्री शंकर दयाल, महोबा
112. श्री शिवदयाल पौन्श्या, हमीरपुर
113. श्री शिवराम सिंह, सुमेरपुर
114. श्री श्रीराम, महोबा
115. श्री श्रीवन सहाय मझगवां
116. श्रीमती सरजू देवी, महोबा
117. श्री सुन्दर लाल, गौरहारी
118. श्री सुन्दर लाल, महरौनी
119. श्री सुरेन्द्र दत्त बाजपेयी, एम. एल. ए. थाना सुमेरपुर
120. श्री सुल्तान सिंह, सुमेरपुर

## सन् 1931-32

1. श्री अच्छेलाल, थाना श्रीनगर, हमीरपुर
2. श्री अनन्दी लाल, थाना मझगवां
3. श्री इमाम बख्श, जरिया
4. श्री उदय बहादुर, बनौरा
5. श्री उमादत्त शुक्ल, महोबा
6. श्रीमती उमा देवी, मुस्करा
7. श्रीमती उमा देवी, बिहारी बाजार हमीरपुर
8. श्रीमती उर्मिला देवी, राठ पत्नी लक्ष्मी नारायण
9. श्री कन्धी लाल, इटौरा
10. श्री कन्हैया लाल, जरिया
11. श्री कमलापत, मझगवां
12. श्री कमलापति, गोहन्ड
13. श्री करनपाल, गादा, हमीरपुर
14. श्रीमती कस्तूरी, सरीला
15. श्रीमती कान्ती देवी, गौंहारी
16. श्री कालीदीन, जरिया
17. श्री किशोर, मझगवां
18. श्री किशोरसिंह, मझगवां
19. श्रीमती किशोरी देवी, कुलपहाड़
20. श्रीमती किशोरी देवी, ढनका
21. श्री कुंजबिहारी, मझगवां
22. श्री कृष्ण दत्त, अजनेर
23. श्री खरे लाल, राठ
24. श्रीमती गंगा देवी, जरिया
25. श्रीमती गंगा देवी, हमीरपुर
26. श्री गजाधर, राठ
27. श्री गजाधर, सुमेरपुर
28. श्री गबरू, मझुआ बन्ध
29. श्री गयादीन गोहन्द, हमीरपुर
30. श्री गयादीन शर्मा, इटौरा
31. श्रीमती गिरजा देवी, हमीरपुर

32. श्री गिरधारी प्रसाद, राठ
33. श्रीमती गुलाटी, जरिया
34. श्रीमती गुलाबी देवी, बैला
35. श्री गोपाल सिंह, अजनर
36. श्रीमती गोमती, हमीरपुर
37. श्रीमती गोमती देवी, सम्भगवां
38. श्री गोरे लाल, सम्भगवां
39. श्री गौरी शंकर, सम्भगवां
40. श्री घनश्याम गोरे, अजनर
41. श्री घसीटे, हमीरपुर
42. श्री चन्द्रभानु, सम्भगवां
43. श्री चरनदास, पनवाड़ी
44. श्री चरनदास द्विवेदी, गौरहारी
45. श्री चिन्ता, सुमेरपुर
46. श्री चुन्नी लाल, गौरहारी
47. श्री चेतराम, गहरौली
48. श्री छेदी लाल, गहरौली
49. श्री जगन्नाथ, गहरौली
50. श्रीमती जनक दुलारी, सम्भगवां
51. श्रीमती जमुना, राठ
52. श्री जमुनादास, गोहन्ड
53. श्रीमती जानकी, मुस्करा
54. श्री जियालाल, सम्भगवां
55. श्री जुगल किशोर तिवारी, राठ
56. श्रीमती जैकुमारी, जरिया
57. श्री जैराम, सैदपुर
58. श्री जोधा, गोहन्ड
59. श्री झोला प्रसाद, मौदहा
60. श्री द्वारिका प्रसाद अवस्थी, हमीरपुर
61. श्री दीनदयाल, जरिया
62. श्री दुलीचन्द, बिवनर
63. श्री देवकी नन्दन मुल्तर, महोबा
64. श्री देवजू, सम्भगवां

65. श्री देवीचन्द्र, हमीरपुर
66. श्री देवीदीन, राठ
67. श्री देवी प्रसाद, राठ
68. श्री देवी प्रसाद, हमीरपुर
69. श्री देशराज जरिया
70. श्री देशराज, कुलपहाड़
71. श्री देशराज, गोरिया
72. श्री धनीराम, राठ
73. श्री धीरा सिंह, जरिया
74. श्रीमती धौरी, मझगवां
75. श्री जमुना, महरौली
76. श्री नाथू, इटौरा
77. श्री नाथूराम, मड़ोला
78. श्री नारायण दास, इटौरा
79. श्री परमानंद, जरिया
80. श्री परमलाल, मझगवां
81. श्री परमलाल चन्दौला
82. श्रीमती पुनियादेवी, मौदहा
81. श्री पूरन, पनवाड़ी
82. श्री पूरन देव, मड़ोला ....
83. श्री पूरन सिंह, कुलपहाड़
84. श्री प्रभुदयाल, श्रीनगर
85. श्री प्रान सिंह, नोहई
86. श्री प्रेम नारायण खेरा सिलारजीत
87. श्री बदाली ......
88. श्री बदलू, मुस्करा
89. श्री बद्री प्रसाद, सुमेरपुर
90. श्री बद्री विशाल, गोहन्द
91. श्री वंशीधर, मुस्करा
92. श्री बटकेश्वर दत्त, मुस्करा
93. श्री ब्रह्मानंद, जलालपुर
94. श्री बलैया, जलालपुर
95. श्री बलदेव, हमीरपुर

96. श्री बल्देव प्रसाद, इटौरा
97. श्री बाबू सिंह, मझगवाँ
98. श्री बिन्दावन, राठ
99. श्री बिहारी खन्ना
100. श्री बुद्ध, मुस्करा
101. श्री बुधवन, मझगवाँ
102. श्री बैजनाथ, मझगवाँ
103. श्री बैजनाथ, सुमेरपुर
104. श्री बैजनाथ तिवारी, हमीरपुर
105. श्री बैजनाथ सक्सेना, महोबा कैन्ट
106. श्री बैजनाथ, हमीरपुर
107. श्री बैजनाथ, मझगवाँ
108. श्री बैजनाथ, कहटी
109. श्री बैजनाथ, कुन्दौरा
110. श्रीमती भगवानी उर्फ सरला देवी, राठ
111. श्री भगवानदास इटौरा
112. श्री भगवानदास, कुरारा
113. श्री भगवानदास, जरिया
114. श्री भगवानदीन, वीरा
115. श्रीमती भरतपुरी, कुलपहाड़
116. श्रीमती भारती उर्फ कासिया पनवाड़ी
117. श्रीमती भुवनेश्वरी देवी, महोबा
118. श्री भैरो, मझगवाँ
119. श्री भोजराज, मझगवाँ
120. श्री मंगार मल्लाह
121. श्री मथुरा, मझगवाँ
122. श्री मन्दी लाल, कुलपहाड़
123. श्री मन्नालाल, गोहन्द
124. श्री मन्नीलाल, मुस्करा
125. श्री मंशाराम, पनवाड़ी
125. श्री महादेवा सेठ, सुमेरपुर
126. श्री महीपाल सिंह, मझगवाँ
127. श्री मातादीन, पनवाड़ी

128. श्री मातादीन, राठ
129. श्री माधोदास, मुस्करा
130. श्री माया शंकर विवनर
131. श्रीमती मालती देवी, गौरहारी
132. श्री मुन्नू उर्फ मूलचंद, कुलपहाड़
133. श्री मुन्नू सिंह, विवनर
134. श्री मूलचंद, मझगवां
135. श्री मोतीलाल, कुलपहाड़
136. श्री रघुवर, विवनर
137. श्री रघुवर दयाल, मुस्करा
138. श्रीमती राजा बेटी, मझगवां
139. श्री राजाराम अग्रवाल, मुस्करा
140. श्रीमती राजेन्द्र कुमारी, हमीरपुर
141. श्रीमती राजा बेटी, मझगवां
142. श्रीमती राजो देवी, जराखर
143. श्री राधेलाल, श्रीनगर
144. श्री राधेश्याम मिश्र, विवनर
145. श्रीमती रानी देवी, पनवाड़ी
146. श्रीमती रानी देवी, गौरहारी
147. श्री रामाधार, गोहन्द
148. श्री रामादीन, गहरौली
149. श्री रामाधीर, खगमा
150. श्री रामगोपाल जी, मौदहा
151. श्री रामचरण, हमीरपुर
152. श्री रामदयाल, मझगवां
153. श्री रामदास, कुलपहाड़
154. श्री रामदास शास्त्री, अजनर
155. श्री रामदीन, पनवाड़ी
156. श्री रामदुलारे, गौरहारी
157. श्री रामदेव, राठ
158. श्री रामनाथ, मझगवां
159. श्री रामनाथ, जरिया

160. श्री रामनारायन, 
161. श्री रामप्रसाद, सम्भगवां
162. श्री रामभरोसे, गोहन्द
163. श्री रामरतन, महोबा
164. श्री राम सहाय, हमीरपुर
165. श्री रामसहाय, करसई
166. श्री रामसहाय, जलालपुर
167. श्री रामसहाय उर्फ राम साँची, जलालपुर
168. श्री राम सेवक, जौरिया
169. श्री राम सिंह, कुरारा
170. श्री रामदीन, श्रीनगर
171. श्री रामादीन, सम्भगवां
172. श्री रामाधन, सैदपुर
173. श्रीमती रुक्मनी देवी, हमीरपुर
174. श्री लक्ष्मी प्रसाद, जमाकुरी
175. श्री लच्छी उर्फ गुल्लवा, जौरिया
176. श्री लक्ष्मी चरण, राठ
177. श्री लाडली, महोबा
178. श्री लाल बहादुर गोसाईं मझगवां कस्बा
179. श्री लीला, सम्भगवां
180. श्री लालाधर अमरपुर, हमीरपुर
181. श्री विश्वनाथ, सम्भगवां
182. श्री विश्वनाथ, जलालपुर
183. श्री विश्वनाथ, सम्भगवां
184. श्री विश्वेश्वर दयाल श्रीनगर
185. श्री शम्भू दयाल
186. श्री शम्भू नाथ, मझगवां कस्बा
187. श्री शम्भू नाथ शुक्ल, राठ
188. श्री (दीवान) शत्रुघ्न सिंह, सम्भगवां
189. श्रीमती शान्ती देवी, सम्भगवां
190. श्रीमती शान्ती देवी, गरोठी हमीरपुर
191. श्री शारदादीन, मौदहा
192. श्री शालिग्राम, राठ

193. श्रीमती शिव देवी, सुमेरपुर
194. श्री शीतल प्रसाद, गहरौली
195. श्री श्याम बिहारी, बिवांर
196. श्री श्रीपत सहाय, मझगवां
197. श्रीमती सगरू देवी, मझोला
198. श्रीमती सरला देवी प्रसाद, हमीरपुर
199. श्रीमती सरला देवी, जरिया
200. श्री सर्वानन्द, कुलपहाड़
201. श्री शारदादीन, मौदहा
202. श्रीमती सावित्री, मझगवां
203. श्री सीतादास निगम, हमीरपुर
204. श्री सीताराम, सजनर
205. श्री सीताराम, महुआबान्ध
206. श्री सुखलाल, राठ
207. श्री सुन्दर लाल, पनवाड़ी
208. श्री सुन्दर लाल, बिवांर
209. श्री सुन्दर लाल, सजनर
210. श्री सुदर्शन, मझगवां
211. श्री सुमेरपुर, मझगवां
212. श्री सुरेन्द्र दत्त, वाजपेयी, सुमेरपुर

## सत्याग्रहियों की सूची

सन् 1940-41

1. श्री अच्छेला ढीमर, कुलपहाड़
2. श्री अनन्द प्रसाद, वीरपुर
3. श्री ईश्वर इटौरा
4. श्री गंगादीन, जरिया
5. श्री गंगा प्रसाद, मझगवाँ
6. श्री गनेश प्रसाद, मकरबई
7. श्री गल्लू महतो, मौनहा
8. श्री गरीबदास, इटौलिया
9. श्री गोविंद माधव, पनवाल
10. श्री गौरी शंकर, मुस्करा
11. श्री चतुर्भुज, कुरई हमीरपुर
12. श्री चन्दूलाल, जरिया
13. श्री छन्नू लाल, गोरिया
14. श्री छन्नूलाल, ममना
15. श्री छोटेलाल, कुरई
16. श्री छिन्ना, मदईपुर
17. श्री जगत दीन, जरिया
18. श्री जगन्नाथ, जरिया
19. श्री जगन्नाथ, मझगवाँ
20. श्री जगन्नाथ, मुस्करा
21. श्री जगन्नाथ सिंह, ककरई
22. श्री जमुनादास, जरिया
23. श्री जाहिर सिंह, ककरई
24. श्री तुलसीराम, मुस्करा
25. श्री तेजवा, जरिया
26. श्री तोताराम, खेरा शिलाजीत
27. श्री दयाराम यादव, राठ
28. श्री द्वारिका प्रसाद, मौदहा
29. श्री दीनदयाल, बरौली

30. श्री दीनदयाल, बरौली
31. श्री रघुनाथ इचौरा
32. श्री रघुनाथ सिंह, राठ
33. श्री राजाराम गुप्त
34. श्री रामगोपाल खेरा सिलाजीत
35. श्री दुर्जन सिंह, कुन्दौरा
36. श्री देवी कसोरे, घनौरी
37. श्री देशराज, मुरधी
38. श्री धनीराम, राठ
39. श्री नत्थूराम शर्मा, घनौरी
40. श्री नन्द किशोर गुरुदेव, मुस्करा
41. श्री नाथू, मझोला
42. श्री नाथू, जरिया
43. श्री नाथूराम, इटौलिया
44. श्री नाथूराम, गहरौली
45. श्री नाथूराम, मुस्करा
46. श्री निर्भय सिंह, रवेला
47. श्री पंचम, कुलपहाड़
48. श्री परमानन्द, जलालपुर
49. श्री परमलाल, चन्दौला
50. श्री परमेश्वरी दयाल सपमिल, हमीरपुर
51. श्री परमेश्वरी दयाल, हमीरपुर
52. श्री परमेश्वरी दयाल, जरिया
53. श्री प्यारे लाल, श्रीनगर
54. श्री प्रभुदयाल, पिपरा
55. श्री फकीरे लाल, खन्ना
56. श्री फलचन्द सुमन, मौदहा
57. श्री बम्मा, गौरहारी
58. श्री बघराज, नन्दना, हमीरपुर
59. श्री बंश गोपाल थाना जरिया
60. श्री ब्रजमोहन श्रीवास्तव, खरेला
61. श्री बलवन्त उर्फ बलराम, राठ
62. श्री बलदेव प्रसाद, जमरपुरी

63. श्री बाबूराम थाना महोबा
64. श्री बाल गोविन्द, रूसरई
65. श्री बाल मुकुन्द, मुरहरी
66. श्री बालादीन, श्रीनगर
67. श्री बालाप्रसाद, खन्ना
68. श्री वासुदेव, जरिया
69. श्री बिन्द्रावन, राठ
70. श्री बैजनाथ सक्सेना, महोबा कंठ
71. श्री बैजनाथ, मुस्करा
72. श्री बैजनाथ सेठ, चरखारी
73. श्री बोधीलाल, मकरबई
74. श्री भगवानदास, जरिया
75. श्री भरत जू, कुरैर
76. श्री राम प्रसाद, जरिया
77. श्री भू दत्त शास्त्री, हमीरपुर
78. श्री भूपाल सिंह, श्रीनगर
79. श्री भोज, रूसरई
80. श्री भोलाराम, महरौली
81. श्री मंगा जी, गहरौली
82. श्री मथुरा प्रसाद सर्राफ, गहरौली
83. श्री मंशाराम, मझगवां
84. श्री मौलियां, रूसरई
85. श्री महादेव प्रसाद खंगार, हमीरपुर
86. श्री महादेव, खेरा शिलाजीत
87. श्री महेशदत्त मिश्रा, घनौरी
88. श्री माताादीन, जरिया
89. श्री माताादीन, इस्माइलपुर
90. श्री माधव प्रसाद, विवनर
91. श्री मानप्यारे, मझगवां
92. श्री मानसिंह लोधी, गौरहारी
93. श्री मुन्नी लाल अग्रवाल, राठ
94. श्री मुन्नी लाल गुप्ता, गौरहारी

95. श्री मूलचंद, सम्भगवां
96. श्री मोतीलाल, गौरहारी
97. श्री मोतीलाल, मुरहरी
98. श्री मोहनलाल, श्रीनगर
99. श्री मोहनलाल जिला, हमीरपुर
100. श्री मोहन लाल श्रीनगर
101. श्री रघुनन्दन, मुस्करा
102. श्री रघुनन्दन शर्मा
103. श्री रामगोपाल जी, मौदहा
104. श्री रामचरण खेरा शिलाजीत
105. श्री रामचरण, सम्भगवां
106. श्री रामदास, कुलपहाड़
107. श्री रामनाथ निगम, घनौरी
108. श्रीमती रामप्यारी देवी, राठ
109. श्री राम प्रसाद, पनवाड़ी
110. श्री राम लाल, हमीरपुर
111. श्री रामसेवक, सम्भगवां
112. श्री रामसेवक खरे, महोबा
113. श्री रामाधार खेरा शिलाजीत
114. श्री रामाधार, इटौलिया
115. श्री रामाधार, राठ
116. श्री लक्ष्मन प्रसाद, इस्लामपुर
117. श्री लक्ष्मण सिंह, श्रीनगर
118. श्री लक्ष्मण सिंह, हमीरपुर
119. श्री लक्ष्मी प्रसाद अग्रवाल, राठ
120. श्री लक्ष्मी प्रसाद पाठक, राठ
121. श्री लक्ष्मी प्रसाद, सम्भगवां
122. श्री लक्ष्मी प्रसाद अग्रवाल, सम्भगवां
123. श्री लालचन्द्र लोधी, गौरहारी
124. श्री लाल, खेरा शिलाजीत
125. श्री लौटन सिंह, राठ
126. श्री वंशलाल चौरसिया, गहरौली

127. श्री चिरंजीलाल, पारा
128. श्री विश्वनाथ कन्दवा, हमीरपुर
129. श्री विश्वनाथ, खेरा शिलाजीत
130. श्री विश्वनाथ, जरिया
131. श्री विश्वनाथ, मझगवां
132. श्री विश्वनाथ शर्मा, मझगवां
133. श्री शंकर दयाल, मझोला
134. श्री शम्भू, जरिया
135. श्री शम्भू नाथ शुक्ल, राठ
136. श्री शम्भू, जरिया
137. श्री (दीवान) शत्रुघ्न सिंह, मझगवां
138. श्री शालिग्राम शर्मा, गहरौली
139. श्री शिवप्रसाद, पनवाड़ी
140. श्रीमती शिवरानी देवी, राठ
141. श्री शिव लाल जैतपुर
142. श्री श्याम बिहारी, जरिया
143. श्री (सरदार) श्याम सिंह, मझगवां
144. श्री भर सहाय, मौदहा
145. श्री पत सहाय, मझगवां
146. श्री शोभाराम, हमीरपुर
147. श्री शोभाराम, गुरदेव
148. श्रीमती सरलादेवी, मझगवां, हमीरपुर
149. श्रीमती सरस्वती पुरी राठ
150. श्री सिद्ध गोपाल, राठ
151. श्री सुखदा, घनौरी
152. श्री सुखा सिंह, जमराबटी
153. श्री सुखसेन, जरिया
154. श्री सुखलाल, जरिया
155. श्री सुन्दर नारायन दुबे, हमीरपुर
156. श्री सुन्दर लाल खेरा शिलाजीत
157. श्री सुमेर, मुस्करा
158. श्री सुमेरा, मझगवां

## सत्याग्रहियों की सूची

सन् 1942-47

1. श्री अनन्त प्रसाद दुबे, थाना मुस्करा
2. श्री आनन्दी प्रसाद अग्रवाल, राठ
3. श्री अयोध्या प्रसाद चौबे, राठ
4. श्री अयोध्या प्रसाद, पहाड़िया
5. श्री आलू, प्यारजौं
6. स्व. श्री अशर्फी लाल सक्सेना, चरखारी
7. श्री अंजाम एवं अंजुमन अली, महोबा
8. श्री आनन्द, श्रीनगर
9. श्री ईश्वरी प्रसाद, चरखारी
10. श्री उदय राम, हमीरपुर
11. श्री उदित नारायण शर्मा, हमीरपुर
12. श्री उमाशंकर, हमीरपुर
13. श्री उरैला, पहाड़िया
15. श्री उधव प्रसाद, चरखारी
16. श्री कन्हैया लाल चरखारी
17. श्री कमला, पहाड़िया
18. श्री कमला कान्त, हमीरपुर
19. श्रीमती मालती देवी, मझगवां
20. श्री करहोरा, पहाड़िया
21. श्री कलुआ, हमीरपुर
22. श्री कासिमा, पहाड़िया
23. श्रीमती कान्ति देवी, राठ
24. श्री कमला प्रसाद सक्सेना, चरखारी
25. श्री कमला प्रसाद, मुस्करा
26. श्री कालीचरण अग्रवाल, राठ
27. श्री काशी, श्रीनगर
28. श्री काशी प्रसाद, मौदहा
29. श्री कुन्दा, पहाड़िया
30. श्री केशव नारायण निगम, कोतवाली

31. श्री कृपादयाल, राठ
32. श्री खानू लाल खेरा शिलाजीत
33. श्री खलक सिंह, पहाड़िया
34. श्री गंगानाथ, मुस्करा
35. श्री गंगा प्रसाद नौरन्या, हमीरपुर
36. श्री गोन्दया, पहाड़िया
37. श्री गनपत, श्रीनगर
38. श्री गुन्डा, प्यारजी
39. श्री गया प्रसाद मिश्र, रमेड़ी
40. श्री गया सिंह, इगौड़िया
41. श्री गाधू पोल, इटौलिया
42. श्री गोकुल, खेरा शिलाजीत
43. श्री गोकुल प्रसाद, खिडुलिया
44. श्री गोपाल राम, जरिया
45. श्री घासीराम, पहाड़िया
46. श्री सोरा, प्यारजी
47. श्री चन्ना, पहाड़िया
48. श्री श्रीचरण, गोरिया
49. श्री चुनादद, खन्ना
50. श्री छब्बी लाल, प्यारजी
51. श्री छिद्दी प्यारजी
52. श्री जगतराज रिडुयारिया
53. श्री जगदम्बा प्रसाद, चरखारी
54. श्री जगदेव प्रसाद विद्यार्थी, हमीरपुर
55. श्री जगन्ना, पहाड़िया
56. श्री जगरूपा, पहाड़िया
57. श्री जैना बहादुर, मझगवां
58. श्री जुझारसिंह, श्रीनगर
59. श्री जैदेव, मझगवां
60. श्री जोरावर, प्यारजी
61. श्री टीकाराम, प्यारजी
62. श्री ठाकुरदास, पहाड़िया
67. श्री ठाकुरदास, पनवाड़ी

68. श्री विरिया, पहाड़िया
69. श्री तुलसीदास, प्यारली
79. श्री तेजवा धीवर, श्रीनगर
80. श्री दशरथ, राठ
81. श्री दिल्लीपत पहलवान, चराखारी
82. श्री दीनदयाल, राठ
83. श्री दीनदयाल, सुमेरपुर
84. श्री डुलसा, पहाड़िया
85. श्री दुर्गा, पहाड़िया
86. श्री दुर्जन सिंह, सुमेरपुर
87. श्री दुर्जन, पहाड़िया
88. श्री धर्मवीर निगम, राठ
89. श्री नटैया, पहाड़िया
90. श्री नन्द किशोर बख्शी, राठ
91. श्री नाथू, पहाड़िया
92. श्री नाथूराम कटोलिया, चराखारी
93. श्री नाथूराम, प्यारली
94. श्री नाथूराम भाट, सेवान
95. श्री पस्सा, पहाड़िया
96. श्री परीक्षत मुखिया, पहाड़िया
97. श्री पूरनलाल, श्रीनगर
98. श्री प्यारे, श्रीनगर
99. श्री प्रभूदयाल, प्यारली
100. श्री प्रसैया, पहाड़िया
101. श्री प्रतापसिंह, कुलपहाड़
102. श्री प्रेमनारायण कलौलीजार थाना सुमेरपुर हमीरपुर
103. श्री फूलचंद, हमीरपुर
104. श्री बन्दी रावत, श्रीनगर
105. श्री बनसोला, पहाड़िया
106. श्री बराती लाल, जरिया
107. श्री बलैया धीवर, श्रीनगर
108. श्री बलदेव, कुलपहाड़

109. श्री बल्देव, हमीरपुर
110. श्री बब्बू लाल पटौलिया, चरखारी
111. श्री बालकृष्ण, मझगवां
112. श्री बिन्द्रावन, राठ
113. श्री बिहारीलाल चौधरी लाल, राठ
114. श्री बीरी सिंह, पहाड़िया
115. श्री बेनी प्रसाद, पहाड़िया
116. डा० बेनी प्रसाद अग्रवाल, हमीरपुर
117. श्री बैजनाथ, ब्यारजो
118. श्री भगवानदास, महोबाकंठ
119. श्री भगवानदीन मिश्र, गौरहारी
120. श्री भगीरथ, मगरौठ
121. श्री भजन लाल, जरिया
122. श्रीमती भुवनेश्वरी, महोबा
123. श्री मटैया, पहाड़िया
124. श्री मथुरा प्रसाद, मुस्करा
125. श्री महादेव प्रसाद अवस्थी, महोबा
126. श्री महावीर, राठ
127. श्री मातादीन, पनवाड़ी
128. श्री मातादीन, हमीरपुर
129. श्री मातादीन, जरिया
130. श्री मातादीन, चिमरा
131. श्री मुकुन्द लाल स्वर्णकार, राठ
132. श्री मुन्नीलाल गुरुदेव, मुस्करा
133. श्री मुनेश्वर, हमीरपुर
134. श्रीमती यशोदा देवी, हमीरपुर
135. श्री रघुनन्दन प्रसाद, चरखारी
136. श्री राजाराम, राठ
137. श्री राजाराम मिश्रा, चरखारी
138. श्री रामदयाल, जरारवर
139. श्री रामदयाल, पहाड़िया
140. श्री रामनाथ, प्यारजो
141. श्री राम नारायण, सुमेरपुर
142. श्री राम भरोसे, प्यारजो

143. श्री रामरतन, जरिया
144. श्री रामलाल, प्यारजो
145. श्री राम सहाय, ब्यारजो
146. श्री रामसेवक, राठ
147. श्री राम सैया, पहाड़िया
148. श्री रामस्वरूप शर्मा, राठ
149. श्री रामाधार, श्रीनगर
150. श्री रामाधार, जमापुरी
151. श्री रामानुज सिंह, रमेड़ी
152. श्री लक्ष्मी, जावेरी
153. श्री लक्ष्मी प्रसाद पाठक, राठ
154. श्री लक्ष्मी प्रसाद ब्यारजों
155. श्री लोकनाथ द्विवेदी, चरखारी
156. श्री लोटन, पहाड़िया
157. श्री वासुदेव प्रसाद, चरखारी
158. श्री विक्रम सिंह, अलमपुर
159. श्री विद्याधर, पनवाड़ी
160. श्री विलासी, श्रीनगर
161. श्री विश्वनाथ प्रसाद, चरखारी
162. श्री विश्वेश्वर दयाल पतौरिया, महोबा
163. श्री शम्भू दयाल, ब्यारजों
164. श्री शम्भू नाथ शुक्ल, राठ
165. श्री (दीवान) शत्रुघ्न सिंह, ममगवाँ
166. श्री शिवदयाल लोधी, पाल्हिया
167. श्री शिवदयाल सक्सेना, राठ
168. श्री शिवदर्शन लाल राठ, हमीरपुर
169. श्री शिवनाथ, अतरौली
170. श्री श्याम बिहारी, जरिया
171. श्री श्याम लाल, ब्यारजों
172. श्री (सीदार) श्याम सिंह, ममगवाँ
173. श्री सरन्दा, ब्यारजों
174. श्री सुखई दाऊ, पहाड़िया
175. श्री सुखैया, श्रीनगर
176. श्री सुखलाल, पहाड़िया
177. श्री सुन्दर लाल, गौरहारी
178. श्री सुरेन्द्र दत्त बाजपेयी, एम. एल. ए., सुमेरपुर

159. श्री सुमेरा, खेरा शिलाजीत
160. श्री सुरेन्द्र नारायन सूपसिंह, हमीरपुर
161. सुनेन्द्र दत्त बाजपेयी एम. एल. ए., सुमेरपुर
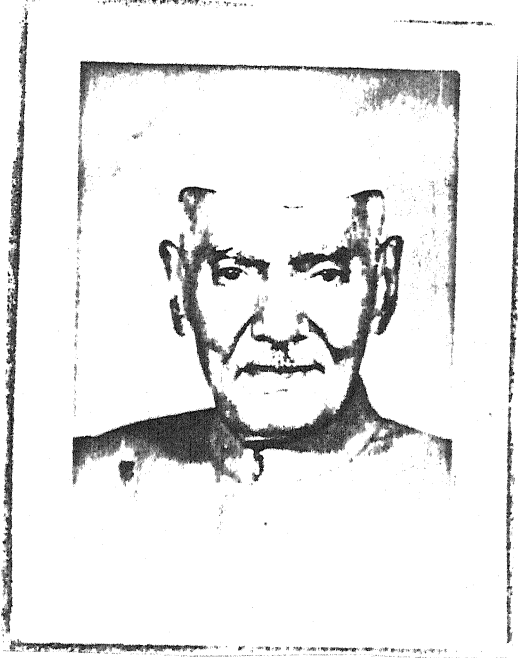
श्री भगवान दास बालेन्दु
(राष्ट्रकवि एवं स्वतंत्रता सेनानी)

श्री नाथूराम तिवारी (महोबा)
(वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी)
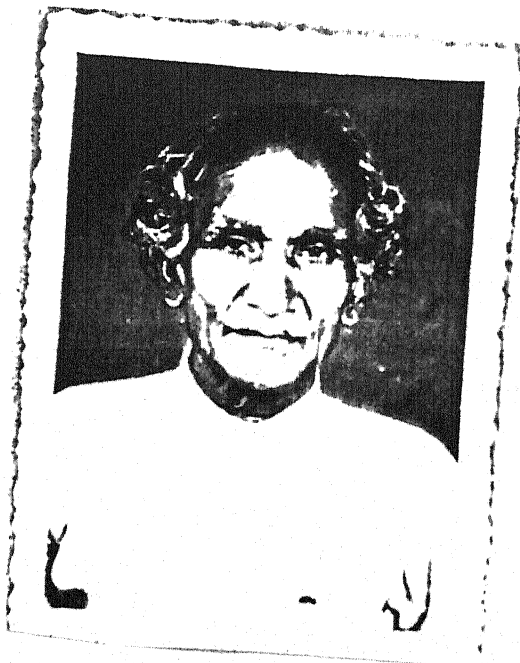
स्व० रघुवीरशरण दीक्षित
(स्वतंत्रता सेनानी)

□ रानी राजेंद्र कुमारी : शत्रुघ्न सिंह की पत्नी

□ बुंदेलखंड केसरी दीवान बहादुर शत्रुघ्न सिंह

अमर शहीद नारायणदासजी खरे

पण्डित मन्नीलालजी गुरुदेव
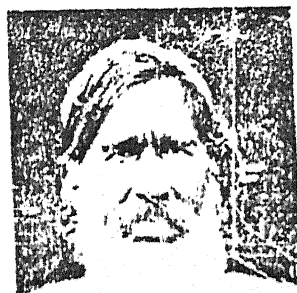
महान् क्रांतिकारी पं० परमानन्द

# बिब्लियोग्राफी

1. प्रथम स्रोत:

नेशनल आरकाईव्स (अभिलेखागार) आफ इंडिया, न्यू देहली

1. फारेन सीक्रेट कंसल्टेशन.
2. फारेन पोलिटिकल कंसल्टेशन.
3. मिलिटरी कंसल्टेशन.
4. फारेन पोलिटिकल प्रोसीडिंग.
5. बुंदेलखंड एजेंसी रिकार्डस.

2. द्वितीय स्रोत:

उत्तर प्रदेश स्टेट आरकाईव्स (अभिलेखागार), लखनऊ:

1. हमीरपुर डिस्ट्रिक्ट प्री-म्युटिनी रिकार्डस - फाईल न० XIII-135.
2. बांदा डिस्ट्रिक्ट प्री-म्युटिनी रिकार्डस - फाईल न० XVIII-36-35.

   बांदा डिस्ट्रिक्ट प्री-म्युटिनी रिकार्डस - फाईल न० XVIII-31.
3. झाँसी डिवीजन प्री-म्युटिनी रिकार्डस - फाईल न० 319 भाग 47-III, भाग 46 फाईल न० 293 भाग 88 XXVIII फाईल न० 7, भाग 84/XIX फाईल न० 175, भाग 22/III, फाईल न० 199, भाग 47/III फाईल न० 391
4. जालौन डिस्ट्रिक्ट प्री-म्युटिनी रिकार्डस- फाईल न० 52

3. तृतीय स्रोत :

बोर्ड आफ रिवन्यु रिकार्डस:

1. प्रोसीडिंग आफ द बोर्ड आफ रिवन्यु एट फोर्ट विलियम.

2. प्रोसीडिंग आफ द सदर बोर्ड आफ रिवन्यु फार द नार्थ--वेस्ट प्रोविंस.

3. फाईल आफ द रिवन्यु आफ रिलीवेंट डिस्ट्रिक्ट्स.

4. चतुर्थ स्रोत:

पब्लिश्ड रिकार्डस:

1. नैरेटिव आफ एवेंटस अटैन्डिंग द आउट ब्रेक आफ डिस्टरबेंसेस एंड द रैस्टोरेशन आफ अथोरिटी इन द डिस्ट्रिक्ट हमीरपुर इन 1857 -58 बाई - जी. एस. फ्रीलिंग.

2. नैरेटिव आफ एवेंटस अटैन्डिंग द आउट ब्रेक आफ डिस्टरबेंसेस एंड द रैस्टोरेशन आफ अथोरिटी इन द डिस्ट्रिक्ट आफ बांदा इन 1857 -58 I एण्ड II बाई - एफ. ओ० मैने,

3. नैरेटिव आफ एवेंटस अटैन्डिंग द आउट ब्रेक आफ डिस्टरबेंसेस एंड द रैस्टोरेशन आफ अथोरिटी इन द डिस्ट्रिक्ट जालौन इन 1857 -58 बाई - ए. एच. टरनैन.

3. नैरेटिव आफ इवेंटस अटैन्डिंग द आउट ब्रेक आफ डिस्टरबेंसेस एंड द रैस्टोरेशन आफ अथोरिटी इन द डिवीजन आफ झाँसी इन 1857 -58 बाई - कैप्टेन पिंके.

5. ए कलेक्शन आफ ट्रीटीस, ऐंगेजमेंटस एंड सनद्स विस रिलेटिंग टू इंडिया एंड निगेब्वर कंट्री,
भाग II कलकत्ता 1876, भाग III कलकत्ता 1863-76 लेखक - सी० यू० एचीसन.
फारेन डिपार्टमेंट प्रेस कलकत्ता से 1881 में प्रकाशित

6. फ्रीडम स्ट्रगल इन उत्तर प्रदेश — सम्पादक : एस. ए. ए. रिजवी तथा एम. एल. भार्गवी.
भाग I (1957) भाग III (1959) भाग IV
पब्लिकेशन्स ब्यूरो, इन्फार्मेशन डिपार्टमेंट, उत्तर प्रदेश लखनऊ द्वारा प्रकाशित.

7. प्राचीन हिन्दी पत्र संग्रह: डा. धीरेन्द्र वर्मा एवं डा. एल. एस. वार्ष्णेय द्वारा सम्पादित तथा इलाहाबाद युनिवर्सिटी द्वारा 1959 में प्रकाशित.

8. "ए ग्लिम्पस इन टु द ओल्ड पेपर्स-- इन द सागर रिसीट्स ऐंड इश्यूज आफ मिसलेनियस सेक्शन आफ द फारेन डिपार्टमेंट" डा० एच० एल० गुप्ता, इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस प्रोसीडिंग्स, दिल्ली सेशन 1948.

9. रेगुलेशन आफ द बंगाल कोड — सम्पादक डी० सूथर लैंड

<u>सैटलमेंट रिपोर्ट</u> :

10. रिपोर्ट आन द सैटलमेंट आफ झांसी (नार्थ वेस्ट प्रोविंस) प्रिंटेड इन 1871.

11. फाइनल रिपोर्ट आफ द सेटलमेंट आफ परगना कालपी विद विच इज इनकोरपोरेटिड आफ द जालौन डिस्ट्रिक्ट — फिलिप्स० से० व्हाइट डेटिड 30 अप्रैल 1874.

12. रिपोर्ट आफ द सेटलमेंट आफ द हमीरपुर डिस्ट्रिक्ट प्रिंटेड इन 1881 इलाहाबाद प्रेस, इलाहाबाद.

13. सैटलमेंट रिपोर्ट आफ बांदा डिस्ट्रिक्ट — ए० कैडिल, नार्थ-वेस्ट प्रोविंस अवध गवर्नमेंट प्रेस इलाहाबाद से 1881 ई० से प्रकाशित.

गजेटियरस :

1. बुन्देलखंड गजेटियर : स्टेटिस्टिकल, डिसक्रिप्टिव एंड हिस्टोरिकल एकाउंट आफ द नार्थ वेस्टर्न प्रोविंसेस आफ इंडिया, भाग 1 बुंदेलखंड इलाहाबाद 1874, कम्पलीटेड एंड एडिट — ई0 टी0 एटकिंसन।

2. झाँसी गजेटियर कम्पलीटेड एंड एडीटेड डी0 एल0 ड्रेक ब्रोकमैन 1909 ई0 में प्रकाशित.

3. झाँसी गजेटियर: एडिट — ई0 बी0 जोशी, गजेटियर विभाग लखनऊ से 1965 ई0 प्रकाशित.

4. बाँदा गजेटियर: कम्पलीटेड एंड एडिट डी0 एल0 ड्रेक ब्रोकमैन 1909 में इलाहाबाद से प्रकाशित.

5. हमीरपुर गजेटियर: कम्पलीटेड एंड एडिट डी0 एल0 ड्रेक ब्रोकमैन 1909 में इलाहाबाद से प्रकाशित.

6. जालौन गजेटियर: कम्पलीटेड एंड एडिट डी0 एल0 ड्रेक ब्रोकमैन 1909 में इलाहाबाद से प्रकाशित.

7. पन्ना गजेटियर: 1907 ई0 में लखनऊ से प्रकाशित।

पब्लिश्ड वर्क : अंग्रेजी

1. कलेंडर आफ पर्शियन कारेसपोंडेंस — भाग 7, गवर्नमेंट प्रेस कलकत्ता से 1940 ई0 प्रकाशित भाग 8 राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली से 1953 ई0 में प्रकाशित।

2. ए हिस्ट्री आफ दी बुन्देलाज — डब्लू0 आर0 पागसन, बैप्टिस्ट मिशन प्रेस, सरकुलर रोड कलकत्ता से 1828 ई0 में प्रकाशित।

3. ए हैन्ड बुक टु द इंगलिश प्री-म्युटिनी रिकार्डस इन द गवर्नमेंट रिकार्ड रूमस आफ द युनाइटेड प्रोविंसेस आफ आगरा एंड अवध इलाहाबाद -- डिवार डगलस 1859.

4. द हिस्ट्री आफ इंडियन म्युटिनी - चार्ल्स बाल, भाग I मास्टर पब्लिशर्स नई दिल्ली से 1981 ई० में प्रकाशित (रिप्रिंटेड)

5. द सिपाय म्युटिनी एंड रिवोल्ट आफ 1857 ई० - आर० सी० मजूमदार फर्मा के० एल० मुखोपाध्याय - कलकत्ता से 1957 ई० में प्रकाशित.

6. ए हिस्ट्री आफ द सिपाय वार इन इंडिया, 1857-1858 - जान विलियम के, भाग III एलन एंड कम्पनी लंदन से 1876 ई० में प्रकाशित.

7. द इकनामिक हिस्ट्री आफ इंडिया - आर० सी० दत्ता भाग I पब्लिकेशन डिवीजन नई दिल्ली, 1976 ई० में प्रकाशित.

8. एन इंडियन कामेंट्री - गैरट जी० टी०, जुटलैन एण्ड टेलेल लिमिटेड लंदन से 1918 ई० प्रकाशित.

9. नाना साहब एंड फाईट फार फ्रीडम - मिश्रा, ए० एस० सूचना विभाग लखनऊ से 1962 ई० प्रकाशित.

10. दि हिस्ट्री आफ इंडियन नेशनल कांग्रेस - पट्टाभिसीता रमैया सस्ता साहित्य मंडल दिल्ली से 1948 ई० प्रकाशित.

11. इंडिया विंस फ्रीडम - मौलाना अबुल कलाम आजाद विकास पब्लिकेशन नई दिल्ली से 1990 ई० प्रकाशित.

12. झाँसी डयूरिंग द ब्रिटिश रूल - एस० पी० पाठक, रामानन्द विद्या भवन कालका जी नई दिल्ली से 1987 ई० में प्रकाशित.

13. एटीन सिक्स्टी सेवन – सेन, एस० एन०, पब्लिकेशन डिवीजन दिल्ली से 1957 ई० में प्रकाशित।

14. हिस्ट्री आफ चंदेलाज आफ जैजाकभुक्ति – बोस. एन. एस कलकत्ता से 1956 ई० में प्रकाशित.

15. दि रिवोल्ट आफ 1857 ई० इन बुन्देलखंड – एस० एस० नारायण सिन्हा अतुल पब्लिकेशन लखनऊ उ० प्र० से 1982 ई० प्रकाशित

16. दि रानी आफ झाँसी – डी० वी० तहमान्कर, जैको पब्लिशिंग हाउस लंडन से 1958 ई० प्रकाशित.

17. हिस्ट्री आफ ब्रिटिश इंडिया, अंडर द कम्पनी एंड द क्राउन आक्सफोर्ड प्रेस लंडन से 1938 ई० में प्रकाशित

18. द लाईफ आफ द मारक्स डलहौजी भाग II लंडन से 1904 ई० से प्रकाशित.

19. शुजाउद्दौला – डा० आशीर्वादी लाल श्रीवास्तवा, भाग I (1961) भाग II (1974) शिवलाल एंड क० आगरा से प्रकाशित.

20. न्यू हिस्ट्री आफ दि मराठाज – जी० एस० सरदेसाई भाग-II (1948) भाग-III (1948) फोनेक्स पब्लिकेशन बम्बई 1948 ई० में प्रकाशित।

<u>हिन्दी</u>

20. हिम्मत बहादुर बिरदावली – भगवानदी (सम्पादक) मूल लेखक कवि पद्माकर – नागरी प्रचारिणी सभा काशी से सन 1988 ई० में प्रकाशित.

21. बुंदेलखंड का संक्षेप इतिहास :- गोरे लाल तिवारी, काशी नागरी प्रचारिणी सभा काशी से संवत 1990 (1933 ई०) में प्रकाशित।

22. विद्रोही बानपुर — वासुदेव गोस्वामी, सहयोगी प्रकाशन दतिया म०प्र० से 1954 ई० में प्रकाशित।

23. महाराजा छत्रसाल बुन्देला — डा० भगवान दास गुप्ता शिवलाल एंड कम्पनी आगरा से 1958 ई० प्रकाशित।

24. आँखों देखा गदर— नागर अमृतलाल (अनुवादक) मूल पुस्तक "माझा प्रवास" (मराठी) लेखक विष्णु गोडसे, लखनऊ से 1957 ई० में प्रकाशित।

25. बुंदेला का इतिहास — भगवानदास खरे, भगवान दास श्रीवास्तव विचार प्रकाशन दिल्ली से 1982 ई० प्रकाशित।

26. चंदेल और उनका राजत्व काल — केशव चन्द्र मिश्र, नागरी प्रचारिणी सभा काशी से संवत 2011 (सन् 1954 ई०) में प्रकाशित।

27. चंदेल कालीन भारत का इतिहास — डा० अयोध्या प्रसाद पाण्डेय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग इलाहाबाद शक संवत 1890 ई० (सन् 1968 ई०) में प्रकाशित।

28. झाँसी — डा० रुद्र पाण्डेय साहित्य रत्न प्रकाशन ग्वालियर म० प्र० से 1998 ई० प्रकाशित।

29. स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास — खान, मसूद अहमद, किताब घर नई दिल्ली से सन् 1988 ई० प्रकाशित।

30. भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास — मन्मथ नाथ गुप्त 1986 में आत्मा राम एंड संस दिल्ली से प्रकाशित।

31. भूले बिसरे क्रांतिकारी — राम शरण विद्यार्थी, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय पटियाला हाउस नई दिल्ली से प्रकाशित ।

32. भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास — इन्द्र विद्या वाचस्पति, सस्ता साहित्य मंडल नई दिल्ली से सन् 1960 ई० प्रकाशित ।

33. स्वाधीनता संघर्ष और संवैधानिक विकास — सुभाष कश्यप किताब घर नई दिल्ली से प्रकाशित ।

34. क्रांतिकारी चंद्रशेखर "आजाद" — शंकर सुल्तानपुरी हिन्द पॉकेट बुक्स दिल्ली से सन् 1969 ई० से प्रकाशित (पाकेट बुक) ।

35. नाना साहेब पेशवा — केशव कुमार ठाकुर, आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, अहियापुर इलाहाबाद से सन् 1956 ई० में प्रकाशित ।

36. सन् सत्तावन की राज्य क्रांति — डा० रामविलास शर्मा विनोद पुस्तक भंडार आगरा— सन् 1957 ई० में प्रकाशित ।

37. बाजीराव मस्तानी और उनके वंशज बांदा के नवाब — गुप्ता बी० डी०, विद्या मन्दिर प्रकाशन ग्वालियर से सन् 1983 ई० में प्रकाशित ।

38. भारतीय इतिहास कोश — सच्चिदानंद भट्टाचार्य हिन्दी समिति लखनऊ उ०प्र० से सन् 1967 ई० में प्रकाशित ।

39. उत्तर प्रदेश में गांधी जी — रामनाथ सुमन सूचना विभाग लखनऊ से सन् 1969 ई० में प्रकाशित ।

40. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष — विपिन चंद्र आदि हिन्दी माध्यम कार्य निदेशालय, दिल्ली से सन् 1990 ई० में प्रकाशित ।

## समाचार पत्र पत्रिकायें

1. द इंगलिश मैन :- अक्टूबर 1859 ई० का अंक

2. द बाम्बे स्टैन्डर्ड :- म्युटिनी नवम्बर, सितंबर 1858 ई० अंक

3. दैनिक जागरण :- झाँसी, 26 जनवरी 1978 ई० का अंक

4. कंचन प्रभा मासिक कानपुर :- अप्रैल 1975 ई० का अंक

5. "उत्तर प्रदेश" मासिक पत्रिका :- उ० प्र० सरकार द्वारा प्रकाशित 15 अगस्त 1975 ई० का अंक।

6. "रानी लक्ष्मी बाई समारोह 1982" स्मारिका पत्रिका।